अनुसंधान में अरबों डॉलर का निवेश कर रहा है भारत : प्रधानमंत्री मोदी - 12

ब्रिटेन समझौता भारतीय निर्यातकों के लिए बड़ा अवसर- 12

अमेरिका-चीन ने आयात शुल्क पर लगी रोक को 90 दिन के लिए बढ़ाया - 13

आईसीसी ने शुभमन गिल को इंग्लैंड में शानदार प्रदर्शन का दिया इनाम- 14

आज का मौसम
34.0° अधिकतम तापमान
27.0° न्यूनतम तापमान
सूर्योदय 05.40 | सूर्यास्त 06.47

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

| कानपुर नगर |

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण
लखनऊ ■ बरेली ■ कानपुर ■ मुरादाबाद ■ अयोध्या ■ हल्द्वानी

भाद्रपद कृष्ण पक्ष चतुर्थी 06:36 उपरांत पंचमी विक्रम संवत 2082

बुधवार, 13 अगस्त 2025, वर्ष 3, अंक 354, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 5 रुपये

यूपी पुलिस में होगी 4,543 दरोगा की भर्ती, प्रक्रिया शुरू

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती बोर्ड ने दरोगा के 4,543 पदों पर भर्ती का विज्ञापन जारी कर दिया है। विज्ञापन जारी होने के साथ मंगलवार से प्रक्रिया शुरू हो गई है। इसके लिए यूपी पुलिस भर्ती बोर्ड की आधिकारिक वेबसाइट uppbpb.gov.in पर जाकर आवेदन कर सकते हैं। अभ्यर्थी 11 सितंबर तक आवेदन कर सकते हैं। इसके बाद 13 सितंबर तक शुल्क जमा करने का मौका दिया जाएगा। परीक्षा की तारीख अभी घोषित नहीं की गई है।

4,543 दरोगा पदों की भर्ती में 4,242 पद उपनिरीक्षक नागरिक पुलिस के लिए आरक्षित हैं। जबकि 135 पद प्लाटून कमांडर पीएसी/उपनिरीक्षक सशस्त्र पुलिस, 60 पद प्लाटून कमांडर/उपनिरीक्षक विशेष सुरक्षा बल (पुरूष) और 106 पद महिला बटालियन के लिए आरक्षित है। साथ ही खाली पदों में 1705 पद अनारक्षित, 442 पद ईडब्ल्यूएस, 1143 पिछड़ा, 890 अनुसूचित और 82 पद अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित है। प्लाटून कमांडर पीएसी/उपनिरीक्षक सशस्त्र पुलिस के 56 पद अनारक्षित, 13 पद ईडब्ल्यूएस, 36 पद पिछड़ा, 28 पद अनुसूचित और दो अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित है।

चार नए सेमीकंडक्टर प्रोजेक्ट को केंद्र की मंजूरी

- ओडिशा, पंजाब, आंध्र में लगने वाले इन संयंत्रों पर खर्च होंगे 4,594 करोड़ रुपये

नई दिल्ली, एजेंसी

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने मंगलवार को ओडिशा, पंजाब और आंध्र प्रदेश में कुल 4,594 करोड़ रुपये के निवेश से चार सेमीकंडक्टर परियोजनाओं की स्थापना को मंजूरी दी। सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक के फैसले की जानकारी देते कहा कि इस मिशन के तहत सेमीकंडक्टर विनिर्माण इकाइयों की स्थापना में 76,000 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

वैष्णव ने कहा कि इन चार सेमीकंडक्टर संयंत्रों की स्थापना ओडिशा, पंजाब एवं आंध्र प्रदेश में की जाएगी। ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर में सिलिकॉन कार्बाइड सेमीकंडक्टर संयंत्र स्थापित किया जाएगा। इस पर सिकसेम प्राइवेट लिमिटेड 2,066 करोड़ रुपये का निवेश करेगी। उन्होंने कहा कि सिलिकॉन कार्बाइड बेहद मजबूत सामग्री है और यह उच्च तापमान पर भी काम कर सकती है। इसका इस्तेमाल मिसाइल, उपग्रह, दूरसंचार टावर, रॉकेट और रेल इंजन में किया जाता है। ओडिशा में ही एक 3डी ग्लास निर्माण संयंत्र भी स्थापित होगा। मंत्रिमंडल ने आंध्र प्रदेश में चिप पैकेजिंग संयंत्र को मंजूरी दी है, जिस पर 468 करोड़ रुपये का निवेश होगा। पंजाब में 117 करोड़ रुपये के निवेश वाली सेमीकंडक्टर परियोजना को भी मंजूरी दी गई है।

तातो-2 जलविद्युत परियोजना को 8,146 करोड़

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने मंगलवार को 700 मेगावाट क्षमता वाली तातो-दो जलविद्युत परियोजना के निर्माण के लिए 8146.21 करोड़ रुपये के निवेश को मंजूरी दी। अरुणाचल प्रदेश के शियोमी जिले में स्थित इस परियोजना के पूरा होने की अनुमानित अवधि 72 महीने है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल की आर्थिक मामलों की समिति ने मंगलवार को तातो-दो जलविद्युत परियोजना (एचईपी) के निर्माण के लिए 8,146.21 करोड़ रुपये के निवेश को मंजूरी दी। कुल 700 मेगावाट (175-175 मेगावाट की चार इकाइयां) स्थापित क्षमता वाली इस परियोजना से 273.80 करोड़ यूनिट बिजली का उत्पादन होगा।

लखनऊ मेट्रो के लिए 5801 करोड़ स्वीकृत

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने उत्तर प्रदेश में लखनऊ मेट्रो रेल परियोजना के चरण-1बी को मगंलवार को मंजूरी दे दी। इस परियोजना का कॉरिडोर 11.165 किलोमीटर लंबा होगा और इस पर 5801 करोड़ रुपये की लागत आएगी। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के मुताबिक, चरण-1बी के चालू होने पर लखनऊ शहर में कुल 34 किलोमीटर का मेट्रो रेल नेटवर्क संचालित होगा।

नया कॉरिडोर में कुल 12 स्टेशन होंगे, जिनमें सात भूमिगत और पांच एलिवेटेड स्टेशन शामिल हैं। इस चरण का उद्देश्य पुराने लखनऊ के प्रमुख क्षेत्रों को निर्बाध रूप से जोड़ना है, जिनमें अमीनाबाद, यहियागंज, पांडेयगंज और चौक जैसे व्यावसायिक केंद्र शामिल हैं। यह कॉरिडोर किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी (केजीएमयू), बड़ा इमामबाड़ा, छोटा इमामबाड़ा, भूल-भुलैया, घंटाघर और रूमी दरवाज़ा जैसे अहम पर्यटक केंद्रों को भी जोड़ेगा। चरण-1बी न केवल यातायात सुविधा बढ़ाएगा, बल्कि आर्थिक गतिविधियों एवं पर्यटन को भी बढ़ावा देगा।

ब्रीफ न्यूज

मलिक समेत कई के ठिकानों पर छापे

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर पुलिस की राज्य जांच एजेंसी (एसआईए) ने 1990 में कश्मीरी पंडित नर्स सरला भट की हत्या के मामले में मंगलवार को श्रीनगर में कई जगहों पर छापेमारी की जिनमें प्रतिबंधित जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जेकेएलएफ) प्रमुख यासीन मलिक का घर भी शामिल है। मलिक दिल्ली की तिहाड़ जेल में बंद हैं।

पहला ईओ स्थापित करेगा पिक्सल स्पेस

नई दिल्ली। बेंगलुरु स्थित पिक्सल स्पेस नीत कंपनियों के एक समूह ने भारत के पहले पूर्णतः स्वदेशी वाणिज्यिक पृथ्वी अवलोकन (ईओ) उपग्रह तंत्र का निर्माण और संचालन के लिए बोली जीत ली है। भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन एवं प्राधिकरण केंद्र ने मंगलवार को यह जानकारी दी। पिक्सलस्पेस नीत समूह में पियरसाइट स्पेस, सैटस्योर एनालिटिक्स इंडिया और ध्रुव स्पेस शामिल हैं।

अवैध सट्टेबाजी एप के खिलाफ ईडी का छापा

मुंबई। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने 'अवैध' सट्टेबाजी एप के संचालन से संबंधित धन शोधन मामले की जांच के तहत मंगलवार को कई राज्यों में छापेमारी की। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि इस एप के जरिए लोगों से 2,000 करोड़ रुपये की ठगी की गई है।

अंदर देखें ... रंगोली

सुप्रीम कोर्ट ने कहा- एसआईआर का विवाद विश्वास की कमी का

बिहार में मतदाता सूची पुनरीक्षण मामले की शीर्ष अदालत कर रही सुनवाई

- योगेंद्र यादव ने निर्वाचन आयोग के आंकड़ों पर उठाए सवाल

नई दिल्ली, एजेंसी

उच्चतम न्यायालय ने बिहार में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) से जुड़े विवाद को मोटे तौर पर विश्वास की कमी का मुद्दा बताया, क्योंकि निर्वाचन आयोग ने दावा किया कि कुल 7.9 करोड़ मतदाताओं में से करीब 6.5 करोड़ लोगों को कोई दस्तावेज दाखिल करने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वे या उनके माता-पिता 2003 की मतदाता सूची में शामिल थे। शीर्ष अदालत बिहार में निर्वाचन आयोग की मतदाता सूची पुनरीक्षण प्रक्रिया के खिलाफ दायर याचिकाओं पर सुनवाई कर रही है।

न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ताओं से सवाल करते हुए टिप्पणी की कि यह काफी हद तक विश्वास की कमी का मामला प्रतीत होता है, कुछ और नहीं। याचिकाकर्ताओं ने निर्वाचन आयोग के 24 जून के एसआईआर के फैसले को इस आधार पर चुनौती दी है कि इससे एक करोड़ मतदाता अपने मताधिकार से वंचित हो जाएंगे।

पीठ ने याचिकाकर्ता और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता मनोज झा की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल से कहा कि यदि 7.9 करोड़ मतदाताओं में से 7.24 करोड़ मतदाताओं ने एसआईआर पर जवाब दिए हैं, तो इससे एक करोड़ मतदाताओं के लापता होने या मताधिकार से वंचित होने का सिद्धांत ध्वस्त हो जाता है।

विभिन्न राजनीतिक दलों का प्रतिनिधित्व कर रहे वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक सिंघवी और अधिवक्ता प्रशांत भूषण ने भी इस प्रक्रिया के पूरा होने की समयसीमा और उन 65 लाख मतदाताओं के आंकड़ों पर सवाल उठाया, जिन्हें मृत या विस्थापित या अन्य निर्वाचन क्षेत्रों में पंजीकृत घोषित किया गया था। राजनीतिक कार्यकर्ता योगेन्द्र यादव ने निर्वाचन आयोग द्वारा दिए गए आंकड़ों पर सवाल उठाया और कहा कि 7.9 करोड़ मतदाताओं के बजाय कुल वयस्क जनसंख्या 8.18 करोड़ है और एसआईआर प्रक्रिया का उद्देश्य मतदाताओं को हटाना है। यादव ने निजी रूप से अदालत को संबोधित किया। यादव ने कहा, ''वे (निर्वाचन आयोग) किसी भी ऐसे व्यक्ति को नहीं ढूंढ़ पाए जिसका नाम जोड़ा गया हो और बूथ स्तर के अधिकारी नाम हटाने के लिए घर-घर गए। उन्होंने इसे पूरी तरह से मताधिकार से वंचित करने का मामला बताया। सुनवाई के दौरान सिब्बल ने कहा कि एक निर्वाचन क्षेत्र में, निर्वाचन आयोग के दावे के विपरीत, मृत घोषित किए गए 12 लोग जीवित पाए गए, जबकि एक अन्य मामले में जीवित व्यक्तियों को मृत घोषित कर दिया गया।

निर्वाचन आयोग की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता राकेश द्विवेदी ने कहा कि इस तरह की प्रक्रिया में कहीं कहीं कुछ त्रुटियां होना स्वाभाविक है और यह दावा कि मृत व्यक्तियों को जीवित और जीवित को मृत घोषित कर दिया गया, हमेशा सही किया जा सकता है क्योंकि यह केवल एक मसौदा सूची है। अब सुनवाई बुधवार को होगी।

आधार और वोटर आईडी नागरिकता का निर्णायक प्रमाण नहीं

शीर्ष अदालत ने निर्वाचन आयोग के इस निर्णय से सहमति जताई कि आधार और मतदाता पहचान पत्र को नागरिकता के निर्णायक प्रमाण के रूप में स्वीकार नहीं किया जाएगा और कहा कि इसके समर्थन में अन्य दस्तावेज भी होने चाहिए। सिब्बल ने दलील दी कि निवासियों के पास आधार, राशन और मतदाता पहचान पत्र होने के बावजूद, अधिकारियों ने दस्तावेज़ स्वीकार करने से इनकार कर दिया। पीठ ने कहा कि क्या आपकी दलील यह है कि जिन लोगों के पास कोई दस्तावेज़ नहीं है, लेकिन वे बिहार में हैं, इसलिए उन्हें राज्य का मतदाता माना जाना चाहिए? इसकी अनुमति दी जा सकती है। उन्हें कुछ दस्तावेज़ दिखाने या जमा करने होंगे। सिब्बल ने कहा कि लोगों को अपने माता-पिता के जन्म प्रमाणपत्र और अन्य दस्तावेज खोजने में कठिनाई हो रही है, तो न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने कहा कि यह बहुत ही चलताऊ बयान है कि बिहार में किसी के पास दस्तावेज नहीं हैं।

लोस में जस्टिस वर्मा को हटाने का प्रस्ताव मंजूर

नई दिल्ली, एजेंसी

महाभियोग की प्रक्रिया शुरू

- आरोपों की जांच के लिए स्पीकर ने गठित की तीन सदस्यीय समिति

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा को पद से हटाने के कई सांसदों के एक प्रस्ताव को मंगलवार को विचारार्थ स्वीकार कर लिया और उनके खिलाफ आरोपों की जांच के लिए तीन सदस्यीय समिति के गठन की घोषणा की और इसके साथ ही न्यायमूर्ति वर्मा पर महाभियोग की प्रक्रिया शुरू हो गई।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने समिति के गठन की घोषणा करते हुए कहा कि न्यायमूर्ति वर्मा के खिलाफ आरोप गंभीर प्रकृति के हैं, इसलिए उन्हें न्यायाधीश के पद से हटाने की प्रक्रिया शुरू होनी चाहिए। बिरला ने कहा कि तीन सदस्यीय समिति में उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश अरविंद कुमार, मद्रास उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश मनींद्र मोहन श्रीवास्तव और कर्नाटक उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता बी वी आचार्य शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि समिति यथाशीघ्र अपनी रिपोर्ट सौंपेगी। जांच समिति की रिपोर्ट प्राप्त होने तक प्रस्ताव (न्यायमूर्ति वर्मा को हटाने का) लंबित रहेगा। इससे पहले लोकसभा अध्यक्ष ने सदन को

सूचित किया कि उन्हें गत 31 जुलाई को भाजपा सांसद रविशंकर प्रसाद और सदन में प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी सहित सत्ता पक्ष और विपक्ष के कुल 146 सदस्यों द्वारा हस्ताक्षरित प्रस्ताव की सूचना प्राप्त हुई है, जिसमें न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा को न्यायाधीश जांच अधिनियम 1968 की धारा 3 के साथ संविधान के अनुच्छेद 124 (4) के साथ पठित अनुच्छेदों 217 और 218 के अंतर्गत उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के पद से हटाने के लिए राष्ट्रपति को एक समावेदन प्रस्तुत करने का प्रस्ताव है।

बिरला ने कहा कि बेदाग चरित्र और वित्तीय एवं बौद्धिक ईमानदारी न्यायपालिका में आम आदमी के विश्वास की नींव है। लोकसभा अध्यक्ष ने कहा कि उन्होंने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है।

खुदरा महंगाई 8 साल के निचले स्तर पर

नई दिल्ली, एजेंसी

- जुलाई में सीपीआई मुद्रास्फीति दर 1.55 प्रतिशत पर पहुंची
- गिरावट की मुख्य वजह अनाज सब्जियों व अन्य उत्पादों में नरमी

खाद्य वस्तुओं की कीमतों में नरमी से खुदरा मुद्रास्फीति जुलाई में घटकर आठ साल के निचले स्तर 1.55 प्रतिशत पर आ गई। मंगलवार को जारी सरकारी आंकड़ों में यह जानकारी मिली।

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) आधारित मुद्रास्फीति जून में 2.1 प्रतिशत और जुलाई 2024 में 3.6 प्रतिशत थी। जुलाई

2025 की मुद्रास्फीति जून 2017 के बाद सबसे कम है। उस समय यह 1.46 प्रतिशत दर्ज की गई थी। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) ने कहा कि जुलाई 2025 के महीने के दौरान कुल (हेडलाइन) मुद्रास्फीति और खाद्य मुद्रास्फीति में उल्लेखनीय गिरावट की मुख्य वजह अनुकूल तुलनात्मक आधार प्रभाव और दालों व उत्पादों, परिवहन व संचार, सब्जियों, अनाज व उत्पादों, शिक्षा, अंडे तथा चीनी और कन्फेक्शनरी के सामान की कीमतों में नरमी रही।

दिल्ली-एनसीआर में पुराने वाहनों पर रोक नहीं

नई दिल्ली, एजेंसी

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा-वाहन मालिकों पर न की जाए दंडात्मक कार्रवाई

दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में 10 वर्ष से अधिक पुराने डीजल वाहनों और 15 वर्ष से अधिक पुराने पेट्रोल वाहनों के मालिकों को राहत देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को अधिकारियों को आदेश दिया कि वे उनके खिलाफ कोई दंडात्मक कार्रवाई न करें।

शीर्ष अदालत राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) के निर्देश को

बरकरार रखने वाले 29 अक्टूबर, 2018 के अपने फैसले को वापस लेने की मांग वाली याचिका पर विचार कर रही थी। सुप्रीम कोर्ट ने एनजीटी के आदेश के अनुसार एनसीआर में राज्यों के परिवहन विभागों को 10 वर्ष से अधिक पुराने डीजल वाहनों और 15 साल से ज्यादा पुराने पेट्रोल वाहनों को सड़कों पर चलने से प्रतिबंधित करने का निर्देश दिया था। एनजीटी ने 10 वर्ष पुराने डीजल वाहन और 15 साल पुराने पेट्रोल वाहनों पर रोक लगा दी थी। प्रधान न्यायाधीश बीआर गवई, न्यायमूर्ति के. विनोद चंद्रन और न्यायमूर्ति एन वी अंजारिया की पीठ ने मंगलवार को यह आदेश तब पारित किया जब दिल्ली सरकार की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने आग्रह किया कि वह कोई दंडात्मक कदम न उठाने का आदेश देने पर विचार करे। पीठ ने कहा कि नोटिस जारी करें, जिसका चार सप्ताह में जवाब दिया जाए। इस बीच, हम निर्देश देते हैं कि वाहन मालिकों के खिलाफ इस आधार पर कोई दंडात्मक कदम नहीं उठाया जाए कि उनके डीजल वाहन 10 साल और पेट्रोल वाहन 15 साल पुराने हैं।

सीबीएसई पाठ्यक्रम का हिस्सा होंगे नए कानून

नई दिल्ली, एजेंसी

- धारा 377 व तीन तलाक के निरस्तीकरण के बारे में पढ़ेंगे छात्र

बीएनएस को लागू करना, तीन तलाक एवं राजद्रोह जैसे पुराने कानूनों का निरस्तीकरण तथा धारा 377 को खत्म करना सीबीएसई के 2026-27 शैक्षणिक सत्र से विधि अध्ययन पाठ्यक्रम का हिस्सा होंगे।

सीबीएसई की पाठ्यक्रम समिति ने इस प्रस्ताव को मंजूरी दी थी और जून में शासी निकाय ने इसे अंगीकार करने का फैसला किया था। इस निर्णय के तहत उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र औपनिवेशिक काल के कानूनों की जगह लेने वाले नए कानूनों के साथ-साथ भारत के कानूनी ढांचे को नया रूप देने वाले ऐतिहासिक निर्णयों एवं सिद्धांतों का अध्ययन करेंगे। प्रस्ताव के विवरण में बताया गया कि भारत के कानूनी ढांचे में बड़े सुधार हुए हैं, जिनमें औपनिवेशिक काल के प्रमुख प्रावधानों को निरस्त करना और 2023-24 में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस), भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) और भारतीय साक्ष्य अधिनियम (बीएसए) को लागू करना शामिल है। सीबीएसई अधिकारियों के अनुसार, अगले शैक्षणिक सत्र के लिए अद्यतन पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के लिए एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया जाएगा और इसमें विषय-वस्तु विकास एजेंसी को भी शामिल किया जा सकता है।

मानसून सत्र का दूसरा दिन

नेता प्रतिपक्ष के आरोपों पर संसदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना ने किया पलटवार, कहा- प्रदेश नें कानून का ही रहेगा राज

फतेहपुर घटना पर सरकार सख्त, दोषियों को मिलेगी कड़ी सजा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: उप्र. विधानसभा सत्र के दूसरे दिन मंगलवार को भी विपक्ष फतेहपुर घटना समेत अन्य मामलों पर हंगामा काटता नजर आया। फतेहपुर मामले में विपक्ष के आरोपों पर वित्त एवं संसदीय कार्यमंत्री सुरेश खन्ना ने स्पष्ट किया कि राज्य सरकार और उसका कोई भी तंत्र इस घटना में किसी भी प्रकार से शामिल नहीं है।

आरोप पूरी तरह से बेबुनियाद हैं और सरकार कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। जो भी कानून अपने हाथ में लेगा उसको सख्त सजा देने का काम हमारी सरकार करेगी। नेता प्रतिपक्ष माता

विधानसभा में विपक्ष के प्रश्नों का जवाब देते संसदीय कार्यमंत्री सुरेश खन्ना, साथ में नेता सदन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

प्रसाद पांडे के सवाल का जवाब देते हुए सुरेश खन्ना ने कहा कि इस घटना में सरकार का और सरकारी तंत्र का कोई शामिल नहीं है, इसका हम पूरी तरह से खंडन करते हैं। उन्होंने कहा कि घटना के तुरंत बाद 11 अगस्त को थाना कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज कर ली गई। इस एफआईआर में 10 नामजद आरोपियों के अलावा 150 अज्ञात लोगों को भी शामिल किया गया है। इन सभी के खिलाफ गंभीर धाराओं- धारा 190, 191(2), 191(3), 301, 196 के साथ ही आपराधिक कानून संशोधन अधिनियम-7 और सार्वजनिक संपत्ति नुकसान निवारण अधिनियम की धारा-2,3 के तहत कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने कहा कि ये धाराएं इस बात का संकेत हैं कि सरकार इस घटना को बेहद गंभीरता से ले रही है और किसी भी आरोपी को बख्शा नहीं जाएगा।

फतेहपुर सांसद ने लिखा अमित शाह को पत्र : फतेहपुर से सपा के सांसद नरेश चंद्र उत्तम पटेल ने फतेहपुर मामले को लेकर गृह मंत्री अमित शाह को एक पत्र लिखा है। उन्होंने लिखा कि यह मकबरा एक राष्ट्रीय धरोहर है, जिसे अनावश्यक रूप से 'श्री ठाकुर जी बिराज मान मंदिर' बताया जा रहा है।

कानून अपना काम करेगा

सुरेश खन्ना ने कहा कि जो भी व्यक्ति कानून अपने हाथ में लेने की कोशिश करेगा, उसे न्यायिक प्रक्रिया के तहत दंड जरूर मिलेगा। उन्होंने कहा, सरकार की प्राथमिकता हर हाल में लॉ एंड ऑर्डर को मेंटेन रखना है और किसी भी तरह की अराजकता को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। यह भी संकेत दिया कि विपक्ष इस तरह की घटनाओं को राजनीतिक रंग देने की कोशिश कर रहा है, जबकि हकीकत यह है कि पुलिस ने तुरंत एक्शन लिया और बिना देरी किए कानूनी प्रक्रिया शुरू कर दी।

सरकार पर कोई दबाव नहीं

सदन में सरकार की ओर से स्पष्ट किया गया कि, जो हिंदूवादी नेता मामले में पुलिस पर दबाव बना रहे हैं, उनका सरकार पर कोई दबाव नहीं है। इसके उलट, सरकार हर कीमत पर कानून व्यवस्था और शांति बनाए रखने के लिए प्रयासरत है। इसके तहत, प्रदेश सरकार ने क्षेत्र में 10 थानों की पुलिस फोर्स, दो कंपनी पीएसी और प्रशासन की पूरी टीम तैनात कर दी है। 10 नामजद समेत 160 लोगों पर मुकदमा दर्ज किया गया है। दोनों पक्षों से बातचीत कर माहौल सामान्य किया जा रहा है।

अमृत विचार
कानपुर, बुधवार, 13 अगस्त 2025

न्यूज ब्रीफ

शिबू सोरेन को अखिलेश ने दी श्रद्धांजलि

अमृत विचार, लखनऊ: सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने मंगलवार को रामगढ़ के निमरा पहुंचकर झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री स्व .शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि अर्पित की । उनके पुत्र व झारखंड मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और परिवार से मुलाकात कर शोक संवेदना प्रकट की। इस मौके पर उन्होंने हेमंत सोरेन की मां रूपी सोरेन और उनकी पत्नी विधायक कल्पना सोरेन और परिवार के अन्य सदस्यों से भी भेंट की।

विदेश भाषा विवि के लखनऊ परिसर को दी जमीन

अमृत विचार, लखनऊ: अंग्रेजी एवं अन्य विदेशी भाषाओं की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राज्य सरकार द्वारा अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) के लखनऊ परिसर की स्थापना के लिए स्थायी परिसर निर्माण के लिए भूमि हस्तांतरित की गई। यह परिसर बी.ए. (ऑनर्स) अंग्रेजी, एम.ए. अंग्रेजी, एम.ए. भाषाविज्ञान, एम.ए. अंग्रेजी साहित्य, पीजीडीटीई और पीएच.डी. जैसे नियमित कार्यक्रमों के साथ-साथ फ्रेंच, जर्मन, रूसी और स्पेनिश भाषाओं के अंशकालिक पाठ्यक्रम भी संचालित करेगा। वर्तमान में विश्वविद्यालय अस्थायी रूप से आरटीटीसी कॉम्प्लेक्स, कानपुर रोड, लखनऊ में संचालित है। भूमि हस्तांतरण समारोह उच्च शिक्षा मंत्री के लखनऊ स्थित आवास पर आयोजित किया गया।

उर्वरकों की उपलब्धता ने बनाया रिकॉर्ड

अमृत विचार, लखनऊ: अन्नदाता किसान डबल इंजन सरकार की प्राथमिकता में है। उर्वरक को लेकर कृषि विभाग ने विपक्षी दलों के आरोपों को झुठला दिया है। खरीफ सत्र-2025 में किसानों ने पिछले साल की तुलना में ज्यादा उर्वरक खरीद का रिकार्ड बनाया है। प्रदेश में 2017 में योगी सरकार बनने के बाद से ही किसानों के उत्थान व समृद्धि के लिए अनेक प्रयास शुरू हुए और उन्हें नित ऊंचाइयों पर भी पहुंचाया गया। इसका लाभ प्रदेश के हर किसानों को मिला।

67.50 लाख बुजुर्गों को मिलेगी वृद्धावस्था पेंशन

अमृत विचार, लखनऊ: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश के 61 लाख गरीब बुजुर्गों को वृद्धा पेंशन देने के अपने वादे को वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही में ही पूरा कर लिया है। अब सरकार चालू वित्तीय वर्ष में 67.50 लाख पात्र बुजुर्गों तक पेंशन की राशि पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इससे पहले बीते वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही में ही योगी सरकार ने अपने लक्ष्य के अनुरूप 56 लाख गरीब बुजुर्गों के खाते में 1000 रुपये प्रतिमाह की दर से पेंशन की राशि देकर उनका आर्थिक सहायता कर चुकी है।

स्टोन क्रशर इकाइयां ने लगाया 61.30 लाख का चूना

613 स्टोन क्रशर इकाइयां बिना लाइसेंस चलाई गईं, लाभ पहुंचाने के लिए जिलाधिकारी और खनन विभाग ने की अनियमितताएं

- विधानमंडल के दोनोंसदनों में रखी गई लेखा महानियंत्रक की रिपोर्ट में हुआ खुलासा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: राज्य में बालू और पत्थर के खनन में पट्टों से लेकर भंडारण, परिवहन और प्रदूषण मानकों में ढेरों अनियमितताएं सामने आई हैं। भंडारण लाइसेंस के बगैर ही 613 स्टोन क्रशर इकाइयां चलती पाई गईं। चार पुलों के पास अवैध बालू खनन खतरनाक पाया गया तो, आबादी के पास ईंट-भट्ठों ने प्रदूषण नियमों की धज्जियां उड़ाई। खनन परमिट में क्षेत्रफल घटाकर कई डीएम व खनन अफसरों ने तमाम सरकार को करोड़ों रुपये का चूना लगाया।

यह तथ्य विधानमंडल के दोनों सदनों में मंगलवार को रखी गई भारत सरकार के लेखा महानियंत्रक की वर्ष 2017-18 से 2021-22 की रिपोर्ट में सामने आया है। राज्य के 18 जिलों में खनन और अवैध खनन की जांच की गई। बांदा, चित्रकूट, हमीरपुर, महोबा, प्रयागराज, सहारनपुर और सोनभद्र में कुल 1035 क्रशर हैं। इनमें यूपीपीसीबी से एनओसी पाने वाले 708 क्रशर में सहारनपुर के 95 को छोड़ बाकी जिलों के 613 क्रशर बिना भंडारण लाइसेंस के चल रहे थे। इससे सरकार को 61.30 लाख रुपये शुल्क की हानि हुई। साथ ही, ऐसा करके अवैध खनन को प्रोत्साहन दिया गया।

हमीरपुर, जेपी नगर में जगह ही बदल गई

- 14 जिलों के 231 खनन परमिटों की जांच की गई तो जेपी नगर में दो बालू परमिट और हमीरपुर में दो खनन परमिट का गलत भू-निर्देशांक पाया गया। इसमें खनन अधिकारी की लापरवाही पाई गई। साथ ही कई जिलों में सीमा स्तंभों का अता-पता नहीं था।

निगरानी की कमी से 408.68 करोड़ फंसा

- कैग की जांच में पाया गया कि जिला खान अधिकारी से उच्चतर अधिकारियों द्वारा खानों के निरीक्षण के मानदंड तय नहीं किए गए। निगरानी की कमी के कारण वसूली प्रमाण पत्रों के माध्यम से 408.68 करोड़ क राजस्व की वसूली लंबित है। वन विभाग द्वारा जारी अनापत्ति प्रमाण पत्रों के अनुसार पट्टेधारकों द्वारा किये जाने वाले आवश्यक पौधरोपण की विभाग ने निगरानी नहीं की थी। सरकार से रिपोर्टिंग एवं निगरानी प्रणाली को सुदृढ़ करने के लिए आंतरिक लेखा परीक्षा शाखा एवं विभाग की अन्य शाखाओं को अपेक्षित मानव शक्ति प्रदान करने पर विचार करने को कहा गया। पर्यावरण और काम करने वाले मजदूरों के लिए भी अहम सिफारिश की गई।

कानपुर देहात के जिलाधिकारी ने घटा दिया अनुमानित बालू खनन क्षेत्र

- कानपुर देहात के बिलासपुर कछार में मार्च 2019 में अनुमानित 333810 घन मीटर बालू खनन क्षेत्र को जिलाधिकारी ने 110057 घन मीटर कर दिया। इससे सरकार को रायल्टी के रूप 5.91 करोड़ प्रति वर्ष के भारी राजस्व का नुकसान हुआ। इसी प्रयागराज में सिलिका सैंड के खनन में गड़बड़ मिली। इसी तरह 217 पट्टों की पत्रावलियों की नमूना जाँच में 173 खनन पट्टा विलेखों में स्टाम्प शुल्क और पंजीकरण शुल्क की कम वसूली से 20.96 करोड़ का सरकार को चूना लगा। इसी तरह 54 पट्टाधारकों से 3.95 करोड़ का वित्तीय आश्वासन जमा नहीं किया। सतत बालू खनन प्रबंधन दिशा निर्देश, 2016 में पुलों से 200 से 500 मीटर के अंदर बालू खनन करने की सख्त मनाही थी, इसके बावजूद बांदा, चित्रकूट और कानपुर देहात में 4 स्थानों पर खनन पट्टे दिए गए और खनन हुए। कैग ने सरकार को जोखिम के मद्देनजर दिशा-निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करने को कहा है।

घर-घर कूड़ा उठाने में लगाया चूना

अमृत विचार, लखनऊ: विधानमंडल में मंगलवार को रखे गए भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) की रिपोर्ट में लखनऊ और गाजियाबाद शहर मं में डोर-टू-डोर कूड़ा उठाने के एवज में यूजर चार्ज वसूलने में मनमानी सामने आई है। नियमों को ताक पर रखकर घरों और व्यवसायिक प्रतिष्ठानों से निगम ने यूजर चार्ज ही नहीं लिया। इससे दोनों नगर निगमों को 71.50 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। इसी तरह लखनऊ व गाजियाबाद में यूजर चार्ज वसूलने वाली फर्मों को 4.06 करोड़ रुपये अधिक भुगतान किया गया। कैग की रिपोर्ट में कहा गया है कि लखनऊ में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए अप्रैल 2017 में उपविधि बनाई गई। इसमें घरों और व्यवसायिक प्रतिष्ठानों से डोर-टू-डोर कूड़ा उठाने के लिए यूजर चार्ज तय किया गया।

कानून व्यवस्था के मुद्दे को विधान परिषद में तकरार

उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और नेता विरोधी दल में बहस के बाद सपा ने किया सदन का बहिष्कार

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : मानसून सत्र के दूसरे दिन भी विधान परिषद में विपक्षी दल सपा सदस्यों ने सदन का वॉकआउट किया। उन्होंने कानून व्यवस्था को मुद्दा बनाया, सपा नेता डॉ.मान सिंह यादव समेत नेता विरोधी लाल बिहारी यादव ने आरोप लगाए कि प्रदेश में कानून का राज समाप्त हो गया है, अपराध का डंका बज रहा है, भाजपा सरकार संरक्षण में अवैध कब्जे हो रहे हैं। जवाब में नेता सदन एवं उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि 2017 में जब भाजपा सरकार में आयी है, प्रदेश की जनता ने राहत की सांस ली है, उसके पहले के दिनों को याद कर लोग कांप जाते हैं।

विधान परिषद में मंगलवार को सदन कार्यवाही के दौरान शून्य प्रहर में नियम 105 के तहत सपा के डॉ.मानसिंह यादव ने कहा कि जब से भाजपा सरकार में आयी है, उप्र. में हत्या, लूट, रंगदारी, दुष्कर्म, महिला उत्पीड़न, फर्जी मुकदमें व अवैध कब्जे आम बात हो गयी है। शहजहांपुर में थाना निगोही की पुलिस द्वारा पूर्व विधायक रोशन लाल वर्मा की पुत्रवधु रूचि वर्मा के मकान के सामने सहन पर जबरदस्ती पुरानी गाड़ियां खड़ी कर कब्जे का मामला उठाया, जिसमें एसडीएम द्वारा दो बार पट्टा करने के साक्ष्य भी दिए। आशुतोष सिन्हा, बलराम यादव, मुकुल यादव, समेत नेता विरोधी दल लाल बिहारी यादव ने भी सवाल की ग्राह्यता पर बोलते हुए कहा कि प्रदेश में रोजाना 10 मर्डर, नौ बलात्कार, और अन्य घटनाएं घट रहीं हैं, दलित अत्याचार व घरेलू हिंसा में प्रदेश नंबर वन बन चुका है। किरण पाल सिंह कश्यप ने हत्या, बलात्कार, शीलभंग, अपहरण एंव छेंड़खानी आदि मामलों का आकड़ा प्रस्तुत करते हुए कहा कि लखनऊ में सबसे ज्यादा घटनाएं महिलाओं के साथ घटित हुई हैं। जवाब में उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि प्रदेश में अपराधी कितना भी बड़ा हो, प्रदेश में कार्रवाई जरूर होती है, भाजपा अपराधियों को राजनैतिक संरक्षण नहीं देती है।

2017 के पहले मुख्यमंत्री व विधायकों का ड्राइंगरूम अपराधियों से भरा रहता है। भाजपा सरकार की लोकप्रियता वजह से 2017 मे सपा की करारी हार हुई, 2019 में भी जीते, 2022 में ऐसा माहौल बनाया कि सबकुछ 2017 से पहले वाली स्थिति आ रही है, सारे अपराधी बाहर आ गए, मगर जनता ने योगी सरकार का समर्थन किया और प्रचंड बहुमत के साथ दोबारा सरकार बन गयी है। आगामी 2027 में 2022 जैसा ही होगा, भाजपा सरकार बनाएगी। अपराधियों को राजनीति में लाने वाले सपा है, सरंक्षण करते हैं। नेता सदन का बीच में ही टोकते हुए लाल बिहारी यादव ने कहा कि सरकार की उपलब्धियां गिना रहे हैं, सवाल का जवाब नहीं रहे हैं, सदन को गुमराह कर रहे हैं, हम सदन का बहिर्गमन करते हैं।

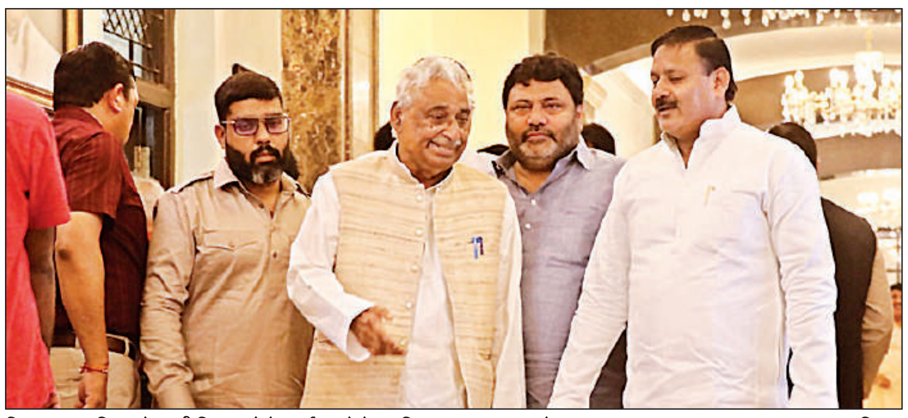

विधानसभा परिसर में साथी विधायकों के चर्चा करते नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडेय। अमृत विचार

ये मुद्दे उठाएं गए

- सदन में नियम 137(7) के तहत ध्रुव कुमार त्रिपाठी ने सिद्धार्थ नगर में पंचायतों एवं परिषदों में सरकारी धन से प्रकाशित विज्ञापन में विधान परिषद सदस्य के फोटो न होने का मुद्दा उठाया, उन्होंने कहा कि शासनादेश में उल्लिखित हैं, बावजूद सम्मान नहीं मिलता है। बहस के दौरान विधानसभा और विधान परिषद के सदस्यों को विधायक कहे जाए या न, चर्चा हुई। नियमानुसार परिषद सदस्यों के बाद विधायक बैठेंगे। सपा के मो. जासमीर अंसारी,किरण पाल कश्यप, नेता विरोधी दल लाल बिहारी यादव आदि ने विधानसभा में विधायकों की तरह परिषद सदस्यों की फोटो लगवाने की बात कहीं। सभापति कुंवर मानवेंद्र सिंह मामले को सरकार को संदर्भित कर दिया।
- नियम 115 के अंतर्गत शिक्षक नेता ध्रुव कुमार त्रिपाठी ने संस्कृत माध्यमिक विद्यालय एवं संस्कृत महाविद्यालय के एकल स्थानान्तरण का दंश झेल रहे शिक्षकों के साथ हो रहे सौतेले व्यवहार का मुद्दा उठाया, उन्होंने कहा कि एकल स्थानान्तरण की सुविधा न होने के कारण शिक्षक व उनके परिवारों में भारी रोष व्याप्त है। तत्काल एकल स्थानान्तरण संबन्धी तत्काल आदेश जारी करने की मांग करते हुए चर्चा की मांग की, सभापति ने मामले को राज्य सरकार को संदर्शित कर दिया।
- कुंवर मानवेंद्र सिंह के सभापतित्व में मंगलवार को सदन की शुरूआत सपा के डॉ.मान सिंह यादव के सवाल से हुई, उन्होंने पूंछा कि कितने विश्वविद्यालय संचालित हो रहे हैं और उनमे शिक्षकों के आरक्षण वार कितने पद रिक्त हैं, जवाब में कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने बताया कि प्रदेश में संचालित हो रहे पांच विश्वविद्यालयों में रिक्त पदों का व्यौरा दिया, बताया कि चंद्र शेखर कृषि विश्वविद्यालय कानपुर में स्वीकृत 767 पदों में 456 रिक्त हैं, नरेंद्र देव विश्वविद्यालय अयोध्या में 828 पदों में 434 रिक्त, बांदा कृषि विद्यालय में 189 पदों में 98 रिक्त हैं, सरदार वल्लभ भाई पटेल विश्वविद्यालय में 317 पदों में 125 और प्रयागराज के सैम हिंग्गिनबॉटम में 133 में छह पद रिक्त हैं।

समाजवादी पहले माहौल बिगाड़ते हैं, फिर सदन नहीं चलने देते

- फतेहपुर की घटना पर सपा विधायकों के हंगामे पर बरसे मंत्री
- संसदीय कार्यमंत्री, आबकारी मंत्री व परिवहन मंत्री ने सपा नेताओं को घेरा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: फतेहपुर की घटना को लेकर सपा विधायकों के सदन में हंगामा पर संसदीय कार्यमंत्री सुरेश खन्ना, आबकारी मंत्री नितिन अग्रवाल और परिवहन राज्य मंत्री दयाशंकर सिंह ने विपक्ष पर जानबूझकर अराजकता फैलाने और राजनीतिक लाभ लेने के आरोप लगाए। विधानसभा का छोटा सत्र फतेहपुर की घटना को लेकर लगातार दूसरे दिन हंगामे की भेंट चढ़ गया। सरकार ने सदन में स्पष्ट किया कि घटना पर एफआईआर दर्ज हो चुकी है, दोषियों की पहचान कर सख्त कार्रवाई की जाएगी, फिर भी विपक्ष ने सदन नहीं चलने दिया।

जीरो टॉलरेंस की सरकार, दोषी बचेंगे नहीं- नितिन अग्रवाल

- आबकारी मंत्री नितिन अग्रवाल ने कहा कि संसदीय कार्यमंत्री ने नेता प्रतिपक्ष के सवाल का स्पष्ट जवाब दे दिया है। सरकार की नजर मामले पर है, सभी दोषियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज हो चुकी है। जांच जारी है कार्रवाई होगी।

कानून सम्मत तरीके से होगी कार्रवाई : खन्ना

- वित्त एवं संसदीय कार्यमंत्री सुरेश खन्ना ने कहा कि नेता प्रतिपक्ष ने फतेहपुर की घटना उठाई, जिस पर उन्होंने उसी वक्त विस्तृत जवाब दिया। क्राइम नंबर 319 के तहत एफआईआर दर्ज है। 10 नामजद और 150 अज्ञात लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई है। जिन धाराओं में केस हुआ है, वह गंभीर हैं और विवेचना के बाद दोषियों को सजा मिलेगी। पप्पू चौहान का नाम सामने आया है, जिन्हें समाजवादी पार्टी से निकाला गया है। यही इनका तरीका है कि पहले घटना में शामिल होना, फिर सड़क और सदन में माहौल बिगाड़ना। उन्होंने कहा कि छोटा सत्र ऐतिहासिक कार्यों के लिए था, लेकिन विपक्ष ने दोनों दिन सत्र नहीं चलने दिया।

दयाशंकर बोले – विपक्ष मुद्दाविहीन

- परिवहन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दयाशंकर सिंह ने कहा कि विपक्ष ने जिस मुद्दे पर हंगामा किया, उस पर पहले से ही मुकदमा दर्ज है और कार्रवाई चल रही है। विपक्ष के पास न कोई मुद्दा है, न विजन। ये लोग गुंडागर्दी के आधार पर चुनाव लड़ते और सरकार चलाते हैं, इसलिए लोकतंत्र पर इनका भरोसा नहीं है। फतेहपुर मामले में चाहे दोषी सपा कार्यकर्ता हो या कोई और, कार्रवाई तय है।

लोक सेवा आयोग की भर्ती परीक्षा होगी फुलप्रूफ

- उप्र. निजी विवि(द्वितीय संशोधन) विधेयक पेश

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : राज्य सरकार ने मंगलवार को विधानसभा में उत्तर प्रदेश निजी विश्वविद्यालय (द्वितीय संशोधन) विधेयक पेश कर दिया है। इसके तहत लोकसेवा आयोग की भर्ती परीक्षाओं को और भी फूलप्रूफ बनाने के लिए चार सेटों में प्रश्नपत्र बनवाए जाएंगे। अभी तक तीन सेटों में इसे तैयार किया जा रहा है।

साथ ही अलग-अलग रंग के लिफाफे में गोपनीय कोड के साथ प्रश्नपत्रों को परीक्षा केंद्रों पर भेजा जाएगा। इसके लिए उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (संशोधन) विधेयक -2025 विधान सभा व विधान परिषद में रख दिया गया। अधिनियम -1985 की धारा 10 की उपधाराओं एक, तीन, चार व पांच में संशोधन किया गया है। उपधारा एक में अभी तीन सेटों में प्रश्नपत्र तैयार किए जाने की व्यवस्था है।

उपधारा-तीन में पेपर सेट करने वाले विशेषज्ञों से प्राप्त प्रश्नपत्रों को मुहरबंद लिफाफे में उनसे रसीद लेकर दिए जाने की व्यवस्था है। इसे बदलते हुए अलग-अलग स्थान के पेपर सेट करने वालों से चार सेटों में बनवाया जाएगा।

झलकियां

- विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने मंगलवार को सपा विधायक डॉ. पल्लवी पटेल को सदन की कार्यवाही का वीडियो बनाने के लिए न केवल सख्ती से टोका बल्कि तुरंत डिलीट करने की भी हिदायत दी। यह भी कहा कि सदन की कार्यवाही का कोई वीडियो सोशल मीडिया या अन्य किसी मंच पर अपलोड किया तो सख्त कार्रवाई की जाएगी।
- शिक्षामित्रों के मानदेय और शिक्षकों की सैलरी पर सपा के एक विधायक ने बात करते-करते ऐसा एक किस्सा सुनाया कि सदन में मौजूद सदस्य हंसी न रोक सके। सपा विधायक ने बताया सुनाया कि किस तरह एक शिक्षामित्र को मानदेय बढ़ने संबंधी आश्वासन अपनी पत्नी को देने पर जब परिणाम नहीं निकला तो उसकी पत्नी छोड कर चली गई।
- जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह ने सदन में जल जीवन मिशन को लेकर उठाए गए सवालों का जवाब देते हुए सपा विधायकों को चुनौती देते हुए यह कह गए कि, अपनी-अपनी बीवी की कसम खाकर बताएं कि आपके गांव में पानी आता है या नहीं। इसके बाद सपा सदस्यों ने जमकर हंगामा किया। कहा कि स्वतंत्र देव सिंह की भाषा सदन की गरिमा को गिरा रही है।

छह विधेयक बगैर चर्चा के पास

राज्य ब्ययूरो, लखनऊ

अमृत विचार : विधानसभा में मानसून सत्र के दूसरे दिन भी विपक्ष हंगामा काटता रहा। इस बीच अव्यवस्थित सदन में छह विधेयक मंगलवार को विधानसभा में बगैर चर्चा के ही पास कराए गए। उत्तर प्रदेश माल और सेवा कर (संशोधन) विधेयक-2025 तथा उत्तर प्रदेश लोक अभिलेख विधेयक-2025 को मंगलवार को विधानसभा में पेश किया गया। अनुपूरक एजेंडा लाकर इन्हें पारित भी करा लिया गया।

जीएसटी (संशोधन) विधेयक के पास हो जाने से जीएसटी मामलों में करदाता अब रोपित अर्थदंड का 10 प्रतिशत धनराशि जमा कर अपील कर सकेंगे। उक्त दो विधेयकों के साथ ही उप्र. निरसन विधेयक-2025, उप्र. निजी विवि (संशोधन) विधेयक-2025, उत्तर प्रदेश निजी विवि (द्वितीय संशोधन) विधेयक-2025 तथा उत्तर प्रदेश मोटर यान कराधान (संशोधन)-2025 भी विधानसभा से पास कराए गए। दरसअल, उप्र. माल और सेवा कर (संशोधन) विधेयक-2025 में जीएसटी मामलों में धारा 129 के तहत अर्थदंड के प्रकरणों में प्रथम व अधिकरण के समक्ष अपील किए जाने से पहले जमा की जाने वाली धनराशि की सीमा अर्थदंड के 25 प्रतिशत से घटाकर 10 प्रतिशत किए जाने का प्रविधान है।

अभिलेखागार सलाहकार बोर्ड का गठन होगा

- उत्तर प्रदेश लोक अभिलेख विधेयक-2025 में ऐतिहासिक व प्राचीन अभिलेखों को संरक्षित करने से संबंधित है। अब लोक अभिलेखों का उत्तर प्रदेश सरकार की स्वीकृति के बिना राज्य के बाहर नहीं ले जाया जा सकेगा। 100वर्ष से पुराने अभिलेख नष्ट नहीं किए जा सकेंगे। अभिलेखागार सलाहकार बोर्ड का गठन किया जाएगा।

फतेहपुर प्रकरण में सख्त कदम उठाए सरकार: मायावती

- **अमृत विचार, लखनऊ:** बसपा प्रमुख मायावती ने कहा कि राज्य सरकार फतेहपुर प्रकरण में सख्त कदम उठाये। उन्होंने कहा कि सरकार किसी भी व्यक्ति को साम्प्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने वाले कदम न उठाने दे। सोशल मीडिया 'एक्स' के जरिये उन्होंने कहा कि फतेहपुर में मकबरा व मंदिर होने को लेकर चल रहे विवाद व बवाल को सरकार गंभीरता से ले और जरूरत पड़ने पर सख्त कदम भी उठाए।

भाजपा के दबाव में फतेहपुर पुलिस प्रशासन: अजय

- **अमृत विचार, लखनऊ:** कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने आरोप लगाते हुए कहा कि फतेहपुर में मकबरे में तोड़फोड़ की घटना पुलिस प्रशासन की मिलीभगत से हुई। उन्होंने कहा कि पुलिस प्रशासन भाजपा के दबाव में कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि फतेहपुर में मकबरे पर तोड़फोड़ के बाद तनाव फैल गया है। हिंदू संगठनों के जरिये मकबरे को मंदिर बताकर पूजा-अर्चना की कोशिश की गई, इसके बाद स्थिति बिगड़ी।

फर्जी मार्कशीट बनाने वाले गिरोह के तीन सदस्य गिरफ्तार

- यूपी बोर्ड के 25 हाईस्कूल व 49 इंटरमीडिएट की मार्कशीट बरामद

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: एसटीएफ ने फर्जी मार्कशीट बनाने वाले गिरोह का खुलासा कर मंगलवार को सरगना समेत तीन सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया। उनके पास से यूपी बोर्ड हाईस्कूल की 25, इंटरमीडिएट की 49, प्रदेश राज्य मुक्त विद्यालय की एक मार्कशीट के अलावा कार, कंप्यूटर सिस्टम, हार्डडिस्क, प्रिंटर बरामद किए गए हैं।

एसटीएफ के एएसपी बृजेश कुमार सिंह ने बताया कि पांडव नगर सिविल लाइन मेरठ निवासी जितेंद्र, जागृति विहार के शिवकुमार और जेल चुंगी के निखिल सिंह को पकड़ा गया है। तीनों गंगानगर में एक मकान में फर्जी मार्कशीट बनाते थे। आरोपियों ने पूछताछ में कुबूल किया कि मार्कशीट के एवज में 10-15 हजार रुपये वसूलते थे। फर्जी टीसी के 3 हजार रुपये लेते थे। आधा हिस्सा लखनऊ में बैठे गिरोह के एक सदस्य को जाता था। 10 वर्षों से सक्रिय गिरोह मार्कशीट में नंबर भी बढ़ाता था। आरोपियों के खिलाफ मेरठ के गंगानगर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई गई है। एसटीएफ गिरोह के अन्य सदस्यों और नेटवर्क के बारे में जानकारी जुटा रही है।

व्यवस्था

कैबिनेट की मंजूरी के बाद नीति का विस्तृत ड्राफ्ट हुआ जारी, लीज-ई-ऑक्शन के माध्यम से होगा औद्योगिक भूखंडों का आवंटन

वन ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी लक्ष्य को रफ्तार देगी नई औद्योगिक नीति

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: नई औद्योगिक आस्थान प्रबंधन नीति अब वर्ष 2027 तक वन ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी के लक्ष्य को रफ्तार दे सकेगी। कैबिनेट की मंजूरी के बाद राज्य सरकार की ओर से नीति का विस्तृत ड्राफ्ट जारी किया गया है। इसके तहत लीज व ई-ऑक्शन के माध्यम से औद्योगिक भूखंडों का आवंटन होगा। वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए क्षेत्रवार आरक्षित कीमत तय होगी। कुल भूखंड-शेड का 10 प्रतिशत एससी-एसटी वर्ग के उद्यमियों को आवंटित होगा।

नई नीति के तहत औद्योगिक आस्थानों में उपलब्ध भूमि, शेड और भूखंडों का आवंटन लीज-रेंट पर नीलामी या ई-ऑक्शन के जरिए किया जाएगा। लीज-रेंट की अवधि आयुक्त एवं निदेशक उद्योग के जरिये तय की जाएगी। नीलामी पोर्टल का चयन भी आयुक्त एवं निदेशक के अधिकार क्षेत्र में होगा। इसके माध्यम से 20 प्रतिशत तक क्षेत्र का उपयोग व्यवसायिक, सेवा व आवासीय कार्यों के लिए किया जा सकेगा।

क्षेत्रवार रिजर्व प्राइस तय

- प्रदेश की भौगोलिक विविधता को ध्यान में रखते हुए वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए औद्योगिक भूखंडों की रिजर्व प्राइस तय की गई है। इसके अंतर्गत मध्यांचल में 2,500 प्रति वर्ग मीटर, पश्चिमांचल में 20 प्रतिशत अधिक 3,000 प्रति वर्ग मीटर, बुंदेलखंड व पूर्वांचल में 20 प्रतिशत कम 2,000 प्रति वर्ग मीटर प्राइस निर्धारित किया गया है। इन दरों में हर साल 1 अप्रैल को 5 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि होगी। अगर किसी औद्योगिक आस्थान में एंकर इकाई स्थापित होने से एमएसएमई इकाइयों में उल्लेखनीय वृद्धि की संभावना है, तो शासन विशेष दर पर भूखंड आवंटन का निर्णय ले सकेगा।

10 प्रतिशत एससी-एसटी को आरक्षण

- नीति के तहत आरक्षण की भी व्यवस्था की गई है। कुल भूखंड-शेड का 10 प्रतिशत एससी-एसटी वर्ग के उद्यमियों को आवंटित होगा। अगर कोई योग्य आवेदक न मिले, तो भूखंड अन्य वर्ग को दिया जा सकेगा ताकि विकास में रुकावट न आए।

भुगतान की लचीली व्यवस्था

- ई-ऑक्शन में सफल बोलीदाता को आरक्षित मूल्य का 10 प्रतिशत अर्नेस्ट मनी देना होगा। उद्यमी शेष राशि एकमुश्त एक वर्ष या तीन वर्ष में चुका सकेंगे। तत्काल भुगतान पर उन्हें 2 प्रतिशत की छूट मिलेगी। इसी तरह किस्त योजना में 12 या 36 समान मासिक किस्तें देय होंगी, जबकि विलंब पर दंड के रूप में अतिरिक्त ब्याज लगाया जाएगा।

यूपी दूसरी सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्था

- उत्तर प्रदेश की सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) में तेजी से वृद्धि हो रही है जो 5.5 प्रतिशत से बढ़कर 8.9 प्रतिशत हो गई है। इस वृद्धि के साथ उत्तर प्रदेश देश में दूसरा सबसे तेजी से बढ़ने वाला राज्य बन गया है। तमिलनाडु 11.19 प्रतिशत जीएसडीपी दर के साथ पहले स्थान पर है। भारत सरकार की सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय ने यह रिपोर्ट जारी की है। इसे मुख्यमंत्री के सलाहकार अवनीश कुमार अवस्थी ने मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट करके साझा भी किया है। लिखा है कि प्रदेश की सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) में तेज वृद्धि हो रही है। राज्य की जीएसडीपी (अर्थव्यवस्था) 5.5 प्रतिशत से आगे निकलते हुए अब 8.9 प्रतिशत की दर से आगे बढ़ रही है। इस उछाल के साथ ही उत्तर प्रदेश देश में दूसरा सबसे तेजी से बढ़ने वाला राज्य बन गया है। पहले नंबर तमिलनाडु है, जिसकी जीएसडीपी दर इस समय 11.19 प्रतिशत है। रिपोर्ट के अनुसार छोटे राज्यों में अरुणाचल और मेघालय की जीएसडीपी दर 9.66 प्रतिशत दर्ज की गई है। गुजरात, गोवा, लद्दाख, सिक्किम, मिजोरम, मणिपुर, नागालैंड के आंकड़े शामिल नहीं किए गए हैं। अवस्थी ने लिखा है कि यह नया उत्तर प्रदेश है, जो पूरी गति से से आगे बढ़ रहा है।

न्यूज ब्रीफ

हलफनामे पर होगी प्रधानों की जांच

कानपुर देहात। जिला पंचायत राज अधिकारी विकास पटेल ने पंचायती राज निदेशक के 31 जुलाई के पत्र का हवाला देते हुए बताया कि अब ग्राम प्रधानों की शिकायत संबंधित ग्राम सभा के निवासी हलफनामे पर कर सकेंगे। शिकायत फर्जी मिलने पर शिकायतकर्ता के खिलाफ विधिक कार्रवाई की जाएगी।

कॅरियर काउंसिलिंग में दी गई जानकारी

कानपुर देहात। जिला सेवायोजन कार्यालय द्वारा अकबरपुर बालिका इंटर कॉलेज में कॅरियर काउंसलिंग कार्यशाला आयोजित हुई, जिसमें अभ्युदय योजना के कोर्स कोआर्डिनेटर वरुण त्रिवेदी ने यूपीएससी, यूपी पीसीएस, एनडीए, सीडीएस आदि की तैयारी संबंधी जानकारी दी। यहां प्रधानाचार्या मिथिलेश कुमारी, जिला सेवायोजन अधिकारी शशि तिवारी, अनुज यादव, विनोद कुमार आदि रहे।

सेवायोजन कार्यालय में रोजगार मेला कल

कानपुर देहात। जिला सेवायोजन कार्यालय माती में गुरुवार को प्रातः 10:30 बजे से रोजगार मेले का आयोजन होगा, जिसमें निजी क्षेत्र की कंपनियां आएंगी। अभ्यर्थियों का रोजगार संगम पोर्टल पर पंजीयन भी किया जाएगा। अभ्यर्थी अपने शैक्षिक व जाति प्रमाण पत्र की छायाप्रति लेकर पहुंचें। पोर्टल पर जॉब सीकर पंजीयन की व्यवस्था है। जनपद के अन्य अभ्यर्थी जॉब सीकर में अपना पंजीयन कराकर सेवायोजन विभाग की कैरियर काउंसलिंग, रोजगार मेला, कैंपस प्लेसमेंट आदि सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं।

फैक्ट्री के बाहर खड़े ट्रक से डीजल चोरी

रनियां। थाना क्षेत्र के उमरन गांव के सामने नेशनल हाईवे के किनारे डाबर इंडिया कंपनी में सोमवार की रात गुड़गांव हरियाणा के पतंजलि स्टोर से गजनेर क्षेत्र के हरचंदापुर का ट्रक चालक पिंकू माल लेकर आया था। उसने बताया कि ट्रक फैक्ट्री गेट के पास खड़ा कर खाने के बाद सो गया। रात में चोरों ने ट्रक से करीब 500 लीटर डीजल चोरी कर लिया। डायल 112 पर सूचना के बाद पहुंची पुलिस ने छानबीन की। एसआई संजीव सिंह ने बताया कि जांच की जा रही है।

किसान ने खरीदी 4 बोरी यूरिया, 6 चढ़ाईं

गड़बड़झाला

- कृषि विभाग के अधिकारियों की छापेमारी में पकड़ी गई गड़बड़ी
- गड़बड़ी मिलने पर तीन दुकानों के लाइसेंस निलंबित किए गए

कार्यालय संवाददाता, कानपुर देहात

अमृत विचारः किसानों में निर्धारित दर पर उर्वरक बिक्री को लेकर कृषि अधिकारियों की टीम ने छापेमारी कर पांच दुकानों का निरीक्षण किया गया। खामियों पर तीन विक्रेताओं के लाइसेंस निलंबित कर दिए गए।

जिला कृषि अधिकारी उमेश कुमार गुप्ता ने बताया कि खरीफ अभियान-2025 के तहत गुणवत्तायुक्त एवं निर्धारित दर पर उर्वरक उपलब्ध कराने के लिए जनपद की उर्वरक दुकानों पर औचक छापा डाला गया। लकी खाद भंडार विसायकपुर रनियां का निरीक्षण करने पर 11 अगस्त को पीओएस मशीन से 12.465 मीट्रिक टन यूरिया बिक्री की गई, लेकिन वितरण रजिस्टर पर अंकित नहीं किया गया। रजिस्टर पर 10 अगस्त को किसान प्रदीप पांडेय निवासी ग्राम लाटा को छह बोरी यूरिया वितरण अंकित था। फोन से बात करने पर किसान ने बताया कि उसने केवल 4 बोरी यूरिया खरीदी थी। उर्वरक बिक्री में अनियमितता पर तत्काल लाइसेंस निलंबित किया गया। थोक केन्द्रीय उपभोक्ता सहकारी भंडार तिगाईं के निरीक्षण में पीओएस मशीन के अनुसार 376 बोरी यूरिया, 28 बोरी डीएपी व 6 बोरी एनपीके पायी गयी। जय बालाजी खाद भंडार गहोवा कानपुर देहात के निरीक्षण में फर्म का बोर्ड, स्टाक एवं रेट बोर्ड, स्टाक एवं वितरण रजिस्टर मौके पर नहीं दिखाए गए। भौतिक स्टाक शून्य मिलने पर लाइसेंस निलंबित किया।

मंगलवार को दुकान में औचक निरीक्षण करते कृषि अधिकारी। अमृत विचार

किसान खाद भंडार चिलौली डेरापुर के निरीक्षण में स्टाक एवं रेट बोर्ड नहीं था। स्टाक और वितरण रजिस्टर भी नहीं दिखाया गया। भौतिक स्टाक एवं पीओएस में भी भिन्नता मिली। जिस कारण लाइसेंस निलंबित किया गया। जिला कृषि अधिकारी ने सभी उर्वरक विक्रेताओं को निर्देशित किया है कि वह अपने-अपने अभिलेख, स्टाक बोर्ड, रेट बोर्ड, फर्म बोर्ड, स्टाक रजिस्टर एवं वितरण रजिस्टर पूर्ण करें। खतौनी एवं फसल संस्तुति के अनुसार पीओएस मशीन में आधार सत्यापन के अनुसार ही उर्वरक निर्धारित दर पर बिक्री करें।

जन औषधि केंद्र में कैश मेमो गायब

शिकायत पर जांच

- अतिरिक्त मजिस्ट्रेट और ड्रग इंस्पेक्टर जांच करने पहुंचे
- जांच के दौरान जन औषधि केंद्र के संचालक भी नहीं मिले

संवाददाता, रूरा

अमृत विचारः कस्बे में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र परिसर में संचालित जन औषधि केंद्र में मरीज को बाहरी दवा देने की शिकायत पर पहुंचे अतिरिक्त मजिस्ट्रेट व ड्रग इंस्पेक्टर ने जांच की। इस दौरान संचालक मौजूद नहीं मिले और दवाओं का कैश मेमो नदारद पाया गया। मौके से दवाओं के दो नमूने लिए गए।

बीती 7 अगस्त को सिठमरा के रहने वाले मरीज आकाश शर्मा ने रूरा सीएचसी परिसर में खुले जन औषधि केंद्र पर बाहरी दवाएं देने और मांगने पर बिल न देने का आरोप लगाकर जन सुनवाई पोर्टल पर शिकायत की थी। जबकि मोहन कुमार ने जिलाधिकारी को पत्र के माध्यम से जन औषधि केंद्र में खामियों की शिकायत की थी। जिलाधिकारी के निर्देशन में

जन औषधि केंद्र में जांच करते अतिरिक्त मजिस्ट्रेट व ड्रग इंस्पेक्टर। अमृत विचार

मंगलवार को अतिरिक्त मजिस्ट्रेट प्रद्युम्न कुमार व औषधि निरीक्षक अजय कुमार संतोषी ने जन औषधि केंद्र में पहुंच कर दवाएं चेक की। मौके पर एलोपैथिक व कुछ आयुर्वेदिक दवाएं मिली। केंद्र पर संचालक भी उपस्थित नहीं मिले। कैश मेमो मांगने पर नहीं दिखाया जा सका। इसपर कार्यवाही करने की चेतावनी दी गई। औषधि निरीक्षक अजय कुमार संतोषी ने बताया कि केंद्र से दवाओं के दो नमूने लिए गए हैं, जो खामियां पाई गई हैं।कार्यवाही के लिए इसकी रिपोर्ट जिलाधिकारी व औषधि आयुक्त कानपुर मंडल को भेजी जा रही है।

बेड पर 10 घंटे शव मामले में 5 निलंबित

जेआर और इंटर्न डॉक्टरों के साथ वार्ड ब्वॉय, स्वच्छक और आउटसोर्स कर्मी पर की गई कार्रवाई

कार्यालय संवाददाता, कानपुर देहात

- मेडिकल कॉलेज में लापरवाही पर प्राचार्य ने उठाया कदम
- महानिदेशक से फार्मासिस्ट के निलंबन की हुई संस्तुति

अमृत विचारः मेडिकल कालेज की इमरजेंसी में बीमार की तड़पकर मौत और फिर करीब 10 घंटे बेड पर ही शव पड़े रहने के मामले में प्राचार्य ने एक डयूटी डॉक्टर जेआर, इंटर्न, वार्ड ब्वाय, स्वच्छक व आउटसोर्स कर्मी को निलंबित कर दिया है, जबकि फार्मासिस्ट के निलंबन के लिए महानिदेशक को संस्तुति बेजी गई है।

अकबरपुर मेडिकल कालेज की इमरजेंसी में शनिवार की दोपहर दो लोग एक युवक को गंभीर हालत में लाए थे और युवक का नाम सुंदर (25) बताकर भर्ती कराने के बाद चले गए थे। युवक को इमरजेंसी वार्ड के बेड नंबर 6 पर लिटाया गया था। बाद में उसे उल्टियां शुरू होने पर इमरजेंसी के डाक्टर मनीष ने उसे हैलट कानपुर रेफर कर दिया था और युवक के साथ कोई नहीं होने पर अकबरपुर कोतवाली में पीआई भेजकर गार्ड की मांग की गई थी।

10 घंटे बेड पर पड़ा रहा शव, मरीज भागे

12 अगस्त को प्रकाशित हुई थी खबर।

इस बीच रात में युवक की मौत हो गई, लेकिन कोई जिम्मेदार घंटों उसे देखने नहीं पहुंचा और शव इमरजेंसी वार्ड के बेड में करीब 10 घंटे पड़ा रहा। दुर्गंध आने पर वार्ड में भर्ती मरीज और उनके तीमारदार बाहर निकल भागे थे। डीएम कपिल सिंह के हस्तक्षेप पर रविवार की सुबह सफाई कर्मी ने शव मर्च्युरी में रखवाया था। घोर लापरवाही का मामला तूल पकड़ने पर डीएम ने दो सदस्यीय जांच टीम गठित कर 24 घंटे में रिपोर्ट मांगी थी।

मामला बढ़ता देख मेडिकल कालेज के प्राचार्य डॉ. सज्जनलाल वर्मा ने लापरवाही पर जेआर डयूटी डॉक्टर अभिषेक शर्मा, इंटर्न डॉक्टर विजय त्रिपाठी, वार्ड ब्वॉय राजेश कुमार, स्वच्छक अरविंद बाल्मीकि और आउटसोर्स कर्मी रितेश यादव को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। वहीं शिथिलता बरतने पर इमरजेंसी में ड्यूटी पर रहे फार्मासिस्ट अजय विश्वकर्मा को निलंबित करने के लिए महानिदेशक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य लखनऊ को संस्तुति भेजी है।

डीएम को जांच रिपोर्ट का अभी तक इंतजार

- मेडिकल कालेज के इमरजेंसी वार्ड के बेड में 10 घंटे तक युवक का शव पड़ा रहने की घोर लापरवाही पर जिलाधिकारी कपिल सिंह ने एसडीएम/कार्यपालक मजिस्ट्रेट राजकुमार पांडेय व एसीएमओ डा. शलभ मोहन की दो सदस्यीय जांच टीम बनाई थी और 24 घंटे में जांच रिपोर्ट देने के निर्देश दिए थे। इस रिपोर्ट का अभी इंतजार है।

ये कदम उठाए गए

दो ईएमओ और सिस्टर से स्पष्टीकरण तलब

- इमरजेंसी वार्ड से 10 घंटे तट शव नहीं हटने के मामले में जिला अस्पताल की सीएमएस डॉ. वंदना सिंह ने इमरजेंसी मेडिकल आफीसर डा. आराधना और डॉ. निशांत पाठक के साथ वार्ड सिस्टर कंचन से स्पष्टीकरण तलब किया है। संतोषजनक जवाब न मिलने प्रशासनिक कार्रवाई की जाएगी।

अब तारीख और यूनिट वार लगेगी ड्यूटी

- मेडिकल कालेज के प्राचार्य ने बताया कि भविष्य में लापरवाही रोकने के लिए सीएमएस के साथ पीएमएस कैडर के विशेषज्ञ डॉक्टरों की डयूटी तारीख और यूनिटवार लगाई जाएगी, जो इमरजेंसी के जूनियर व इंटर्न डाक्टरों को आपातकालीन प्रशिक्षण देंगे। साथ ही पैरामेडिकल स्टाफ का 24 घंटे पर्यवेक्षण करेंगे।

> इमरजेंसी वार्ड के बेड से शव नहीं हटाने के मामले में एक जेआर व इंटर्न डॉक्टर समेत पांच कर्मियों को निलंबित किया गया है। इमरजेंसी में ऐसी घटनाएं रोकने के लिए तीन सदस्यीय कमेटी बनाकर रिपोर्ट मांगी गई है। सचिव चिकित्सा शिक्षा विभाग को भी रिपोर्ट भेजी गई है।
>
> -डॉ.सज्जनलाल वर्मा, प्राचार्य अकबरपुर मेडिकल कॉलेज

प्रसव कराने से इंकार पर स्टाफ नर्स को नोटिस

मनमानी

- राजपुर पीएचसी में बच्चे के वजन का तर्क देकर नहीं कराया प्रसव
- सिकंदरा के प्राइवेट अस्पताल में सामान्य प्रसव कराया गया

संवाददाता, राजपुर

अमृत विचारः सरकारी अस्पतालों में संस्थागत प्रसव बढ़ाने की सरकार की उम्मीदों पर विभागीय जिम्मेदार ही पलीता लगा रहे हैं। सरकारी अस्पतालों में प्रसव कराने के लिए आने वाली गर्भवतियों को निजी अस्पतालों में भेजा जा रहा है। यहां ऐसा ही एक मामला सामने आया है, जिसमें स्टाफ नर्स को नोटिस देकर स्पष्टीकरण मांगा गया है।

राजपुर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में संस्थागत प्रसव के आकंड़ों में लगातार कमी आ रही है। इसकी बानगी पिछले दिनों देखने को मिली। राजपुर ब्लॉक के मुबारकपुर गांव के रहने वाले अमित की गर्भवती पत्नी अंजू को बीती 24 जुलाई की रात प्रसव पीड़ा हुई। इस पर गांव की आशाबहू सुषमा रात में ही अंजू का प्रसव कराने के लिए सरकारी एंबुलेंस से लेकर राजपुर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र आई थी। आशाबहू ने बताया कि प्रसव कक्ष में डयूटी पर मौजूद स्टाफ नर्स शालिनी काफी देर बाद अपने कक्ष से बाहर निकलीं और बच्चे का वजन अधिक होने की बात कहते हुए डिलीवरी कराने से साफ इंकार कर दिया।

इसके बाद परिवार वाले अंजू को सिकंदरा के एक निजी अस्पताल में ले गए, जहां नार्मल डिलीवरी हुई। आशा ने इस पूरे मामले की जानकारी पीएचसी अधीक्षक को दी। इस तरह के पहले भी कई बार मामले सामने आ चुके हैं। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के अधीक्षक डॉ. अमित निरंजन ने बताया कि स्टाफ नर्स शालिनी पाल से स्पष्टीकरण तलब किया गया है। जांच के बाद कार्रवाई की जाएगी।

सुसाइड का वीडियो डालते ही मेटा के अलर्ट पर दौड़ी पुलिस

कार्यालय संवाददाता, कानपुर देहात

- पुलिस ने तत्परता से कदम उठाते हुए बचाई युवक की जान
- मोबाइल फोन के लोकेशन के आधार पर पहुंची पुलिस

अमृत विचारः प्रेम प्रसंग में विफल युवक ने इंस्टाग्राम पर आत्महत्या करने की पोस्ट/वीडियो अपलोड कर दिया। वायरल होने पर पुलिस ने मोबाइल लोकेशन के जरिये युवक को बचाया।

डेरापुर थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी युवक ने सोमवार देर शाम खुद की आत्महत्या करने संबंधी पोस्ट/वीडियो इंस्टाग्राम पर अपलोड कर दिया। जिसके संबंध में मेटा कंपनी से एलर्ट मिलने के बाद पुलिस मुख्यालय लखनऊ से युवक द्वारा अपलोड की वीडियो, उसका मोबाइल नंबर व लोकेशन के आधार पर डेरापुर थाना पुलिस तत्काल युवक के घर पहुंची और उसकी जान बचाई।

युवक की जान बचाकर पुलिस ने परिवार वालों के सुपुर्द किया। अमृत विचार

काउंसलिंग के दौरान युवक ने बताया गया कि प्रेम-प्रसंग में विफल होने पर उसने व्यथित होकर इस तरह की पोस्ट डाल दी थी। युवक को उसके परिजनों को सुपुर्द किया गया है। साथ ही दोबारा ऐसी हरकत न करने के संबंध में लिखित व मौखिक बयान लिया गया है।

युवक-युवती के शव बन गए अबूझ पहेली

जांच अटकी

- 16 जुलाई को मैथा रेलवे स्टेशन के समीप मिले थे दोनों के शव
- महीने भर गुजरने के बाद भी अभी तक नहीं हो सकी शिनाख्त

संवाददाता, शिवली

अमृत विचारः दिल्ली-हावड़ा रेलवे लाइन के किनारे मैथा रेलवे स्टेशन के समीप पिछली 16 जुलाई को मिले 28 वर्षीय युवक और करीब 25 वर्षीय युवती के शव अबूझ पहले बनकर रह गए हैं। करीब महीने भर गुजर जाने के बाद भी पुलिस अभी तक दोनों शवों के बारे में कोई सुराग नहीं लगा सकी। पुलिस ने शुरुआत में ही दोनों के किसी ट्रेन से गिरकर मरने की आशंका जताई थी।

पुलिस की जांच के बीच तमाम प्रयासों के बावजूद अभी तक दोनों युवक और युवती के शवों की शिनाख्त नहीं हो पाई है। पुलिस ने आसपास थानों को दोनों मृतकों के हुलिए के आधार पर जानकारी दी थी, फिर भी अभी तक कोई भी ठोस सबूत उनकी शिनाख्त के तौर पर सामने नहीं आया है।

जब दोनों के एक साथ शव बरामद हुए थे, तब दोनों के किसी ट्रेन के सामने कूदने अथवा रील बनाते समय ट्रेन से गिरने की ग्रामीणों के बीच चर्चा थी। अज्ञात होने के कारण पुलिस ने शवों का पोस्टमार्टम 72 घंटे बाद कराया था। मैथा चौकी प्रभारी नरेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि शिनाख्त के प्रयास जारी है। अभी तक मृतक युवक-युवती की पहचान नहीं हो पाई है।

रोजगार सेवकों ने मांगा मानदेय

संवाददाता, राजपुर

- रोजगार सेवकों ने खंड विकास अधिकारी को सौंपा ज्ञापन
- ईपीएफ कटौती की धनराशि बैंक खाते में जमा करने की मांग

अमृत विचारः लंबित मानदेय और ईपीएफ कटौती की धनराशि बैंक खाते में न जमा होने से नाराज मनरेगा के अंतर्गत काम करने वाले रोजगार सेवकों ने मंगलवार को ब्लॉक कार्यालय में बैठक की। उसके बाद बीडीओ को ज्ञापन सौंपा।

ग्राम रोजगार सेवक एकता संघर्ष समिति के ब्लॉक अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार पाल ने बताया कि रोजगार सेवकों के बकाये मानदेय व ईपीएफ भुगतान के लिए शासन द्वारा कई बार धनराशि भी उपलब्ध कराई गई। साथ ही प्रतिमाह निर्धारित मानदेय देने का शासनादेश जारी किया गया है, लेकिन अफसर आदेश को दरकिनार कर दे रहे हैं।

उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायत स्तर पर रोजगार सेवकों को जब तक यूजर आईडी व पासवर्ड नहीं उपलब्ध कराया जाएगा, तब तक रोजगार सेवक मनरेगा कार्यों में भागीदारी नहीं निभाएंगे। खंड विकास अधिकारी हरगोविंद गुप्ता ने बताया कि रोजगार सेवकों ने समस्याओं संबधी ज्ञापन दिया है। इस दौरान केशराम, जितेन्द्र सिंह, अमरेश बाबू, अतुल, नीरज, आशीष, राकेश, प्रियंका कटियार आदि रोजगार सेवक मौजूद रहे।

बीडीओ को ज्ञापन देते ग्राम रोजगार सेवक। अमृत विचार

गूंजते रहे नारे

भाजपा गजनेर मंडल की ओर से जिठरौली और रसूलाबाद में चेयरमैन के नेतृत्व में निकाली गई तिरंगा यात्रा

शहीद स्थल से निकली तिरंगा यात्रा में गूंजा देशभक्ति का संदेश

कार्यालय संवाददाता, कानपुर देहात

अमृत विचारः भाजपा गजनेर मंडल की तरफ से तिरंगा यात्रा का शुभारंभ जिठरौली गांव में हुआ। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने भारतीय सेना जिंदाबाद के नारे लगाए।

भाजपा की ओर से जिले के सभी मंडलों में आपरेशन सिंदूर के बाद तिरंगा यात्रा का आयोजन किया जा रहा है । मंगलवार गजनेर मंडल की ओर से ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि अतुल सिंह चंदेल के संयोजन में अमर शहीद मनोज चौहान की प्रतिमा से यात्रा निकाली गई। मुख्य अतिथि भाजपा युवा मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष शिववीर सिंह भदौरिया ने युवाओं में जोश भरा। उन्होंने कहा कि आपरेशन सिंदूर से भारत ने दुनिया भर में अपनी ताकत का संदेश दिया है। ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि अतुल चंदेल ने कहा कि आज भारत मजबूत बनकर उभर रहा है। सह संयोजक डॉ. संजय सिंह ने कहा कि भारत विश्व की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है और जल्द तीसरे स्थान पर पहुंचेगा । पूर्व जिला मंत्री सत्यम चौहान ने शहीद के पिता इंद्रपाल चौहान का सम्मान किया। वहीं यात्रा जिठरौली चौराहा से होकर वापस प्रतिमा स्थल पर समाप्त हुई। इस मौके पर मंडल अध्यक्ष शुभम चौहान, मुनेश बाजपेई, राजकुमार गुप्ता, संतोष सिंह, अशोक शुक्ल, विकास चौहान, चंकी शर्मा आदि रहे ।

मंगलवार को जिठरौली में तिरंगा यात्रा निकालते भाजपाई। अमृत विचार

रसूलाबाद में भी भाजपा की ओर से तिरंगा यात्रा निकाली गई। अमृत विचार

रसूलाबाद में भी भाजपा ने निकाली तिरंगा यात्राः मंगलवार को रसूलाबाद चेयरमैन देवशरण कमल व जिला पंचायत सदस्य जनार्दन सिंह गौर ऋषि के नेतृत्व में राजा दरियाव चंद्र इंटर कॉलेज से विशाल तिरंगा यात्रा निकाली गई। इसके पूर्व भाजपा नेताओं ने राजा दरियाव चंद्र की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। यात्रा के दौरान बडी संख्या में कार्यकर्ताओं के हाथों में तिरंगा झंडा व वंदे मातरम के उदघोष सुनाई दे रहा था। यात्रा आजाद चौक से होते हुए नगर पंचायत पहुंची, जहां समापन हुआ। इस दौरान मंडल अध्यक्ष ओम शंकर सिंह, रवि सिंह, अंकुर सिंह भदौरिया, गुड्डू सिंह राजावत, विजय पाल, पुष्पेंद्र यादव, बड़े राठौर, छोटे कुशवाहा, सुभाष अवस्थी, अटल बाजपेयी, बॉबी दुबे, प्रियम मिश्रा, सुनील वर्मा, विवेक पाल, भानु प्रताप सिंह, सूर्य प्रताप सिंह, राम कुमार सिंह आदि मौजूद रहे।

अकबरपुर में हर घर तिरंगा यात्रा आज

कानपुर देहात। हर घर तिरंगा अभियान में बुधवार सुबह 10:30 बजे तिरंगा रैली का आयोजन होगा, जो अकबरपुर डिग्री कॉलेज से शुरू होकर ओवरब्रिज तक जाएगी। रैली का उद्देश्य राष्ट्रध्वज का सम्मान, देशभक्ति की भावना एवं राष्ट्रीय एकता का संदेश देना है।

मैथा में 39 शिक्षकों का चार दिन का वेतन रोका

शिवली। मैथा एसडीएम ने पंचायत चुनाव को लेकर बड़ी कार्रवाई की है। 39 शिक्षकों का बीएलओ का चार्ज ग्रहण न करने पर चार दिन का वेतन रोकते हुए विभागीय कार्रवाई की संस्तुति की गई है। एसडीएम देश दीपक सिंह ने बताया कि पंचायत निर्वाचन में निर्वाचक नियमावली के वृहद पुनरीक्षण का कार्य शुरू होना है। इसके लिए 93 शिक्षकों को बीएलओ के रूप में तैनाती की गई है। जिसमें 39 शिक्षकों ने अभी तक कार्य भार ही नहीं संभाला है। इसको लापरवाही मानते हुए चार दिनों का वेतन रोकते हुए विभागीय कार्यवाही के लिए आदेशित किया गया है।

New DASTAK Classes
दस्तक, आपके सफलता की
The classes are known for preparing students for various exams like
SSC, BANK, UPSI, UPP
Address: Sharada Nagar Crossing No 9, Infront of Anurag Hospital, Kakadeo Kanpur Uttar Pradesh.
CONTACT: 7607780084, 7080270066

Vikash Pathak

न्यूज ब्रीफ

कुएं में उतरे दो युवक दम घुटने से गंभीर

मौदहा। कोतवाली क्षेत्र के ग्राम भवानी डेरा में एक पुराने कुएं में बकरी गिर गई। जिसे बचाने के लिए गांव के शिव शंकर यादव (25) हरिदास यादव और भोला प्रजापति (27) मुन्नीलाल प्रजापति कुएं में उतर गए। लेकिन कुएं में ऑक्सीजन की कमी या किसी विषैली गैस के चलते दोनों का दम घुटने लगा। जिन्हें तत्काल ग्रामीणों और पीआरबी की सहायता से कुएं से निकाल कर गंभीर हालत में इलाज के लिए कस्बे के अस्पताल पहुंचाया गया। जहां पर दोनों युवकों का इलाज किया जा रहा है, फिलहाल दोनों की हालत में सुधार बताया जा रहा है।

सांप के डसने से वृद्धा की थम गईं सांसें

राठ। कस्बे के सिकंदरपुरा मोहल्ला निवासी गुलाब रानी (80) पत्नी गोकुल प्रसाद रात्रि के समय खाना खा पी कर अपने घर में चारपाई पर सो रही थी। तभी अचानक किसी जहरीले सर्प ने उसे डस लिया। जिससे उसकी हालत बिगड़ने पर मौके पर मौजूद परिजनों ने आनन फानन में उसे सीएचसी में भर्ती कराया। जहां चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार के बाद उरई मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया। लेकिन परिजन उसे मेडिकल कॉलेज उरई न ले जाकर पनवाड़ी स्थित एक निजी चिकित्सक के पास ले गए। जहां से इलाज कराने के बाद वापस कस्बे आते समय महिला मौत हो गई। कोतवाली प्रभारी इंस्पेक्टर ने बताया कि शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम कराया गया है।

संगठन ने शहीद को दी श्रद्धांजलि

सुमेरपुर। लुधियाना में शहीद हुए कुंडौरा के जवान राजेश कुमार यादव के गांव पहुंचकर अखिल भारतीय यादव महामंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सैनिक संगठन के उपाध्यक्ष ने श्रद्धांजलि अर्पित की। महामंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव सिंह यादव एवं सैनिक संगठन के उपाध्यक्ष महेश यादव ने कुंडौरा पहुंचकर शहीद राजेश कुमार यादव को श्रद्धा सुमन अर्पित करके परिजनों को सांत्वना दी। इस मौके पर प्रधान प्रतिनिधि अरविंद प्रताप यादव, अशोक यादव प्रधान बिरखेरा, भौंली प्रधान अनुज यादव, मानवेंद्र सिंह, विक्रम सिंह यादव, अतुल यादव, प्रधान दरियापुर आसाराम प्रजापति आदि मौजूद रहे।

महिला के साथ युवक ने की मारपीट

बिवांर। क्षेत्र के सायर निवासी संपत देवी पत्नी राम प्रसाद विश्वकर्मा ने सीओ को प्रार्थना पत्र देकर बताया कि रास्ते में गांव का भरत कुमार अपने मवेशी बांधता है। विरोध करने पर उसके साथ अभद्रता व गाली गलौज करने लगा और जमीन पर गिराकर थप्पड़-घूंसा से पिटाई की। शोर सुनकर उसकी दोनों पुत्रियों ने आकर बीचबचाव किया। युवक जान से मार देने की धमकी देते हुए चला गया। महिला के मौदहा सीओ विनीता पहल से कार्रवाई की मांग की।

भटपुरा के लोगों ने मांगी राहत सामग्री

हमीरपुर। कुरारा ब्लाक के भटपुरा गांव की किशनिया, राधा, अर्चना, भगुनिया, धीरज, अशोक, सुरेंद्र, आशीष, राजाबाबू आदि ने ज्ञापन में बताया कि उनका गांव यमुना नदी में बाढ़ से जलमग्न हो गया था, जिससे उनके मकानों और गृहस्थी को भारी नुकसान पहुंचा है। लेखपाल ने मुआयना किया, जिस पर बारिश का पानी भरे होने की रिपोर्ट बना देने का आरोप लगाया है। उन्होंने बाढ़ राहत सामग्री किट दिलाने की मांग की है।

गांव से लेकर कस्बों तक रही तिरंगा यात्रा की धूम

तिरंगा यात्रा में दिखा देशभक्ति का जुनून

घाटमपुर । भाजपा के हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत नौरंगा मंडल में संदीप बाजपेई के नेतृत्व में और जिला पंचायत अध्यक्ष स्वप्निल वरुण की अगुवाई में हर घर तिरंगा यात्रा निकाली गई। इस दौरान सैकड़ों भाजपाई मौजूद रहे। तिरंगा यात्रा के दौरान लोग भारत माता की जय व वंदेमातरम का उद्घोष करते रहे। वहीं जगह जगह पर तिरंगा यात्रा का लोगों ने स्वागत किया। भाजपा कानपुर ग्रामीण जिला संगठन के निर्देशानुसार नौरंगा मंडल में भव्य तिरंगा यात्रा कोरिया सेक्टर के कोरिया से भीम राव आंबेडकर पार्क से आस्तिक मुनि इंटर कॉलेज तक निकाली गयी। यहां पर मुख्य अतिथि के रूप में जिला पंचायत अध्यक्षा स्वप्निल वरुण मौजूद रहीं। कार्यक्रम संयोजक राहुल शुक्ला, शुभम, पूर्व मंडल अध्यक्ष संदीप तिवारी, राम जी जादौन, सुनयना, धर्मेंद्र, सुभाष, दीपू दुबे, महेंद्र मिश्रा, अमित तिवारी, रंजन द्विवेदी, राम बाबू साहू, राम मोहन तिवारी ग्राम प्रधान, श्यामू गुप्ता, बृजेश सोनकर, देश राज प्रजापति, अंकुर दीक्षित, अंकित दीक्षित समेत तमाम भाजपाई मोजूद रहे।

पतारा में बीडीओ के निकली तिरंगा यात्रा : पतारा। पतारा खंड विकास अधिकारी कार्यालय से बीडीओ, वीडीओ, ग्राम पंचायत विकास अधिकारी, ग्राम सचिव , ब्लॉक कर्मियों, ग्राम प्रधान व क्षेत्र पंचायत सदस्यों की मौजूदगी में बैंड बाजे के साथ तिरंगा रैली निकाली गई। इस दौरान देश भक्ति जयकारे भी लगते रहे। इस मौके पर बीडीओ, ग्राम पंचायत सचिव जितेंद्र तिवारी, जितेंद्र कुमार मिश्रा, विक्रम शर्मा, उदयवीर, प्रियंका तिवारी, शैलेंद्र गोस्वामी एवं ग्राम प्रधानों में केस चंद्र सचान ग्राम प्रधान बारा दौलतपुर, दीक्षा सचान ग्राम प्रधान दुरौली, दिनेश तिवारी ग्राम प्रधान, रवि शंकर अग्निहोत्री उर्फ लाला अग्निहोत्री ग्राम प्रधान हथेली, राधेश्याम तिवारी ग्राम प्रधान इटर्रा समेत तमाम लोग मौजूद रहे।

ब्लॉक प्रमुख कोमल सिंह के नेतृत्व में निकली तिरंगा यात्रा : पतारा। पतारा विकासखंड के ब्लॉक प्रमुख कोमल सिंह सेंगर व प्रमुख पति अजय सिंह सेंगर के नेतृत्व में तिरंगा यात्रा निकाली गई। यहां पर मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा कानपुर ग्रामीण जिला अध्यक्ष उपेंद्र पासवान मौजूद रहे। यहां पर पतारा विकासखंड के सभी क्षेत्र पंचायत सदस्य व ग्राम प्रधान व भारी संख्या में भाजपाई मौजूद रहे। तिरंगा यात्रा में भारत माता की जय के नारे गूंजते रहे। यहां पर मंडल प्रभारी ओम जी तिवारी, शोभित सेंगर, हिमांशु गुप्ता, हिमांशु सोनी, सुरेश सोनी, पुनीत दिक्षित सहित अन्य कार्यकर्ता गण मौजूद रहे।

बिल्हौर में भाजपा कार्यकर्ताओं ने निकाली विशाल तिरंगा यात्रा : बिल्हौर । भारतीय जनता पार्टी के बिल्हौर नगर मंडल ने मंगलवार को एक विशाल तिरंगा यात्रा का आयोजन किया। यह यात्रा बाबा कोतवालेश्वर मंदिर से शुरू होकर बिल्हौर ब्लॉक तक पैदल निकाली गई। तिरंगा यात्रा के दौरान राष्ट्र भक्ति के नारे से पूरा बिल्हौर गूंजता रहा। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व जिला अध्यक्ष रामचरण कटियार और विशिष्ट अतिथि के रूप में भाजपा के जिला महामंत्री डॉ. राजेंद्र कटियार एवं मंडल प्रभारी दीप्ति सिंह उपस्थित रहीं। नगर मंडल अध्यक्ष सौरभ शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित इस यात्रा में बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता और वरिष्ठ नेता शामिल हुए। इस अवसर पर नगर महामंत्री रामकुमार, कार्यक्रम संयोजक रामप्रकाश शर्मा, उपाध्यक्ष स्वप्नेश तिवारी, युवा मोर्चा मंत्री मोंटी अवस्थी और अमित तिवारी सहित कई पदाधिकारी मौजूद थे। इनके अलावा, उपाध्यक्ष शिवम द्विवेदी, विशाल कश्यप, शिवा कांत तिवारी, विमलेश कटियार, सत्येंद्र वर्मा, ऋषि गुप्ता, निमित गुप्ता, गौरव शर्मा, नरेंद्र मिश्रा, डॉ. मेहराज और समस्त मंडल के पदाधिकारी व बूथ अध्यक्षों ने भी कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उत्तरीपुरा कस्बे में निकाली गई तिरंगा यात्रा : बिल्हौर। बिल्हौर के उत्तरीपुरा मंडल में भी भारतीय जनता पार्टी के तमाम पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने तिरंगा यात्रा निकाली। इस दौरान सारे कार्यकर्ता हाथों में तिरंगा लेकर लोगों ने भारत माता की जय के नारे लगाते हुए घूमते रहे। इस मौके पर मंडल अध्यक्ष नील कमल पाल, नीलकमल सिंह चौहान, अंशुल वाजपेई आदि मौजूद रहे।

गंगा में डूबने से चेयरमैन पुत्र की मौत

उन्नाव जनपद के फतेहपुर चौरासी के चेयरमैन का पुत्र है युवक, दो युवकों को गोताखोरों ने बचाया

संवाददाता शिवराजपुर

अमृत विचार। उन्नाव जनपद के फतेहपुर चौरासी के चेयरमैन के दो पुत्र अपने दोस्त व परिवार के अन्य लोगों के साथ मंगलवार दोपहर को सरैया घाट में स्नान करने आए थे। स्नान के दौरान चेयरमैन का बड़ा पुत्र गहराई में चला गया और डूबने लगा। उसको बचाने में उसका छोटा भाई एक अन्य युवक भी डूबने लगे। तभी शोर गुल सुनकर आसपास मौजूद गोताखोर तुरंत नदी में कूद गये और काफी मशक्कत के बाद तीनों को बाहर निकाल लाये। वहां पर मौजूद लोग सभी को सीएचसी शिवराजपुर लेकर पहुंचे। वहां पर मौजूद डॉक्टरों ने चेयरमैन के बड़े पुत्र को मृत घोषित कर दिया। उन्नाव जनपद के फतेहपुर चौरासी निवासी चेयरमैन मिथिलेश जायसवाल के पुत्र हर्षित उम्र 19 वर्ष और मयंक उम्र 18 वर्ष अपने दोस्त पंकज दीक्षित उम्र 20 वर्ष और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ खेरेश्वर के सरैया घाट स्नान करने के लिये आए थे। स्नान के दौरान हर्षित गहरे जल में चला गया और जोर-जोर से चिल्लाने लगा पास ही स्नान कर रहे हर्षित का भाई मयंक और दोस्त राघव उसे बचाने के लिये आग बढ़े। इसके चलते वे भी गहरे पानी में पहुंच गये और वह भी डूबने लगे। तभी शोर गुल सुनकर आसपास मौजूद गोताखोरों ने तुरंत गंगा में छलांग लगा दी। कड़ी मशक्कत के बाद वे तीनों को बाहर निकाल लाये । उसके बाद उन तीनों को सीएचसी शिवराजपुर ले जाया गया। वहां पर मौजूद डॉक्टरों ने जांच पड़ताल के बाद हर्षित को मृत घोषित कर दिया। वहीं राघव को गंभीर अवस्था में कानपुर रेफर कर दिया, जहां पर उसका इलाज जारी है। वहीं हर्षित की मौत की जानकारी मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया।

हर्षित।

विश्वनाथ और आध्या।

सीएचसी पहुंच कर पीड़ित से जानकारी लेते अधिकारी। अमृत विचार

यमुना में नहाते समय भाई-बहन की डूबकर हुई मौत: घाटमपुर। घाटमपुर में मंगलवार को कटरी गांव में यमुना नदी में नहाते समय सगे भाई-बहन की डूबकर दर्दनाक मौत हो गई। घटना के बाद गांव में मातम छा गया। सूचना पर पहुंचे एसडीएम अविचल प्रताप सिंह ने परिजनों से मुलाकात कर उन्हें ढांढस बंधाया। हादसे के बाद वहां मौजूद लोगों ने शोर मचाया और स्थानीय गोताखोरों की मदद से दोनों को पानी से बाहर निकाला। आनन-फानन में उन्हें सीएचसी घाटमपुर ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया।

रेउना थाना क्षेत्र के अंतर्गत कटरी गांव में कानपुर देहात के जुनिया गांव निवासी भूपेंद्र सिंह लखीमपुर की एक शुगर मिल में काम करते हैं। आठ अगस्त को वह पत्नी व बच्चों के साथ अपने गांव आए थे। मंगलवार की सुबह भूपेंद्र सिंह अपने परिवार के साथ यमुना नदी में स्नान करने पहुंचे थे। इस दौरान उनकी 11 वर्षीय बेटी आध्या और 6 वर्षीय बेटा विश्वनाथ नहाने लगे। नहाते समय विश्वनाथ का पैर फिसल गया और वह गहरे पानी में चला गया। उसे बचाने के प्रयास में आध्या ने भी छलांग लगा दी, लेकिन तेज धारा में बहते हुए दोनों पानी में डूब गए। तभी लोगों ने शोर मचाया तो शोर सुनकर वहां पर मौजूद गोताखोरों ने यमुना में छलांग लगा दी और कड़ी मशक्कत के बाद दोनों को बाहर निकाला और सीएचसी घाटमपुर ले गये। वहां पर मौजूद डॉक्टरों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। वहीं घटना की जानकारी मिलने पर एसडीएम अविचल प्रताप सिंह भी सीएचसी पहुंचे और परिजनों को हरसंभव मदद का भरोसा दिलाया।

घाटमपुर एसीपी कृष्णकांत यादव ने बताया कि सूचना मिली थी, दोनो के शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा जा रहा है। रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

ब्लॉक प्रमुख की अगुवाई में कस्बे में तिरंगा यात्रा निकालते लोग। अमृत विचार

ब्लॉक प्रमुख की अगुवाई में निकाली गई तिरंगा यात्रा

संवाददाता,चौबपुर

अमृत विचार। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर निकाली जा रही तिरंगा यात्रा की कड़ी में मंगलवार को कस्बे में विशाल तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। ब्लॉक प्रमुख राजेश शुक्ला की अगुवाई में निकली इस यात्रा में लोगों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इस दौरान हाथों में तिरंगा लिए लोगों ने जमकर देशभक्ति के नारे लगाये।

मंगलवार दोपहर चौबपुर ब्लॉक प्रमुख राजेश शुक्ला के नेतृत्व में बंदी माता तिराहे से तिरंगा यात्रा निकाली गई। इस दौरान बड़ी संख्या में मौजूद लोग हाथों में तिरंगा लिए भारत माता की जय, वंदेमातरम के नारे लगा रहे थे। कस्बे से गुजरी यात्रा का शहीद नित्यानंद गुप्ता स्मारक पर जाकर समापन हुआ। इस दौरान अपने संक्षिप्त संबोधन में ब्लॉक प्रमुख ने कहा कि तिरंगा हमारी शान है,जो कि हम सभी को देश की एकता,अखंडता व बलिदान की याद दिलाता है। इस मौके पर निवर्तमान मंडल अध्यक्ष अमिताभ त्रिपाठी, तनू पांडे, धर्मेंद्र पाल,नवनीत तिवारी व अरविंद पाल समेत बड़ी संख्या में लोग शामिल रहे।

शैल माता मंदिर का पूजन करते आयोजक। अमृत विचार

शैल कुमारी माता मंदिर का हुआ जीर्णोद्धार

घाटमपुर। घाटमपुर के कंठीपुर शैल कुमारी माता के मंदिर का जीर्णोद्धार बाजपेई एजेंसी के सतीश बाजपेई के द्वारा कराया गया । इस दौरान यहां पर हवन व भंडारे का आयोजन किया गया। राधा कृष्ण व शिव तांडव आदि झाकियां भी निकली गईं। इस दौरान यहां पर ध्रुव बाजपेई ,रुद्र बाजपेई , नन्हा प्रसाद पासवान, रामगोपाल पासवान, बड़का पासवान, ऋषभ, गजेंद्र, चेतराम, सुशील पासवान आदि लोग शामिल रहे।

जमीन खाली कराने की मांग

बिल्हौर। बिल्हौर तहसील के नामिका राजस्व अधिवक्ता शशांक कुमार मिश्रा ने बिल्हौर तहसील के उप जिलाधिकारी को पत्र लिखकर ग्राम सभा की जमीन खाली कराए जाने की मांग की है। तहसील क्षेत्र में बड़ी संख्या में खाली पड़ी संरक्षित भूमि (खलिहान ,खाद के गड्ढे,खेल के मैदान व ऊसर ,बंजर) भूमि पर बड़ी संख्या में लोग कब्जा किए हुए हैं। जिसमें ककवन ग्राम पंचायत प्रमुख रूप से है। कई सरकारी भूमि पर लोगों ने दबंगई के बल पर फसल बो रखी है, जिसको लेकर नामिका अधिवक्ता द्वारा सरकारी भूमि खाली कराए जाने की मांग की गई है।

दीवार ढहने से महिला की मलवे में दब कर मौत

संवाददाता घाटमपुर

अमृत विचार । घाटमपुर में बारिश थमने के बाद जर्जर व कच्चे मकानों के गिरने का शुरू हुआ सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। मंगलवार की सुबह पति के साथ छप्पर हटाने के दौरान गिरी दीवार के मलवे में एक महिला दब गई। चीख पुकार के बीच किसी तरह मलवे से बाहर निकाल कर महिला को इलाज के लिए सीएचसी लाया गया। जहां से उसकी गम्भीर हालत देखते हुए कानपुर के लिये रेफर किया गया। वहां पर उपचार के दौरान उसकी मौत हो गयी।

बेंदा गांव निवासी विजय कुमार खेती किसानी करते हैं। उन्होंने बताया कि घर पर पक्की दीवारे हैं। ऊपर छप्पर डाल रखा था। छत डलवाने के लिए मंगलवार सुबह वह छप्पर हटा रहे थे। तभी उनकी पत्नी सुधा 35 भी साथ में काम करने लगी। इसी दौरान मकान की पक्की दीवार ढह गई। पास में खड़ी पत्नी मलवे में दब गईं। जिन्हें विजय ने गांव के लोगों की मदद से किसी तरह मलवे से बाहर निकालकर इलाज के लिए सीएचसी लेकर आए। जहां से प्राथमिक उपचार के बाद सुधा को इलाज के लिए कानपुर हैलट अस्पताल रेफर किया गया। वहां पर उपचार के दौरान सुधा की मौत हो गई। सुधा की मौत से तीन बच्चों के सिर से मां का साया उठ गया।

ट्रक की चपेट में आकर आईटीआईकर्मी घायल

बिल्हौर । बिल्हौर कस्बे में एक हमलावर सांड़ से बचने के प्रयास में राजकीय आईटीआई का एक कर्मचारी ट्रक की चपेट में आ गया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे प्राथमिक उपचार के बाद कानपुर के हैलट अस्पताल रेफर किया गया है। वहां पर उसका इलाज जारी है चौबेपुर थाना क्षेत्र के पनऊ पुरवा गांव के रहने वाले राहुल त्रिपाठी (पुत्र बाबूराम त्रिपाठी) बिल्हौर के सांभी गांव स्थित राजकीय आईटीआई में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी हैं। मंगलवार दोपहर ड्यूटी खत्म होने के बाद जब वे घर जा रहे थे, तभी बिल्हौर-ककवन मार्ग पर तहसील गेट के सामने एक अन्ना सांड़ ने उन पर हमला कर दिया। सांड़ से बचने की कोशिश में राहुल त्रिपाठी अचानक सड़क पर आ गए और ककवन की ओर जा रहे एक ट्रक की चपेट में आ गए। हादसे में वे गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना की सूचना मिलने पर एसडीएम संजीव दीक्षित तुरंत मौके पर पहुंचे। उन्होंने घायल को ई-रिक्शा से सीएचसी भिजवाया और फोन पर सीएचसी अधीक्षक को आवश्यक निर्देश दिए। सीएचसी में प्राथमिक उपचार के बाद राहुल को कानपुर हैलट अस्पताल रेफर कर दिया गया। वहां पर उसका इलाज जारी है। युवक कथित तौर पर शराब के नशे में था और सड़क किनारे खड़े सांड़ के सींग को पकड़ने की कोशिश कर रहा था, जिसके बाद सांड़ हमलावर हो गया। सांड़ से बचने के प्रयास में ही यह हादसा हुआ।

अव्यवस्था

कमालपुर ग्राम पंचायत में की वृहद गौशाला का मामला

गौशाला की बदहाली देखकर भड़का बजरंग दल

संवाददाता बिल्हौर बिल्हौर/ शिवराजपुर

अमृत विचार। बिल्हौर तहसील क्षेत्र के शिवराजपुर विकासखंड स्थित कमालपुर ग्राम पंचायत में जिला प्रशासन की ओर से वृहद गौशाला संचालित हो रही है। यहां पर लगभग 400 गोवंश मौजूद हैं । लेकिन गौशाला के संचालन में घोर लापरवाही की जा रही है।

गौशाला की बदहाली की जानकारी मिलते ही मंगलवार को राष्ट्रीय बजरंग दल महामंत्री अरविंद सेंगर मौके पर पहुंच गए। इस दौरान तमाम बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने गोवंशों की हालत देखकर जमकर नारेबाजी की और मौके से ही जिले के तमाम अधिकारियों को गौशाला के हालात के बारे में बताया। यहां पर कई गोवंश भूख प्यास से तड़प रहे हैं। यहां पर तीन दिनों में अब तक कुल आधा दर्जन गोवंशों की मौत हो चुकी है और एक दर्जन से अधिक गोवंश तड़पते नजर आए। अधिकारियों को मामले की जानकारी मिलते ही हड़कंप मच गया । मंगलवार की शाम मौके पर उप जिला अधिकारी संजीव कुमार दीक्षित भी पहुंच गए और सभी घायल गोवंशों को उपचार के लिए मौके पर डॉक्टरों की टीम लगाई इसके साथ ही तमाम चारे के मानक पर सवाल उठाते हुए गायों को हरा चारा उपलब्ध कराने के निर्देश भी ग्राम पंचायत सचिव को दिए।

गौशाला का निरीक्षण करते अधिकारी और बजरंग दल के कार्यकर्ता। अमृत विचार

डीएम ने सीडीओ को दिये निर्देश

घाटमपुर। शाम चार बजे से बिल्हौर उप जिला अधिकारी संजीव कुमार दीक्षित गौशाला में कैंप किए हुए हैं । गौशाला की साफ सफाई से लेकर बीमार गोवंशों के उपचार तक सभी व्यवस्थाओं को स्वयं देख रहे हैं। रात 9 :00 बजे तक उप जिला अधिकारी संजय दीक्षित ,मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी आईडीएन चतुर्वेदी और खंड विकास अधिकारी बलराम के साथ तमाम तहसील का अमला गौशाला में जुटा रहा। वहीं कानपुर जिला अधिकारी की ओर से सीडीओ दीक्षा जैन को नजर बनाए रखने के निर्देश दिए गए हैं।

मामले मे कानपुर जिलाधिकारी और उपजिलाधिकारी को अवगत कराया है ,गौशाला की हालत बहुत खराब है एक दर्जन से अधिक गोवंश मौत से तड़प रहे है। प्रशासन को सुधार के लिये समय दिया गया है। अगर समय पर निराकरण नहीं होता है तो बजरंग दल के लोग प्रदर्शन करेंगे

--अरविंद सेंगर (बजरंग दल)

पूरे मामले में खंड विकास अधिकारी और पशु चिकित्सक की घोर लापरवाही सामने आई है पंचायत सचिव को तीन दिन पूर्व निलंबित किया गया था लेकिन इसके बावजूद गौशाला की स्थिति नहीं सुधरी इसके लिए खंड विकास अधिकारी जिम्मेदार है जिला अधिकारी को मामले की जानकारी दीजाएगी। **- आलोक कुमार (जिला विकास अधिकारी कानपुर**

सपाइयों ने लगाई पीडीए चौपाल

संवाददाता ककवन

अमृत विचार। समाजवादी पार्टी के विधानसभा अध्यक्ष विनय यादव ने बिल्हौर के ब्लॉक ककवन के गांव कसिंगवा में एक पीडीए चौपाल का आयोजन किया। यह चौपाल समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की अनुमति और प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल के निर्देश पर आयोजित की गई। इस दौरान यहां पर तमाम सपा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

विधानसभा अध्यक्ष विनय यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी की नीतियों को लोगों तक पहुंचाकर पार्टी को मजबूत किया जाएगा। उन्होंने कहा, हमें पाठशाला चाहिए, मधुशाला नहीं। उनका आरोप था कि सरकार स्कूल बंद करके शराब की दुकानें खोल रही है और गरीबों को शिक्षित नहीं करना चाहती, बल्कि नशे की तरफ धकेल रही है। विनय यादव ने 2027 के चुनाव को 'आखिरी चुनाव' बताते हुए सभी से एकजुट होने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि बाबासाहेब के संविधान को बचाने के लिए पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यक समाज को एक होना पड़ेगा और 2027 में अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बनाना होगा। उन्होंने यह भी दावा किया कि पूरे उत्तर प्रदेश का लोधी समाज अखिलेश यादव के साथ है। चौपाल में डॉ. विजय यादव, मो. अनस, दया राम गौतम, राम नारायण गौतम, रामप्रकाश प्रजापति, और अन्य कई समाजवादी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

पीडीए चौपाल में मौजूद सपा कार्यकर्ता। अमृत विचार

www.amritvichar.com

अमृत विचार

कानपुर महानगर

कानपुर, बुधवार, 13 अगस्त 2025

सुविचार

कभी-कभी सफलता के लिए यह जरूरी नहीं कि शुरुआत अच्छी ही हो। बस जरूरी है तो उस काम के प्रति खुद का समर्पण।

-लता मंगेशकर

कानपुर के प्रमुख समाचार

- अस्पताल पहुंचने से पहले गड्ढे बढ़ा रहे मरीजों का दर्द-II
- आजादी के उत्सव में देश विभाजन का दर्द न भूलें- III
- अब लोकसभा में गूंजा ईएसआईसी अस्पताल- IV

अनुराग हेल्थ केयर प्रा.लि.
•ICU •NICU DIALYSIS
• MODULAR OT
दूरबीन विधि से आपरेशन अब कम खर्च में
सीजीएचएस, मेडीक्लेम व आयुष्मान कार्ड मान्य
117/क्यू/702, शारदा नगर, कानपुर
9889538233, 7880306999

सिटी ब्रीफ

44 दिव्यांग छात्र-छात्राओं को मिली नौकरी

कानपुर। प्रादेशिक सेवायोजन कार्यालय परिसर में दिव्यांगजनों के लिए विशेष रोजगार मेले का आयोजन किया गया। पांडु नगर स्थित आईटीआई के प्रधानाचार्य हरीश मिश्रा ने बताया कि रोजगार मेले में 10 कंपनियों में आठ हजार से 16 हजार के मासिक वेतन पर कानपुर, लखनऊ, गुरुग्राम, नोएडा आदि शहरों में विभिन्न पदों के लिए साक्षात्कार लिए। मेले में 76 दिव्यांगजन छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया, जिसमे से 44 छात्र-छात्राओं को रोजगार के लिए शार्टलिस्ट व चयनित किया गया। इस दौरान जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी विनय उत्तम, असि. कमिश्नर उद्योग रोशन अम्बेडकर, सहायक निदेशक (सेवायोजन) उज्जवल कुमार सिंह, जिला समन्वयक संदीप, निधि वर्मा समेत आदि अधिकारी रहे।

परीक्षाफल की हुई जांच

कानपुर। विश्वविद्यालय द्वारा परीक्षा परिणाम में रिजल्ट डिटेड (आरडी) के क्रम में परीक्षा नियंत्रक की अध्यक्षता में गठित समिति की बैठक की, जिसमें सिस्टम मैनेजर व पीएमयू विभाग द्वारा गहनता से विभिन्न महाविद्यालयों के 2000 से अधिक परीक्षार्थियों के संबंधित परीक्षाफल का परीक्षण किया। इसमें स्पष्ट हुआ है कि समर्थ पोर्टल के माध्यम से विश्वविद्यालय द्वारा निर्गत परीक्षा परिणाम सही है।

अखिलेश दुबे पर दो धाराएं बढ़ाईं

कानपुर। अखिलेश दुबे के खिलाफ बर्रा थाने में दर्ज 50 लाख रुपये की रंगदारी मांगने के प्रकरण में विवेचक नौबस्ता थाना प्रभारी ने आरोपियों पर दो और धाराएं बढ़ाई हैं। जिसमें झूठे मुकदमे में फंसाने की धमकी देकर जबरन वसूली और आपराधिक षड्यंत्र की धाराएं हैं। अब बढ़ी धाराओं के साथ ही विवेचक अखिलेश दुबे को रिमांड पर लेने के लिए कोर्ट में अर्जी देंगे। बर्रा थाना में भाजपा नेता रवि सतीजा ने अधिवक्ता अखिलेश दुबे, पार्टनर लवी मिश्रा, निशा कुमार, गीता कुमारी, विमल यादव, अभिषेक बाजपेई, शैलेंद्र यादव उर्फ टोनू यादव के खिलाफ दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज कराया था।

मुंह से सांस दी, सीना पंपकर बचाया

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। सीपीआर की जानकारी सभी व्यक्ति को होना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे हार्ट अटैक या शॉक में आए व्यक्ति की जान बचाई जा सकती है। पुलिस लाइन स्थित अस्पताल में बीते माह हुई सीपीआर कार्यशाला का यह परिणाम मिला कि पुलिस लाइन मैदान में करंट की चपेट में आए आरक्षी को फार्मासिस्ट संजय भदौरिया ने मुंह से सांस दी, 160 बार सीना पंपकर उसकी जान बचाई।

मेरठ निवासी प्रिंस वर्ष 2022 बैच का आरक्षी है औ उसकी तैनाती कानपुर पुलिस लाइन में है। मंगलवार को वह हैलीपैड के पास मशीन की मदद से घास काट रहा था, तभी करंट की चपेट में आ गया। यह देख आसपास मौजूद पुलिस कर्मी आरक्षी प्रिंस को लेकर पुलिस अस्पताल पहुंचे, यहां पर फार्मासिस्ट संजय भदौरिया ने अपने मुंह से आरक्षी को काफी समय तक सांस दी और करीब तीन मिनट में 160 बार उसका सीना पंप किया, जिसके बाद आरक्षी की धड़कन वापस लौटी। हल्का होश आने के बाद फार्मासिस्ट स्टाफ के साथ आरक्षी को लेकर उर्सला अस्पताल गए, जहां भर्ती कराकर इलाज शुरू कराया। फार्मासिस्ट संजय भदौरिया ने बताया कि बीते माह सीपीआर की ट्रेनिंग पुलिस अस्पताल में पुलिस कर्मियों को दी गई थी। सीपीआर की ट्रेनिंग का परिणाम ये है कि आरक्षी प्रिंस की जान बची। बताया कि सीपीआर हृदय गति रुकने या सांस लेने में समस्या होने पर तत्काल मदद प्रदान करता है, जिससे व्यक्ति के बचने की संभावना बढ़ जाती है। मस्तिष्क को ऑक्सीजन की आपूर्ति बनाए रखने में मदद मिलती है।

सीपीआर एक सरल, लेकिन प्रभावी तकनीक

- जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के एनेस्थीसिया विभाग में डॉ. अनिल वर्मा के मुताबिक सीपीआर चिकित्सा पेशेवरों के आने तक रोगी को स्थिर रखने में मदद करता है, जिससे उन्हें आवश्यक उपचार प्रदान करने के लिए समय मिल जाता है। सीपीआर सीखना एक शक्तिशाली कौशल है, जो आपको आपात स्थिति में दूसरों की मदद करने के लिए आत्मविश्वास प्रदान करता है। सीपीआर एक सरल, लेकिन प्रभावी तकनीक है जिसे कोई भी सीख सकता है।

सीओ, विकास दुबे के मामा और वकील की शिकायत

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- पीड़ित ने पुलिस कमिश्नर से की शिकायत, चार करोड़ रुपये हड़पने का आरोप
- आरोप लगाया कि 2009 में खरीदी जमीन का 2022 में निरस्त कराया एग्रीमेंट

अमृत विचार। शहर में तैनात रह चुके एक तेज तर्रार इंस्पेक्टर (मौजूदा सीओ) व अधिवक्ता पर जमीन के मामले में रंगदारी मांगने का आरोप लगा है। पीड़ित ने पुलिस कमिश्नर से शिकायत की तो एसआईटी को जांच सौंपी गई है। पीड़ित ने एसआईटी को जरूरी दस्तावेज सौंपे हैं। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि जांच के बाद रिपोर्ट दर्ज की जाएगी।

रायपुरवा के तेजाब मिल कैंपस में रहने वाले प्रवीण कुमार शुक्ला उर्फ मनोहर ने पुलिस कमिश्नर से दो दिन पहले शिकायत की थी। उन्होंने बताया कि मुरादाबाद के हरिओम गुप्ता और नवाबगंज के त्रिपुणानंद तिवारी के साथ मिलकर 2009 में मेहरबान सिंह पुरवा में 7.227 हेक्टेयर जमीन ली थी। जमीन का एग्रीमेंट कराया था। एग्रीमेंट में सभी बराबर के हिस्सेदार थे। इसके बाद विकास दुबे के मामा सुरेश अग्निहोत्री व उसके साथी अधिवक्ता शशांक चंदेल और इंस्पेक्टर ऋषिकांत शुक्ला के चाचा त्रिपुणानंद, हरिओम गुप्ता ने 12 जुलाई 2022 को उन्हें रजिस्ट्री कार्यालय बुलाया। वहां उनसे कहा गया कि अपने हिस्से का पैसा ले लो और एग्रीमेंट खारिज करा दो। एग्रीमेंट खारिज कराने के आवेदन पर हस्ताक्षर लिया, लेकिन पैसा नहीं दिया।

एग्रीमेंट खारिज होने के रुपयों की मांग की तो इंस्पेक्टर ऋषिकांत और उक्त दो व्यक्तियों के साथ मुझे कार में बैठाकर गंगा बैराज पहुंचे। पूछने पर बताया कि पैसा वहीं चलकर देंगे। गंगा बैराज पहुंचे तो वहां सभी ने गाली-गलौज कर मारापीटा। कहा एक भी पैसा नहीं देंगे। शशांक चंदेल ने सीने पर रिवाल्वर रख दी। कहा, अगर पैसा मांगा, किसी से कोई शिकायत की तो झूठे मुकदमे में फंसाकर इनकाउंटर करवा दूंगा। इसके बाद जान से मारने की धमकी देकर रंगदारी मांगी। मारपीट व धमकी से वह डर गया था। आरोप है कि सभी ने मिलकर जमीन का एग्रीमेंट खारिज कराया, रंगदारी मांगी और चार करोड़ रुपये की धोखाधड़ी कर ली। ऋषिकांत शुक्ला के चाचा त्रिपुणानंद तिवारी एग्रीमेंट में थे। इस घटना के बाद ऋषिकांत ने पूर्व एग्रीमेंट को खारिज कराकर अपने परिजनों को हिस्सेदार बनाया। पीड़ित के अनुसार अधिवक्ता शशांक चंदेल काकादेव में भू माफिया के नाम से चर्चित है। सुरेश अग्निहोत्री पूर्व गैंगस्टर विकास दुबे का सगा मामा है। जिनसे उसे जान का खतरा है।

> जमीन का एग्रीमेंट निरस्त कराने व रंगदारी मांगने की शिकायत मिली है। वादी के बयान दर्ज करने के साथ संबंधित दस्तावेज मांगे जा रहे हैं। मामले की जांच शुरू की गई है।
>
> -एसएम कासिम आबिदी, डीसीपी क्राइम

सीईटीपी निर्माण में लापरवाही 40 करोड़ का जुर्माना लगाया

डीएम ने जाजमऊ सीईटीपी के निर्माण कार्य की प्रगति को लेकर की समीक्षा बैठक

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

93 प्रतिशत कार्य पूरा होने का दावा किया गया

454 करोड़ रुपये प्लांट में खर्च किए गए

350 टेनरियों का दूषित पानी होना है शोधित

अमृत विचार। जाजमऊ टेनरी क्लस्टर के लिये बने 20 एमएलडी कॉमन इफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट (सीईटीपी) का संचालन सुचारू नहीं हो पा रहा है। इसकी वजह है कि सीईटीपी के कई कार्य आज भी अधूरे हैं। मंगलवार को जब जिलाधिकारी जितेन्द्र प्रताप सिंह ने सीईटीपी के निर्माण कार्य की समीक्षा तो इसकी पोल खुल गई। बैठक में वेटेक वबाग कंपनी के सीईओ शैलेश कुमार समेत प्रोजेक्ट मैनेजर देवा आनंद बैठक से गैर हाजिर रहे। समीक्षा बैठक में पाया गया कि पिछले एक महीने से 207 मीटर पाइपलाइन ही नहीं डल पाई इसपर जिलाधिकारी ने नाराजगी जताई और निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष कार्य धीमा पाए जाए पर कंपनी पर 40 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया साथ ही इसकी तत्काल वसूली के भी निर्देश दिए।

जिलाधिकारी ने समीक्षा बैठक में कहा कि निर्धारित समय सीमा एवं एनएमसीजी की ओर से दी गई टाइम लाइन के बावजूद कार्य पूर्ण न करना घोर लापरवाही है। जिलाधिकारी ने वेटेक वबाग कंपनी का दायित्व तय करने के निर्देश दिए। बैठक में यह तथ्य भी सामने आया कि रैमकी कंपनी द्वारा लगभग जून माह से स्लज का उठान नहीं किया जा रहा है। इस पर जिलाधिकारी ने सचिव जेटेक को निर्देश दिया कि कंपनी को कारण बताओ नोटिस जारी किया जाए और चेतावनी दी जाए कि भविष्य में ऐसी स्थिति दोबारा न हो। जिलाधिकारी ने वेटेक वबाग कंपनी एवं स्लज प्रबंधन में की जा रही लापरवाही पर कड़ी फटकार लगाते हुए कहा कि प्रोटोकॉल एवं पर्यावरणीय मानकों के अनुसार ही कार्य किया जाए। समीक्षा बैठक में बताया गया कि इस प्रोजेक्ट की मूल समय-सीमा 31 अक्टूबर 2024 निर्धारित थी जबकि अक्टूबर 2024 तक मात्र 90 प्रतिशत कार्य पूर्ण हुआ था जो अब तक 93 प्रतिशत तक पहुंच सका है। बैठक में प्रोजेक्ट मैनेजर ट्वीस नाजिर हुसैन, आर.सी.एम. सुरेश, बिनू, प्लांट सुपर वाइजर कृष्णा, समेत सचिव जेटेक नादरी उपस्थित रहे।

2019

में शिलान्यास किया गया पर आज तक कार्य पूरा नहीं

- कंपनी के सीईओ, प्रोजेक्ट मैनेजर गैर हाजिर होने पर जिलाधिकारी ने लगाई फटकार

क्षमता नहीं बढ़ने से गंगा में गिरता टेनरी वेस्टेज

टेनरियों की संख्या बढ़ने के बावजूद ट्रीटमेंट प्लांट की क्षमता नहीं बढ़ने व पूर्ण क्षमता से संचालन न होने की वजह से प्रदूषित पानी अक्सर गंगा में गिरता है। इससे निजात पाने के लिए जटेटा का 20 एमएलडी प्लांट बनाया गया है।

टेनरियों का पानी होना है शोधित

- जाजमऊ में बने 36 एमएलडी सीईटीपी से जटेटा के 20 एमएलडी सीईटीपी में टेनरी का पानी डायवर्ट करने की प्रक्रिया पहले ही पूरी हो चुकी है। 350 टेनरियों का 10 एमएलडी अशोधित पानी नये सीईटीपी से शोधित करने के लिए भेजा जा रहा है, लेकिन कार्य अधूरे होने की वजह से समस्या बढ़ रही है।

शिलान्यास के 6 साल बीत गए

- जाजमऊ में 454 करोड़ से निर्मित सीईटीपी का शिलान्यास प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मार्च 2019 में किया था। प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड लखनऊ ने जल निगम (नगरीय) जटेटा को 20 एमएलडी प्लांट को शुरू करने के साथ पुराने 36 एमएलडी सीईटीपी से संबद्ध टेनरी उत्पादन शोधन के लिए 9 एमएलडी प्लांट को बंद करने के निर्देश दिये थे। वहीं, नए सीईटीपी का संचालन पूर्ण क्षमता से 6 साल बीतने के बाद भी शुरू नहीं हो पाया है।

आटो में छेड़छाड़ कूदी महिला घायल

कल्याणपुर। पनकी इंडस्ट्रियल एरिया से बर्रा बाईपास जाने के लिए ऑटो में बैठी महिला से ऑटो चालक व साथ में बैठे दो युवकों ने छेड़छाड़ शुरू कर दी। जिस पर महिला चलती ऑटो से कूद गई और घायल हो गई। मौके पर पहुंची पुलिस घायल महिला को निजी अस्पताल ले गई। पुलिस ऑटो चालक की तलाश में जुट गई है।

कर्रही निवासी एक महिला एलएमएल चौराहे के पास स्थित अगरबत्ती फैक्ट्री में काम करती है। महिला के मुताबिक मंगलवार शाम वह फैक्ट्री से घर जाने के लिए ऑटो में बैठी। जिसमें पहले से दो युवक सवार थे। कुछ दूर चलने के बाद ऑटो चालक व पीछे बैठे युवकों ने उसके साथ छेड़छाड़ शुरू कर दी। इतना ही नहीं विरोध करने पर पीछे बैठे युवक नेन चालक से ऑटो को किसी सुनसान जगह ले जाने की बात करने लगे। जिससे घबरा कर वह चलती ऑटो से नीचे कूद गई। गिरने से वह घायल हो गई। घायल महिला ने अपनी मां को फोन कर मामले की जानकारी दी। इसके बाद पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस पहुंची और घायल महिला को अस्पताल पहुंचाया। पनकी मानवेंद्र सिंह ने बताया कि पीड़ित महिला का मेडिकल करा कार्रवाई की जा रही जा रही है। पुलिस की दो टीमें आरोपितों की तलाश में लगाई गई हैं।

खड़ी कार में लगी आग

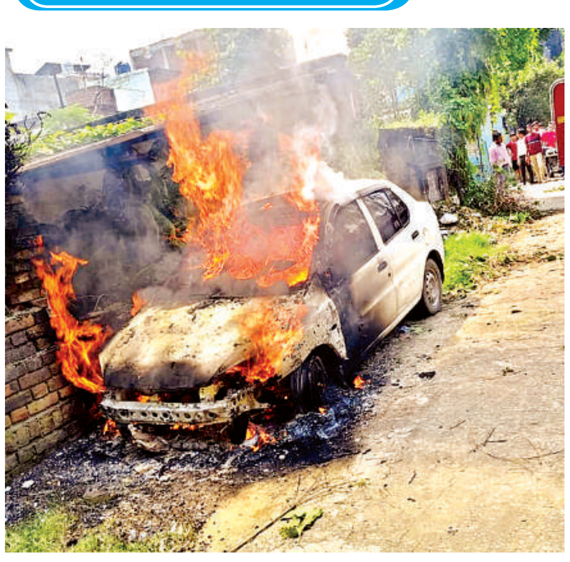

चकेरी थाना क्षेत्र के अंतर्गत एमडीएम पब्लिक स्कूल के पास एक खड़ी कार में आग लग गई। दमकल मिनी कंट्रोल को सूचना मिली तो 1 फायर यूनिट जाजमऊ से भेजी गई। दमकल ने कुछ देर में आग बुझा ली। घटनास्थल पर कोई जनहानि नहीं हुई। • अमृत विचार

पांच दिन से लापता युवक का शव नहर में मिला

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- छुट्टियों पर पनकी गंगागंज घर आया था, छह अगस्त से था लापता

अमृत विचार। दोस्तों से मुलाकात की बात कहकर घर से निकले युवक का शव गुजैनी नहर में उतराता मिला। युवक की तलाश में जुटे परिजनों को पांच दिन बाद शव मिलने की जानकारी हुई। शिनाख्त के बाद परिजनों में कोहराम मच गया। कुछ दिन पहले ही युवक छुट्टियों पर घर आया था।

शिववीर सिंह।

पनकी के गंगागंज निवासी रामनाथ सिंह का 38 वर्षीय बेटा शिववीर सिंह सूरत स्थित कंपनी में जूनियर इंजीनियर था। शिववीर की पत्नी पिंकी की कई साल पहले मौत हो चुकी है। परिवार में बेटा आयुष्मान व बेटी हैं, जो गंगागंज में बाबा-दादी के साथ रहते हैं। आयुष्मान ने बताया कि पिता कुछ दिन पहले ही छुट्टियों पर घर आए थे। छह अगस्त को दोस्तों से मिलने की बात कहकर दोपहर करीब ढाई बजे घर से निकले थे। देर रात तक नहीं लौटे तो पता किया गया, लेकिन कोई जानकारी नहीं मिली। इस पर घरवाले उनकी तलाश में जुट गए। गुजैनी थाने में गुमशुदगी दर्ज कराई। पांचवें दिन सोमवार को गुजैनी पुलिस ने सूचना दी कि गुजैनी नहर में शव मिला है। खबर पाकर परिजन मोर्चरी पहुंचे और शव की शिनाख्त की। घरवालों के अनुसार किसी से कोई रंजिश नहीं है। शिववीर शराब के लती थे, आशंका जताई जा रही है कि हो सकता है नशे में नहर में गिर गए हों।

इलाज में लापरवाही, रीजेंसी के दो डॉक्टरों की जांच के लिए समिति बनी

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- आरोप, हॉस्पिटल ने 17 दिन में वसूले 18.50 लाख, मरीज की मौत

अमृत विचार। रीजेंसी हॉस्पिटल में मरीज की मौत के बाद अधिवक्ता ने आईजीआरएस पर हॉस्पिटल प्रशासन की शिकायत की। आरोप है कि 17 दिन मरीज को भर्ती कर दो डॉक्टरों ने 18.50 लाख रुपये वसूल लिए। तबियत में सुधार न होने पर रीजेंसी से रेफर भी नहीं किया। मरीज की मौत हो गई। शिकायत का संज्ञान लेकर सीएमओ ने जांच के लिए तीन सदस्यीय कमेटी का गठन किया है।

लखनऊ के अधिवक्ता सौरभ नारायण ने आईजीआरएस पर शिकायत की है कि मरीज गणेश चंद्र को रीजेंसी हॉस्पिटल कानपुर नगर में भर्ती कराया गया था, जहां पर डॉ. निर्मल पांडेय व डॉ. एके सिंह ने इलाज में लापरवाही बरती, जिससे मरीज की मौत हो गई। अस्पताल प्रशासन द्वारा गलत बिल बनाकर पैसे वसूले गए। आरोप है कि 17 दिन में रीजेंसी हॉस्पिटल ने साढ़े 18 लाख रुपये हड़प लिए। वहीं, जब मरीज की मौत हो गई तो 1.5 लाख और मांगे थे। आरोप है कि जब मरीज के तीमारदारों ने डॉक्टरों से अन्य अस्पताल रेफर करने और अपनी मर्जी से दूसरे अस्पताल ले जाने की कई बार विनती की, तब डॉक्टरों द्वारा डराया गया कि मरीज को ले जाओगे तो कुछ भी हो सकता है। इससे तीमारदार डरे रहे और मरीज की मौत हो गई। आईजीआरएस में आई शिकायत का संज्ञान सीएमओ डॉ. हरिदत्त नेमी ने लिया। सीएमओ ने बताया कि तीन सदस्यीय जांच टीम का गठन किया गया है, जिसमें एसीएमओ डॉ. रमित रस्तोगी, चेस्ट स्पेशलिस्ट और न्यूरो फिजिशियन को शामिल किया गया है। जांच कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

पूर्व एमएलसी पर झूठी रिपोर्ट लिखाने वाले को भेजा जेल

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। पूर्व कांग्रेस एमएलसी सरदार कुलदीप सिंह के खिलाफ दुष्कर्म का झूठा मुकदमा लिखाने वाली अनुया सोनकर के भाई जयेश को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम की अदालत से जयेश की जमानत खारिज हो गई है। अनुया, उसके पिता अजय और मां संतोष फरार चल रहे हैं।

श्री गुरु सिंह सभा कानपुर महानगर के चेयरमेन एवं पूर्व एमएलसी सरदार कुलदीप सिंह ने बताया कि जे. ए. कंस्ट्रक्शन कंपनी के मालिक जयेश सोनकर की बहन अनुया ने जुलाई 2024 में उनके और उनके बेटे सुमित सिंह के खिलाफ दुष्कर्म और एससी/एसटी एक्ट के तहत काकादेव थाने में रिपोर्ट दर्ज करायी थी। मुकदमे की विवेचना में आरोप झूठे पाए जाने पर एफआर (फाइनल रिपोर्ट) लग गई थी जिसे कोर्ट ने स्वीकार कर लिया था।

सरदार कुलदीप सिंह ने बताया कि इसके पहले भी अनुया के भाई जयेश ने उनके खिलाफ झूठा मुकदमा दर्ज कराने के लिए कई प्रार्थना पत्र पुलिस को दिए थे। पूर्व एमएलसी का आरोप है कि कोर्ट में भी कूटरचित दस्तावेज के माध्यम से फर्जी प्रार्थना पत्र देकर रिपोर्ट दर्ज कराने की कोशिश की थी लेकिन उसे सफलता नहीं मिली थी। एफआर लगने के बाद कुलदीप सिंह ने 21 जुलाई को काकादेव थाने में अनुया सोनकर, उसके भाई जयेश सोनकर, पिता अजय सोनकर और मां संतोष के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई थी। इसमें कहा गया था कि जयेश ने पांडु नगर में उनके प्लाट पर कब्जा करने के लिए और झूठा मुकदमा दर्ज कराकर उनसे और बेटे को फंसाकर रंगदारी वसूलने के लिए गलत आरोप लगाकर झूठी रिपोर्ट दर्ज कराई थी।

बाढ़ की दस्तक

गंगा बैराज पर पहुंचा 3 लाख क्यूसेक से अधिक पानी, बढ़ी हलचल, बैराज पर चेतावनी बिंदु को किया पार, शुक्लागंज में भी बढ़ रहा पानी

चैनपुरवा में चली नाव, रानीघाट के मकानों में आई दरार

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। गंगा का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। मंगलवार को गंगा बैराज पर चेतावनी बिंदु को पार कर गई। गंगा से सटे चैनपुरवा, घारमखेड़ा, दिबनीपुरवा, रामपुर, पहाड़ी पुरवा, छोटा व बड़ा मंगलपुर, नत्थापुरवा, कटुपुरवा व कल्लूपुरवा गांवों में पानी पहुंच गया है। चैनपुरवा के गांवों के निवासी व बच्चे नाव से आवागमन करने को मजबूर हैं। गंगा के बढ़ते पानी व कटान की वजह से रानीघाट के कई मकानों में दरार आ गई है। यहां कई परिवार अपने मकानों में ताला लटकाकर पलायन कर गए हैं।

बैराज अधिकारियों ने मंगलवार को गंगा में पांच लाख क्यूसेक पानी आने और जलस्तर खतरे के निशान से ऊपर जाने की आशंका जताई थी। लेकिन, तीन लाख 40 हजार 179 क्यूसेक पानी ही आया और जलस्तर चेतावनी बिंदु 114 मीटर को पार कर 114.08 पर पहुंच गया। अब गंगा खतरे के निशान से 92 सेमी कम है। शुक्लागंज की तरफ जलस्तर 112.46 मीटर दर्ज किया गया। मंगलवार को नरौरा से दो लाख 600 तो हरिद्वार से एक लाख 29 हजार 829 क्यूसेक पानी छोड़ा गया। पानी बढ़ने पर बैराज के सभी 30 गेट खोलकर तीन लाख 40 हजार 179 क्यूसेक पानी बैराज से छोड़ा गया। प्रशासन कटरी से सटे इलाकों पर नजर रखते हुए सतर्कता बनाए है।

परमट घाट की सीढ़ियां डूबीं। अमृत विचार

चैनपुरवा गांव की ओर बढ़ रहा है पानी। अमृत विचार

> मंगलवार को तेजी से पानी बढ़ा है। तीन लाख 40 हजार 179 क्यूसेक पानी आया है। बुधवार को इसमें बढ़ोतरी होने की आशंका है। सतर्कता बरती जा रही है।
>
> -अजय कुमार, अवर अभियंता, बैराज निर्माण खंड-2

नाव से स्कूल जा रहे बच्चे

- गंगा में पानी बढ़ने से चैनपुरवा के लोग नाव का सहारा ले रहे हैं। मंगलवार को नाव सड़क मार्ग पर देखी गई। यह क्षेत्र पानी से घिरा है। खेत तक पानी से भर गए हैं। गंगा के किनारे पर बने बाबा कन्टाप्रेश्वर धाम के पुजारी गणेश, सुरेश कुमार गुप्ता उर्फ बल्ली बाबा, राकेश ने बताया कि अब नाव व स्टीमर ही सहारा है। 20 से 25 बच्चे स्टीमर से ही पारकर स्कूल आते-जाते हैं। अभी घरों तक तो पानी नहीं पहुंचा है लेकिन यही हाल रहा तो एक-दो दिन में स्थिति विकट होगी।

नवाबगंज और रानीघाट पर बढ़ी मुसीबत

नवाबगंज का रानीघाट गंगा किनारे है। यहां हर साल दो तरफ से पानी बढ़ता है। इस बार भी यही हाल है। क्षेत्र के रहने वाले सीमा, गौर शंकर सैनी, नीतू आदि के मकानों में पानी बढ़ने से दरारें आ गई हैं। दरार की वजह से सरवन परिवार सहित पलायन कर गए हैं। इसी तरह गौरी शंकर सैनी भी परिवार सहित पलायन कर गए हैं। क्षेत्रीय लोगों का कहना है कि पानी घरों के भीतर तो नहीं आया लेकिन तेजी से बढ़ रहा है। कटान की वजह से दरारें आ रही हैं।

स्नान करने पर प्रतिबंध

गंगा किनारे के कल्लूपुरवा घाट पर घूमने व स्नान करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। यहां कोहना थाने की पिकेट तैनात की गई है। अटल घाट पर भी बोटिंग पर रोक है। प्रशासन ने गंगा से सटे गांव वालों को ऊंची जगह पर जाने के लिए अलर्ट जारी किया है। कहा है कि जितनी जल्दी हो, सुरक्षित स्थानों पर पहुंचें।

सिटी ब्रीफ

चोरों को पकड़कर पीटा, पुलिस को सौंपा

कानपुर। अनवरगंज में बाइक चोरी कर भाग रहे दो चोरों को लोगों ने पकड़ कर पीटा और पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस ने आरोपियों को जेल भेजा है। बांसमंडी निवासी गुफरान मुस्तफा के अनुसार सोमवार शाम उनकी बाइक घर के बाहर खड़ी थी। तभी दो युवक उनकी बाइक चोरी कर ले जाने लगे। शोर मचाने पर लोगों ने पकड़ कर जमकर पीट दिया। पुलिस पूछताछ में आरोपियों ने अपने नाम बेकनगंज के नाजिर बाग निवासी लारेब और फहीम बताया।

सप्लायर से छह हजार की ठगी

कानपुर। चमनगंज में खजूर का सप्लायर बनकर साइबर ठग ने एक व्यापारी से छह हजार रुपये ठग लिए। पीड़ित ने चमनगंज थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई है। चमनगंज के हुमांयु बाग निवासी राशिद सिद्दकी खजूर का व्यापार करते हैं। उन्होंने बताया कि चार जून को गूगल पर मिले नंबर पर रमेश नामक सप्लायर से बातचीत की। सौदा तय होने पर उसके भेजे गए क्यूआर कोड पर छह हजार रुपये ट्रांसफर कर दिए। कुछ दिन तक माल न आने पर उसने फोन किया तो कॉल रिसीव नहीं हुई। इस पर चमनगंज थाने में शिकायत की। थाना प्रभारी संजय राय ने बताया कि रिपोर्ट दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है।

भी गंगा में डूबे किशोर का पता नहीं

कानपुर। जाजमऊ के सिद्धनाथ घाट पर बीते 18 जुलाई को डूबे दो दोस्तों में एक का 27 दिन बीतने के बाद भी अभी तक कुछ पता नहीं चला है। परिजनों का कहना है कि कुछ दिन गंगा में सर्च ऑपरेशन पुलिस ने चलाया, अब बेटे की तलाश कराना भी बंद कर दिया है। नेताजीनगर पीएसी मोड़ निवासी सूरज, रौनक, राज और शुभम देर शाम सिद्धनाथ मंदिर दर्शन करने गए थे। इसके बाद सभी घाट के उस पार नहाने चले गए। सूरज और रौनक गहराई में जाकर डूब गए। रौनक का शव घटनास्थल से पांच किमी दूर महाराजपुर के जाना गांव के पास बरामद हुआ था, लेकिन सूरज अभी भी लापता है।

अस्पताल पहुंचने से पहले गड्ढे बढ़ा रहे मरीजों का दर्द

कानपुर। हैलट अस्पताल में प्रतिदिन सैकड़ों मरीज एंबुलेंस व निजी वाहनों से आते हैं, लेकिन हैलट के मुख्य मार्ग की सड़क भी टूट चुकी है। जिसपर मरीजों का दर्द और बढ़ जाता है। नगर निगम और कल्याणपुर की विधायक ध्यान नहीं दे रहे हैं। मुरारी लाल चेस्ट अस्पताल और कार्डियोलॉजी संस्थान वाली सड़क पर भी गड्ढे हैं, लेकिन एनएच लोक निर्माण विभाग व नगर निगम अधिकारी सोये हैं। ऐसे में आम लोगों के साथ ही मरीजों को भी काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। शहर से लेकर दक्षिण तक की सड़कें टूटी, उखड़ी, गड्ढा और बजरी युक्त हैं। मरम्मत के संबंध में नेता भी ध्यान नहीं दे रहे हैं।

शास्त्री चौक के पास फुटपाथ धंस गया है। अमृत विचार

शास्त्री चौक मार्ग पर तो पैदना चलना भी मुश्किल

- शास्त्री चौक वाली सड़क की इस कदर दुर्दशा है कि उसपर पैदल तक चलना लोगों का मुश्किल हो गया है। यहां से बाइक व स्कूटी से निकलने पर हिचकोले खाते हुए लोगों को गुजरना पड़ता है, कई बार तो गड्ढों से बचने के चक्कर में बाइक व स्कूटी सवार गिरकर चुटहिल तक हो जाते हैं। संबंधित क्षेत्र के जनप्रतिनिधि को जनता का यह दर्द नहीं दिख रहा है। न ही नगर निगम इस संबंध में कोई ठोस कार्यवाही कर रहा है।

पोस्टमार्टम हाउस के सामने सड़क गायब हो गई है।

पोस्टमार्टम हाउस के सामने खराब सड़क

- शहर की मुख्य सड़कों में पोस्टमार्टम के सामने वाली सड़क भी शुमार है। इस मार्ग की दुर्दशा तब है, जब यहां से दो किलोमीटर दूरी पर ही नगर निगम मुख्यालय है। दिनभर इस सड़क से अधिकारियों के वाहन गुजरते हैं, लेकिन मरम्मत या पैचवर्क तक नहीं किया जा रहा। इस मार्ग से गुजरने पर न सिर्फ मरीजों को दिक्कत हो रही है, बल्कि आम लोगों का चलना भी दूभर है।

गुटैया क्रासिंग के पास आधी सड़क गड्ढों में गुम। अमृत विचार

गुटैया क्रासिंग पर गड्ढों से होकर गुजरने को मजबूर

- गुटैया क्रासिंग के पास सड़क की काफी दुर्दशा है, इस सड़क की हालत ऐसी तब है, जब इस मार्ग पर जेके कैंसर संस्थान, मुरारी लाल चेस्ट अस्पताल और कार्डियोलॉजी संस्थान हैं। ऐसे में गड्ढा युक्त सड़क मरीजों की तकलीफों को और बढ़ाने में सहयोग कर रही है। संबंधित विभाग इससे अपना मुंह फेरे हुए हैं। वहीं, जनप्रतिनिधि और नगर निगम भी खामोश है। लोगों को कहना है कि जलभराव के कारण सड़क खराब हो रही है।

कारगिल पेट्रोल पंप के पास सड़क पर अनगिनत गड्ढे हैं। अमृत विचार

कारगिल पेट्रोल मार्ग और फुटपाथ ध्वस्त

- कारगिल पेट्रोल मार्ग की न सिर्फ सड़क की हालत खराब है, बल्कि फुटपाथ भी ध्वस्त हो गया है। फुटपाथ धंसने के बाद भी सुरक्षा के तहत इसके आसपास बैरीकेडिंग तक नहीं लगाई है। इस ध्वस्त फुटपाथ की चपेट में आने से राहगीर हादसा ग्रस्त हो सकते हैं, खासकर वह वाहन सवार जो कभी-कभार यहां से गुजरते हों। मुख्य सड़क पूरी तरह छलनी हो चुकी है। हर दो कदम पर गड्ढे हो गए हैं जिनमें बारिश का पानी भर जाता है। यहां रोजाना हजारों दोपहिया और चौपहिया वाहन सवार गुजरते हैं और सिस्टम को कोसते हैं। लेकिन संबंधित विभाग और मेट्रो कर्मी भी कोई सुध नहीं ले रहे हैं। क्षेत्र के जनप्रतिनिधि भी खामोश हैं।

.... बोले लोग ....

सड़कों की दुर्दशा सिर्फ आम जनता को ही दिख रही है। जो लोग मरम्मत करा सकते हैं, उनको सड़क के हाल नजर नहीं आ रहे हैं। प्रतिदिन लोगों को खराब सड़कों की वजह से दिक्कत हो रही है।

-सरफराज

हैलट और पोस्टमार्टम हाउस के सामने सड़क पर गड्ढे और बजरी है, जो काफी दिक्कत देते हैहै। न सिर्फ आम लोगों, बल्कि मरीजों को भी अस्पताल पहुंचने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।

-दिग्विजय सिंह

चुन्नीगंज में सड़क खराब होने की वजह से बीते माह लोक निर्माण विभाग के एक कर्मी की मौत हो गई थी, जिसके बाद उस जगह की मरम्मत कराई गई हैष अब फिर किसी की जान जाएगी तो सड़क बनेगी।

-अजय गुप्ता

जनता की मूलभूत सुविधाओं में सड़क सबसे महत्वपूर्ण है, जिसको अधिकारी दुरस्त नहीं रख पा रहे हैं और न ही समय पर मरम्मत करा रहे हैं। जिसकी वजह से आए दिन वाहन सवार झटके खाने को मजबूर हैं।

-हाजी फैजान खान

दुकान का टीनशेड हटाकर सात लाख ले गए चोर

कानपुर। हनुमंत विहार में रविवार देर रात चोरों ने गल्ला कारोबारी की दुकान को निशाना बनाया। दुकान का टीनशेड हटाकर गुल्लक में रखे सात लाख रुपये पार कर ले गए। शातिर जाते समय सीसीटीवी कैमरे की डीवीआर भी ले गए। सोमवार को दुकान पहुंचे कारोबारी को घटना की जानकारी हुई। पुलिस ने जांच-पड़ताल कर चोरी की रिपोर्ट दर्ज की है।

बाबूपुरवा के बगाही निवासी बिंद्रा कुमार साहू की गल्ला मंडी में सांई बाबा इंटरप्राइजेल के नाम से फर्म है। बिंद्रा कुमार के अनुसार बीते शुक्रवार को दिनभर की बिक्री का सात लाख रुपया उनकी दुकान के गुल्लक में रखा था। उसी दिन रात करीब साढ़े आठ बजे वह दुकान बंद करके घर गए थे। उसके दूसरे दिन रक्षाबंधन और रविवार की बंदी के बाद सोमवार को दुकान पहुंचे तो दुकान की टीनशेड हटी थी। अंदर सामान बिखरा था, गुल्लक खुली पड़ी थी। उसमें रखे रुपये और जरूरी कागज गायब थे। उन्होंने सीसीटीवी कैमरा चेक करने के लिए देखा तो उसकी कैमरे की डीवीआर भी गायब थी। उन्होंने संभावना जताई कि चोर जाते समय डीवीआर भी ले गए है। बिंद्रा ने हनुमंत विहार पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने दुकान का निरीक्षण किया। जिसमें टीनशेड उठा मिला। थानाध्यक्ष राजीव कुमार सिंह ने बताया कि चोरों की तलाश के लिए मंडी में लगे सीसीटीवी कैमरे खंगाले जा रहे हैं। जल्द ही चोरों को गिरफ्तार किया जाएगा।

फलमंडी में चलने की जगह नहीं

कानपुर। विजय नगर फलमंडी में मेट्रो के काम के कारण आधी से ज्यादा सड़क बंद है। बाकी आधी सड़क का बड़ा हिस्सा फल वालों के ठेलों ने घेर रखा है। सिर्फ 6,7 फीट का ही रास्ता बचा है जिसमें दोनों ओर से वाहन गुजरते हैं। इस कारण दिनभर जाम लगता है।

अवनीश के फरार साथियों की तलाश में दबिश दी

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- विवेचक रेलबाजार थाना प्रभारी की निगरानी में छापेमारी

अमृत विचार। प्रेस क्लब के पूर्व अध्यक्ष अवनीश दीक्षित के फरार साथियों की तलाश पुलिस ने तेज कर दी है। मंगलवार को किदवईनगर के एच-टू ब्लाक निवासी अजीत यादव, चकेरी के मंगला विहार का अमन तिवारी, यशोदानगर के अधिवक्ता मोहित बाजपेई और ग्वालटोली में अभिनव शुक्ला के घरों पर रेलबाजार पुलिस ने दबिश दी। हालांकि पुलिस के हत्थे कोई नहीं चढ़ा।

नजूल की एक हजार करोड़ की जमीन कब्जाने के प्रयास में तत्कालीन कोतवाली थाना प्रभारी संतोष शुक्ला ने 18 दिसंबर 2024 को प्रेस क्लब के पूर्व अध्यक्ष किदवईनगर निवासी अवनीश दीक्षित, झांसी के नवाबाद के झोकनबाग के हरेंद्र मसीह, राहुल वर्मा, मौरिस एरियल, कमला एरियल, अभिषेक एरियल, अर्पण एरियल, जीतेश झा, संदीप शुक्ला, विक्की चार्ल्स, अली अब्बास, जितेंद्र शुक्ला, विवेक पांडेय, मनोज यादव, मो. वसीम, अखलाख अहमद के खिलाफ गैंगस्टर का मुकदमा दर्ज कराया था। विवेचना रेलबाजार थाना प्रभारी बहादुर सिंह कर रहे हैं। जांच के दौरान उन्होंने 10 नए नाम जोड़े। जिसमें चकेरी के मंगला विहार निवासी अमन तिवारी, बिरहाना रोड के अभिनव शुक्ला, राहुल बाजपेई, मोती मोहाल निवासी रमन गुप्ता, कारवालोनगर का नितिन दीक्षित, हालसी रोड का जितेंद्र यादव, विनोद यादव और विजेंद्र यादव, यशोदानगर का मोहित बाजपेई, किदवईनगर का अजीत सिंह यादव हैं। इसमें राहुल बाजपेई, रमन और जितेंद्र जेल भेजे जा चुके हैं, जबकि नितिन दीक्षित को हाईकोर्ट से राहत मिली है। डीसीपी पूर्वी सत्यजीत गुप्ता ने बताया कि गैंगस्टर एक्ट में फरार आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए अलग टीम बनाई गई है।

कोच की सीढ़ियों से गिरकर वेंडर की मौत

कानपुर। कोच की सीढ़ियों से रपटकर गिरे फेरी वेंडर की मौत हो गई। जीआरपी ने परिजनों को हादसे की सूचना दी। युवक ट्रेन में पानी की फेरी लगाता था।

जावेद अंसारी।

झारखंड के नोडिया लोहरसी पलाम निवासी मुजीब अंसारी का 28 वर्षीय बेटा जावेद अंसारी पानी का फेरी वेंडर था। जावेद गोविंदपुरी के प्लेटफार्म एक पर जाकिर नामक वेंडर के साथ रहता था। उसके भाई तेजाब अंसारी ने बताया कि रविवार को बारिश के कारण कोच की सीढ़ियों पर पानी पड़ा था। मुजीब ट्रेन में पानी की बोतल बेचने के बाद जूही यार्ड के पास उतर रहा था, तभी रपटकर नीचे जा गिरा। गंभीर अवस्था में जीआरपी ने उसे अस्पताल भेजा, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। भाई के अनुसार जावेद अविवाहित था और यहां अकेले रहता था।

युवक को बेसबॉल से पीटा धमकाया, कार तोड़ी

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- ढाबे पर खाना खाने के दौरान हुआ था विवाद

अमृत विचार। जाजमऊ में कार सवार दबंगों ने युवक को रास्ते में रोककर पीटा। बेसबॉल से मारकर कार क्षतिग्रस्त कर दी और धमकी देकर भाग निकले। पीड़ित ने पुलिस से शिकायत कर आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है।

महाराजपुर के कुलगांव निवासी आशुतोष सिंह प्रॉपर्टी डीलर का काम करते हैं। उन्होंने बताया कि बीते दस अगस्त की रात साढ़े ग्यारह बजे वह उन्नाव स्थित ढाबे में खाना खाने गए थे। वहां से लौटते समय गंगापुल पार कर जाजमऊ में चुस्की चाय के पास पहुंचे थे कि कुछ लोगों ने सामने आकर उनकी गाड़ी रोक ली। उनके बाहर निकलते ही आरोपी गाली-गलौज करते हुए पीटना शुरू कर दिया। आकाश द्विवेदी, ट्विंकल पंडित, आदर्श यादव व एक अन्य ने डंडे व बेसबॉल से उनकी पिटाई की। उसे पीटने के बाद बेसबॉल से उसकी कार क्षतिग्रस्त कर दी। आरोपी उसे धमकी देकर भाग निकले। गंभीर रूप से घायल होने पर परिजन अस्पताल ले गए और इलाज के बाद घटना की जानकारी पुलिस को दी। थाना प्रभारी जितेंद्र सिंह ने बताया कि सभी दोस्त हैं। ढाबे में खाना खाने को लेकर विवाद हुआ था। दोस्तों ने ही युवक को पीटा है। आरोपी आकाश द्विवेदी को गिरफ्तार कर अन्य की तलाश की जा रही है।

सगे भाइयों को डंडों से पीटा

कानपुर। कैंट के कुरियन खपरैला निवासी रीता के अनुसार बीती नौ अगस्त को छबीलेपुरवा मोड़ के पास पड़ोसी विकास, अंकित, तारा व मनोज ने मामूली विवाद में उसके पति मनोज और देवर सर्वेश से गाली-गलौज की। जिसका विरोध करने पर आरोपियों ने लाठी-डंडों से मारापीटा। शोर सुनकर लोग पहुंचे तो आरोपी जान से मारने की धमकी देकर भाग गए। कैंट थाना प्रभारी अरविंद राय ने बताया कि रिपोर्ट दर्ज कर जांच की जा रही है।

हैलट मामले की जांच के लिए जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपते व्यापारी। अमृत विचार

हैलट में लापरवाही से मौत की जांच हो

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- जिलाधिकारी से कहा कि दोषियों पर कार्रवाई हो

अमृत विचार। हैलट अस्पताल में डॉक्टर, स्टाफ नर्स, मेडिकल स्टॉफ, वार्ड बॉय की लापरवाही से परमट निवासी नीरज शुक्ला के 40 वर्षीय सुपुत्र कुलदीप शुक्ला की जान चली गई। इस घटना की जांच कराकर दोषियों के विरुद्ध कार्यवाही करें। मंगलवार को भाजपा कानपुर बुंदेलखंड क्षेत्र व्यापार प्रकोष्ठ क्षेत्रीय संयोजक विनोद गुप्ता के नेतृत्व में व्यापारियों ने जिलाधिकारी से मुलाकात की और उनसे यह मांग की।

जिलाधिकारी को पत्र सौंपते हुए कहा कि हैलट अस्पताल में इलाज में घोर लापरवाही बरती गई। उनके परिजनों के साथ मेडिकल स्टॉफ ने दुर्व्यवहार किया जो कि अत्यंत अमानवीय और निंदनीय कृत्य है। मांग की गई कि दोषियों पर सख्त कार्रवाई हो ताकि किसी भी अस्पताल में दोबारा इस प्रकार की अमानवीय घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। जिलाधिकारी ने भरोसा दिलाया कि किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा। जांच के बाद कठोर कार्रवाई की जाएगी। वरिष्ठ उपाध्यक्ष रोशन लाल अरोड़ा, शेष नारायण त्रिवेदी, कानपुर कपड़ा कमेटी अध्यक्ष अमित दोसर,संजय त्रिवेदी, पवन दुबे, शीबू गुप्ता,पारस अवस्थी, विशाल दुबे, संजय राठौर, रुद्र गुप्ता, विनित सिन्हा, राजू चौधरी, मनोज गुप्ता आदि थे।

बेनाझाबर मॉडल वार्ड में सफाई का निरीक्षण करते नगर आयुक्त। अमृत विचार

नगर आयुक्त को कर्मचारी मिले गायब

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- नगर आयुक्त ने दी चेतावनी, एक दिन का वेतन काटने के निर्देश

अमृत विचार। बेनाझाबर मॉडल वार्ड में मंगलवार सुबह साढ़े छह बजे 14 कर्मी नदारद मिले। इस पर नाराजगी जताते हुए नगर आयुक्त सुधीर कुमार ने नोडल अधिकारी नानक चंद को चेतावनी दी। साथ ही अनुपस्थित कर्मचारियों का एक दिन का वेतन काटने के निर्देश दिए हैं।

नगर आयुक्त मंगलवार सुबह शहर की सफाई व्यवस्था, कूड़ा संकलन का निरीक्षण करने निकले थे। हरजिंदर नगर वार्ड अंतर्गत लाल बंगला बाजार में कई दुकानदारों ने अपनी दुकानों के बाहर डस्टबिन की व्यवस्था नहीं की थी। ठोस अपशिष्ट का निस्तारण भी नहीं कराया जा रहा था। नगर आयुक्त ने ऐसे सभी दुकानदारों को चिन्हित कर चालान काटने के निर्देश दिए। नगर आयुक्त ने कहा कि जन्माष्टमी को देखते हुए लाल बंगला बाजार क्षेत्र में विशेष अतिक्रमण निरोधक अभियान चलाकर पूरे मार्ग को अतिक्रमण मुक्त किया जाए। नगर आयुक्त अशोकनगर, आर्यनगर, स्वरूप नगर, तिलक नगर, जोन-1 अंतर्गत जनरलगंज, चमनगंज, चंद्रिका देवी मार्ग, जीटी रोड, रामादेवी भी गए।

छात्रा से छेड़खानी भाई को धमकाया

कानपुर। शोहदे से डरी छात्रा ने गोविंदनगर पुलिस से शिकायत की है। अपनी व भाई की सुरक्षा की गुहार लगाई है। पुलिस रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू की है।

गोविंदनगर इलाके में रहने वाली छात्रा के अनुसार वह प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रही है। रक्षाबंधन पर छुट्टी पर घर आई थी। बीते रविवार वह बाजार जाने के लिए निकली थी, तभी पड़ोस में रहने वाले अरुण से उसे रोका और छेड़खानी की। शोर मचाने पर भाई आ गया और विरोध किया। इस पर आरोपी उस समय चला गया, लेकिन कुछ देर बाद चाकू लेकर भाई को मारने आया। वह काफी देर तक चाकू लेकर इलाके में घूमता रहा। छात्रा के अनुसार एक साल पहले भी आरोपी ने रास्ते में रोककर छेड़छाड़ की थी। विरोध पर उसने मारपीट की थी। उस समय उसके खिलाफ बर्रा थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी।

लापरवाही

पेट्रोल लाइन पर डंप हो रहा कूड़ा, वार्ड-66, 68, 95, व 46 में समस्या

दक्षिण में चार वार्डों के बीच कोई कूड़ा अड्डा नहीं

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। शहर टॉप 10 साफ शहरों की सूची से यूं ही नहीं बाहर है। उसके पीछे कारण भी हैं। दक्षिण क्षेत्र के चार वार्ड ऐसे हैं जहां एक भी स्मार्ट कूड़ा अड्डा नहीं हैं। स्थानीय लोग खुले में ही कूड़ा डंप करते हैं। इससे गंदगी हमेशा दिखती है। सब्जी विक्रेताओं के साथ ही फास्ट फूड की कियोस्क लगाए लोग भी कूड़ा खुले में ही डंप कर रहे हैं। जिसे बाद में नगर निगम के कर्मचारी उठा रहे हैं। इससे स्वच्छता अभियान में धब्बा लग रहा है।

जोन-02 के अंतर्गत दासू कुंआ चौराहे से लेकर सैनिक चौराहे तक कई स्थानों पर सब्जी मंडी संचालित हो रही है। इसके साथ ही फुटपाथ पर ही फास्ट फूड बेचने के साथ राशन की दुकानें सजी हैं। यहां पेट्रोल लाइन पर ही 03 स्थानों पर सब्जी मंडी, राशन की दुकान, बिल्डिंग मैटेरियल इत्यादि का व्यापार किया जा रहा है। जिससे रोजाना बड़ी मात्रा में कूड़ा खुले में ही डंप किया जा रहा है। नगर निगम के सफाई कर्मचारी कूड़े का उठान तो कर रहे हैं, लेकिन खुले में कूड़ा पड़ने से पेट्रोल लाइन पर हमेशा गंदगी होती है। इससे राहगीरों के साथ ही स्थानीय लोगों को रोजना गंदगी का सामना करना पड़ता है।

दक्षिण के कई वार्डों में सड़क पर ही कूड़ा फेंका जाता है। अमृत विचार

- दासू कुंआ चौराहे से लेकर सैनिक चौराहे तक सब्जी विक्रेता बढ़ा रहे कूड़ा

इन 4 वार्डों में है समस्या

पेट्रोल लाइन के आस-पास वार्ड-66 पशुपति नगर, 68-राजीव नगर, 95 नौबस्ता यशोदा नगर पश्चिमी व 46 यशोदा नगर पूर्वी स्थित हैं। इन वार्डों में कहीं भी कूड़ा अड्डा नहीं हैं।

कूड़ा अड्डा बनाने की नहीं है जगह

जोन 2 जेडएसओ क्षितिज मिश्रा ने बताया कि वार्डों में स्मार्ट कूड़ाघर के लिए जगह न होने की वजह से वार्डों का कूड़ा सड़क व फुटपाथ पर फेंका जाता है। वार्ड में 3 किमी . की पेट्रोल लाइन या इसके आस पास में कूड़ा अडडा बनाया जा सकता है। पीसीटीएस या प्लेटफार्म बनाकर 8 .5 घन मीटर के 02-02 कंटेनर चार से पांच जगह लग जाएं तो समस्या खत्म हो सकती है। नगर स्वास्थ्य अधिकारी को बताया है।

सिटी ब्रीफ

कचरे से उपयोगी वस्तुएं बनाईं

कानपुर। अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस पर नगर निगम, कानपुर एवं जैन इंटरनेशनल स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में हर घर तिरंगा हर घर स्वच्छता अभियान के अंतर्गत युवा सम्मेलन एवं प्रदर्शनी का भव्य आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में छात्रों द्वारा वेस्ट टू आर्ट मेकिंग प्रतियोगिता के अंतर्गत कचरे से उपयोगी वस्तुएं एवं कलात्मक नमूने तैयार कर स्वच्छता के महत्व को रचनात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया। साथ ही विद्यार्थियों द्वारा ऑपरेशन सिंदूर, सेंसर एक्टिविटी फॉर एटीएम, तथा भारत की प्रमुख मिसाइलों के मॉडल तैयार करके सैनिकों को सलाम किया।।

सौर ऊर्जा पैनल की स्थापना को बैठक

कानपुर। केस्को, जलकल विभाग, कानपुर विकास प्राधिकरण, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ नगर आयुक्त ने मंगलवार को बैठक की। इस दौरान यह निर्णय लिया गया कि कानपुर नगर निगम मुख्यालय, जलकल भवन, केडीए भवन जैसे प्रमुख सरकारी परिसरों में सौर ऊर्जा पैनलों की स्थापना कर बिजली आपूर्ति को पर्यावरण अनुकूल एवं किफायती बनाया जाएगा। इसके लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि इस संबंध में व्यवस्थित कार्य योजना तैयार कर जल्द ही फाइनल रिपोर्ट भेजी जाए।

आजादी के उत्सव में देश विभाजन का दर्द न भूलें

14 अगस्त 1947 को पाकिस्तान में हुआ था भीषण नरसंहार, विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस मनाएगी भारतीय जनता पार्टी

कार्यालय संवाददाता, कानपर

अमृत विचार। भाजपा कानपुर बुंदेलखंड क्षेत्र में 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस मनाएगी। इस दौरान 17 जिलों में गोष्ठियां, पद यात्राएं और डॉक्युमेंट्री फिल्म प्रदर्शन के माध्यम से आम जनता को 1947 में पाकिस्तान में हुए भीषण नरसंहार, अत्याचार और विस्थापन की सच्ची घटनाओं से अवगत कराया जाएगा।

मंगलवार को क्षेत्रीय मुख्यालय में बैठक कर क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल ने कहा कि देश की आजादी का पर्व तो हम 15 अगस्त को धूमधाम से मनाते हैं, लेकिन उससे एक दिन पूर्व 14 अगस्त 1947 को पाकिस्तान में हिन्दू, सिख, पंजाबी और सिंधी समाज के साथ जो अमानवीय त्रासदी हुई, वह इतिहास का काला अध्याय है।

आजादी के उत्सव में हम उस विभीषिका को भूल न जाएं, इसलिए भाजपा इस दिवस को स्मरणीय बनाएगी। क्षेत्रीय मीडिया प्रभारी अनूप अवस्थी ने बताया कि कार्यक्रम में भाजपा के वरिष्ठ नेता विभिन्न जिलों में मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। सभी जिलों में आयोजित कार्यक्रमों में विभाजन की घटनाओं का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किया जाएगा और भावी पीढ़ी को इससे सीख लेने का संदेश दिया जाएगा। कानपुर उत्तर पूर्व में केंद्रीय मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति मुख्य वक्ता रहेंगी। इसी तरह कानपुर दक्षिण में अध्यक्ष प्रकाश पाल, ग्रामीण में पूर्व जिला अध्यक्ष सुनील बजाज, देहात में पूर्व महापौर रवींद्र पाटनी मुख्य वक्ता के रूप में शामिल होंगे। बैठक में क्षेत्रीय मंत्री पवन प्रताप सिंह, जितेंद्र सचान, हर्ष द्विवेदी, आलोक शुक्ला, संदीप ठाकुर, विनय राठौर, राम सिंह चंदेल, अर्शी सुल्तान सहित क्षेत्रीय टोली के सदस्य रहे।

एनसीसी कैडेट्स ने निकाली तिरंगा यात्रा। अमृत विचार

तिलक नगर से निकाली गई तिरंगा यात्रा। अमृत विचार

महिला महाविद्यालय से निकली तिरंगा यात्रा

कानपुर। किदवई नगर स्थित महिला महाविद्यालय में एनसीसी कैडेट्स ने हर घर तिरंगा अभियान के तहत तिरंगा पदयात्रा निकाली।महाविद्यालय से एनसीसी प्रभारी डॉ. आकांक्षा शुक्ला, डॉ. सबा यूनुस की अगुवाई में ये तिरंगा निकाली गई जो विभिन्न मार्गों से होते हुए वापस महाविद्यालय में समाप्त हुई। इस दौरान छात्राएं हाथों में तिरंगा लहराते चल रही थीं और नारे लगाए गए कि तिरंगा हमारी शान है, भारत की पहचान है, हर घर तिरंगा लहराएंगे, भारत की शान बढ़ाएंगे, भारत माता की जय।

तिलक नगर मंडल में तिरंगा यात्रा निकाली गई

कानपुर। मंगलवार को तिलक नगर मंडल में भाजपा द्वारा भव्य तिरंगा यात्रा निकाली गई। यात्रा को हरी झंडी जिला अध्यक्ष अनिल दीक्षित ने दिखाई। यात्रा में सैकड़ों की संख्या में उत्साही कार्यकर्ता देशभक्ति की भावनाओं से ओतप्रोत वातावरण में शामिल हुए। यात्रा का नेतृत्व जिला अध्यक्ष अनिल दीक्षित व मंडल अध्यक्ष अश्वनी गौतम ने किया। लगभग एक किलोमीटर की यात्रा में शामिल कार्यकर्ता, भारतीय सेना जिंदाबाद, वंदे मातरम, भारत माता की जय के नारे लगाते रहे। यात्रा आर्यनगर सब्जी मंडी से होते हुए कमल वाला चौराहा आर्यनगर में समाप्त हुई। वहीं लाजपत नगर मंडल की यात्रा का नेतृत्व जिला अध्यक्ष अनिल दीक्षित ने किया। प्रमुख रूप से मंडल अध्यक्ष अजय राय, अरुण पाल, रामलखन रावत, जगदीश तिवारी, आनंद मिश्रा, रंजीता पाठक, पूनम कपूर, पूजा तिवारी, पार्षद नीरज बाजपेई, हनुमान पांडे, पार्षद नीरज रक्सेल, अरुण दुबे आदि रहे।

तिरंगा यात्रा में देशभक्ति की लहर

कानपुर। भाजपा क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल एवं दक्षिण जिलाध्यक्ष शिवराम सिंह के नेतृत्व में बर्रा, किदवई नगर, बाबूपुरवा, जूही और सरसौल मंडलों में पूरे जोश, उत्साह और उल्लास के साथ ऐतिहासिक और भव्य 'तिरंगा यात्रा' निकाली गई। भाजपा दक्षिण जिलाध्यक्ष शिवराम सिंह आगे आगे तिरंगा यात्रा की अगुवाई कर रहे थे। सड़कों पर लहराते तिरंगे, गगनभेदी नारों की गूंज, ढोल-नगाड़ों की ताल और देशभक्ति गीतों ने ऐसा माहौल बना दिया जैसे पूरा शहर तिरंगे के रंग में रंग गया हो। सैकड़ो देशभक्तों ने हाथों में तिरंगा लेकर भारत माता के जयकारे लगाए। प्रमुख रूप से जसविंदर सिंह, केपी चौहान, गणेश शुक्ला, महेश चंद्र मिश्रा, विनोद मिश्रा, मीडिया प्रभारी मनीष त्रिपाठी, विनय मिश्रा, राजन चौहान, बिट्टू परिहार, दीपांकर मिश्रा, दीपू पासवान, लक्ष्मी निषाद आदि रहे।

कैंप लगा तिरंगा झंडा बांटा

कानपुर। भाजपा उत्तर जिला अध्यक्ष अनिल दीक्षित के नेतृत्व में नवीन मार्केट में कैंप लगा कर आम लोगों को तिरंगा बांटा गया। जिला मीडिया प्रभारी अनुराग शर्मा ने बताया कि पार्टी प्रमुख स्थानों पर व प्रत्येक मंडल में कैंप लगाकर मुफ्त तिरंगा वितरण करेगी। राकेश सोनकर, सतेंद्र पांडेय, शिवांग मिश्रा, रोहित साहू, सीमा, अनुपम मिश्रा रहे।

कोतवाली चौराहे पर प्रदर्शन करते कांग्रेसी। अमृत विचार

पुतला फूंकने पर कांग्रेसियों के खिलाफ एफआईआर

कार्यालय संवाददाता, ,कानपुर

अमृत विचार। सोमवार को चेतना चौराहे पर पीएम का पुतला दहन के मामले में पुलिस ने कांग्रेसियों पर मुकदमा दर्ज किया है। जिसको लेकर कांग्रेसियों ने बैठक की और आरोप लगाया कि भाजपा सरकार को खुश करने के लिए पुलिस ने कांग्रेसियों पर मुकदमा दर्ज किया है। नगर ग्रामीण कांग्रेस कमेटी के जिलाध्यक्ष संदीप शुक्ला को नामजद करते हुए 15 अज्ञात के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है।

मंगलवार को तिलक हाल में कानपुर नगर ग्रामीण कांग्रेस कमेटी के जिलाध्यक्ष संदीप शुक्ला की अध्यक्षता में बैठक हुई। जिलाध्यक्ष ने कहा कि सरकार के खिलाफ धरना प्रदर्शन और घेराव पुतला दहन हमारा लोकतांत्रिक अधिकार है जिसको दमन करने का प्रयास योगी मोदी की सरकार कर रही है। एआईसीसी सदस्य हर प्रकाश अग्निहोत्री ने कहा कि न कोई आवागमन बाधित हुआ, न कोई अफरातफरी हुई लेकिन फिर भी पुलिस ने मुकदमा लिख दिया। पूर्व विधायक पं. भूधर नारायण मिश्र ने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार को खुश करने के लिए ही पुलिस विपक्षी नेताओं पर मुकदमे दर्ज कर रही है। बैठक में दादा शंकर दत्त मिश्र, कृपेश त्रिपाठी, ग्रीन बाबू सोनकर, सतीश दीक्षित, दादा ध्रुव नारायण तिवारी, अखलाक अहमद डेविड, चंद्रमणि मिश्रा, शशिकांत दीक्षित, बूटा सिंह रहे।

हज पर पड़ी महंगाई की मार, घटी संख्या

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- राज्य हज कमेटी को बार-बार बढ़ानी पड़ गई फार्म की अंतिम तिथि

अमृत विचार। हर मुसलमान की ख्वाहिश होती है कि वह जिंदगी में एक बार सऊदी स्थित खान-ए-काबा और पैगंबर मोहम्मद साहब के रौजे की जियारत जरूर करे लेकिन हज आजमीन का पैकेज इतना महंगा हो गया है कि अब हज साधारण इंसान के बस की बात नहीं है। सरकार उत्तर प्रदेश के लिए जो कोटा निर्धारित करती थी वह सिस्टम भी खत्म हो गया है।

उत्तर प्रदेश राज्य कमेटी के माध्यम से पांच साल पहले 29 हजार आजमीन का कोटा निर्धारित था। उसके बाद भी आजमीन की संख्या 32000 तक पहुंच जाती थी। आजमीन के नाम लाटरी के माध्यम से निकाले जाते थे लेकिन अब महंगाई के चलते हज पर जाने की लोग हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं। पिछले तीन साल से हज का कोटा उत्तर प्रदेश में खत्म कर दिया गया है। साल 2026 में उम्मीद थी कि आजमीन की संख्या बढ़ेगी लेकिन अन्य वर्षों की तुलना में हज आजमीन की संख्या और भी कम हो गई है। कानपुर से हर वर्ष 700 से 800 आजमीन का कोटा होता था लेकिन अब इस बार 400 भी पार होना मुश्किल है। हज के फार्म भरने की तारीख बढ़ाने के बाद भी आजमीन की संख्या में कोई इजाफा नहीं हुआ तो 7 अगस्त को अंतिम तारीख खत्म हो गयी।

उमरा पर भीड़

हज का पैकेज लगभग 4 लाख पहुंच जाने के बाद लोग उमरा करके ही संतुष्ट हो जा रहे हैं। हज की अदायगी में 40 दिन का समय लगता है जबकि उमरा 15 दिन में पूरा हो जाता है। उमरा में भी खान-ए-काबा और पैगंबर मोहम्मद साहब के रौजे पर हाजिरी लग जाती है और इबादत भी हो जाती है।

आज लाटरी से निकालेंगे आजमीन के नाम

हज कमेटी आफ इंडिया के मुख्य अधिशासी अधिकारी ने मंगलवार को जारी अपने बयान में कहा है कि 13 अगस्त बुधवार को सुबह 11 .30 बजे हज आजमीन के नामों की लाटरी मुंबई में निकाली जाएगी जिसे आजमीन लाइव भी देख सकते हैं। हज के पूर्व मास्टर ट्रेनर के प्रतिदिनि सरदार खां ने कहा है कि किसी भी प्रकार की दिक्कत होने पर आजमीन नि :शुल्क हेल्पलाइन मोबाइल नंबर 9415483645 पर संपर्क करें।

> हज आजमीन की संख्या में हर साल बड़े पैमाने पर कमी आ रही है, पहले कानपुर नगर व देहात से लगभग 1200 लोग हज पर जाते थे लेकिन धीरे धीरे ये संख्या कम हो गई। अब इस बार कितने लोगों ने फार्म भरा है, ये बुधवार को पता चल जाएगा। केंद्रीय हज कमेटी ने राज्यों के निर्धारित कोटा सिस्टम खत्म कर दिया है। अब केंद्रीयकृत हो गया है, जिस प्रांत में आजमीन अधिक होते हैं, वहां लाटरी सिस्टम से नाम निकाले जाते हैं।
>
> -सरदार खां, हज कमेटी के पूर्व मास्टर ट्रेनर

कांग्रेसियों ने एसआईआर की प्रतियां जलाईं

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- मतदाता सूची में धांधली, वोट चोरी का आरोप लगाकर विरोध प्रदर्शन

अमृत विचार। बिहार में एसआईआर (स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन) के बाद बड़े पैमाने पर वोटर लिस्ट में धांधली और वोट चोरी का आरोप लगाते हुए कांग्रेस ने कोतवाली के पास प्रदर्शन किया। एसआईआर की प्रतीकात्मक प्रतियां जलाईं।

मंगलवार को कानपुर महानगर कांग्रेस के अध्यक्ष पवन गुप्ता की अगुवाई में कोतवाली चौराहे के पास एसआईआर की प्रतीकात्मक प्रतियां जलाकर नारेबाजी की गई। प्रदर्शनकारी नारे लगा रहे थे कि वोट चोर गद्दी छोड़, वोटों की हेरा फेरी बंद करो। प्रदर्शन के दौरान बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात रहा। महानगर अध्यक्ष ने कहा कि भाजपा और चुनाव आयोग वोट चोरी करके लोकतंत्र की हत्या कर रहे हैं। आरोप लगाया कि भाजपा बेइमानी से बिहार चुनाव जीतना चाहती है। हैरानी है कि चुनाव आयोग ने बिहार के विधानसभा क्षेत्र दरौंदा में एक महिला मिंता देवी की उम्र 124 साल बताई है। ऐसी ही धांधलियां लगातार सामने आ रही हैं। एक घर एक पते पर सैकड़ों वोट मिले हैं। पूर्व अध्यक्ष हर प्रकाश अग्निहोत्री ने कहा कि वोट चोरी के विरुद्ध कांग्रेस अपना आंदोलन जारी रखेगी। वोट चोर गद्दी छोड़ ,वोट चोरी बंद करो, भाजपा शर्म करो, चुनाव आयोग शर्म करो के नारे लगे।

संतोष त्रिपाठी, पूजा भारद्वाज, नरेश पाठक, हरीश बाजपेई, तौसीफ खान, रितेश यादव, अजय प्रकाश तिवारी, अतीक अहमद शहजादे, मोहम्मद इरफान, नदीम सिद्दीकी, पद्म मोहन मिश्रा, अजय श्रीवास्तव शीलू, राकेश साहू, संजय दीक्षित, आनंद शुक्ला, जावेद उस्मानी, राम स्वरूप तिवारी, रवि किशन भारती, धर्मेंद्र चौहान, हाजी जलील आदि थे।

चर्म क्षेत्र की क्षमताएं बढ़ाएं

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। कानपुर लेदर कॉम्प्लेक्स में चर्म उत्पादन में प्रयुक्त विशिष्ट रसायनों पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। सीएसआईआर केंद्रीय चमड़ा अनुसंधान संस्थान व चर्म क्षेत्र कौशल परिषद (एलएसएससी) के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। उद्देश्य चर्म व फुटवियर क्षेत्र की क्षमताओं को बढ़ाना देना, कानपुर-उन्नाव चर्म क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देना, उद्योग जगत के प्रतिनिधियों और शिक्षाविदों को एक साथ लाना रहा।

सीएसआईआर-सीएलआरआई के निदेशक डॉ. केजे श्रीराम और अनुसंधान परिषद व सीएलई अध्यक्ष आरके जालान ने लेदर के आयात, निर्यात और लोगों में बढ़ती पसंद आदि के संबंध में जानकारी दी। एलएसएससी के अध्यक्ष मुख्तारुल अमीन ने एलएसएससी की खूबियों के बारे में बताया। मुख्य वैज्ञानिक डॉ. निशाद फातिमा एन ने स्पेशलिटी लेदर केमिकल्स पर विशेष रसायन अनुसंधान पर प्रस्तुति दी। वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुजाता मंडल ने चमड़े के लिए पर्यावरण के अनुकूल ज्वाला मंदक पर प्रस्तुति दी। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एमडी सईम आलम ने कोल्ड क्रैक-रेसिस्टेंट फैटलिकर पर प्रस्तुति दी। प्रभारी वैज्ञानिक अभिनंदन कुमार ने उद्योग परिसर में किए गए परीक्षणों के बारे में बताया। सीएलआरआई के निदेशक से अनुरोध किया है कि वह अपनी टेनरी इकाइयों में विकसित विशेष रसायनों पर परीक्षण और प्रदर्शन की व्यवस्था करें।

समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते पदाधिकारी। अमृत विचार

- केंद्रीय चमड़ा अनुसंधान संस्थान व चर्म क्षेत्र कौशल परिषद के बीच समझौता किया गया

मकबरे में तोड़फोड़ की निंदा की

कानपुर। सोमवार को जनपद फतेहपुर के आबूनगर मोहल्ले में नवाब अब्दुस्समद के मकबरे में कुछ अराजकतत्वों द्वारा की गई तोड़फोड़ करके क्षति पहुंचाना और भगवा लहराना निंदनीय है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मांग की गई है कि दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करें।

मंगलवार को गद्दियाना में आल इंडिया गरीब नवाज कौंसिल की बैठक हुई जिसकी अध्यक्षता करते हुए काउंसिल के राष्ट्रीय अध्यक्ष मौलाना मोहम्मद हाशिम अशरफी ने सरकार से मांग की है कि इस घटना में संलिप्त लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई हो। मौलाना ने कहा कि प्रधानमंत्री का नारा है सबका साथ सबका विकास और सबका विश्वास जबकि प्रदेश के मुख्यमंत्री का कहना है कि प्रदेश में कानून का राज चल रहा है।

लीगल क्लीनिक का उद्घाटन करते जिला जज चवन प्रकाश। अमृत विचार

निशुल्क लीगल क्लीनिक का किया गया शुभारंभ

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। जनपद न्यायाधीश/ अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, कानपुर नगर चवन प्रकाश ने जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास कार्यालय में निःशुल्क लीगल क्लीनिक का उद्घाटन किया। लीगल क्लीनिक का उद्देश्य वीर परिवार सहायता योजना 2025 के तहत रक्षा कर्मियों, भूतपूर्व सैनिकों व उनके परिवारजनों को विधिक सहायता उपलब्ध कराना है। कार्यक्रम में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट सूरज मिश्रा, कर्नल एस.पी. सिंह, मेजर योगेन्द्र कटियार व विभिन्न बटालियन के सैनिक व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के असिस्टेंट राजकुमार यादव, निहाल दीक्षित, पवन कुमार आदि रहे।

आक्रोश

अधिकारियों की शिकायत लखनऊ में स्टेट जीएसटी आयुक्त से होगी

उत्पीड़न करने वाले अफसरों की संपत्ति की जांच कराएं

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। कागजात पूरे होने के बाद भी कई अधिकारी व्यापारियों का उत्पीड़न कर रहे हैं, ऐसे अधिकारियों की संपत्ति की जांच कराई जाएगी और जल्द ही स्टेट जीएसटी आयुक्त से ऐसे अधिकारियों की शिकायत की जाएगी। भारतीय उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल के प्रदेश अध्यक्ष ज्ञानेश मिश्र ये बात कही।

मंगलवार को उप्र मार्बल टाइल्स व्यापारी एसोसिएशन द्वारा व्यापारियों उद्यमियों के हित में लगातार कई वर्षों कार्य कर रहे भारतीय उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल के प्रदेश अध्यक्ष ज्ञानेश मिश्र, मंडल के जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष अशोक शुक्ला,युवा महामंत्री विनायक पोद्दार व युवा वरिष्ठ उपाध्यक्ष सत्यम मिश्र सहित अन्य पदाधिकारियों का शाल, माला व अंगवस्त्र पहनाकर स्वागत किया गया। प्रदेश अध्यक्ष ने व्यापारियों को आह्वान किया कि स्टेट जीएसटी व सेन्ट्रल जीएसटी के अधिकारियों द्वारा उद्यमियों के उत्पीड़न होने पर संघर्ष करें।

इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष ज्ञानेश मिश्र से व्यापारियों ने शिकायत की कि स्टेट जीएसटी की सचल दल इकाइयों द्वारा मार्बल की ललितपुर व आगरा से आने वाली गाड़ियों के टैक्स इनवॉइस व ई वे बिल सहित अन्य कागजात सही होने के बाद भी रोककर विभाग में ले जाकर परेशान किया जा रहा है। इसपर प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि इस तरह के मामलों की शिकायत लखनऊ में स्टेट जीएसटी आयुक्त से होगी और ऐसे सेन्ट्रल जीएसटी अधिकारियों की आय से आधिक सम्पत्ति की जांच की मांग केंद्रीय वित्त मंत्री से की जायेगी। कार्यक्रम में प्रतिनिधि मंडल के जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष अशोक शुक्ला, युवा महामंत्री विनायक पोद्दार व युवा वरिष्ठ उपाध्यक्ष सत्यम मिश्र आदि भी सम्मानित हुए। उत्तर प्रदेश मार्बल टाइल्स व्यापारी एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष पवन गौड़, संरक्षक आशुतोष दीक्षित, कैलाश मालपानी, सिद्धार्थ मालपानी, अनुपम गुप्ता सोनू, पियूष दधीचि, मोनू गुप्ता आदि थे।

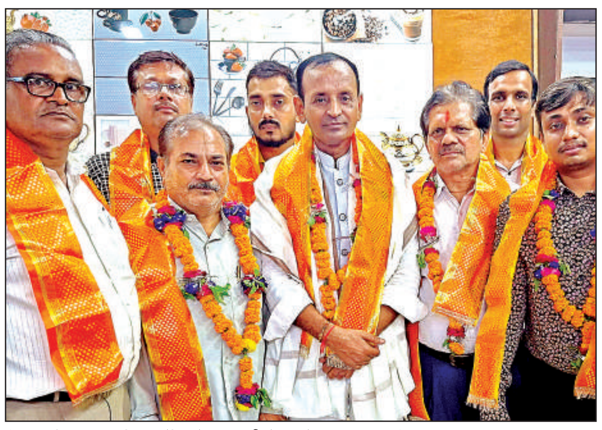
किदवई नगर मार्बल मार्केट में व्यापारी नेताओं का स्वागत किया गया। अमृत विचार

- मार्बल टाइल्स एसोसिएशन ने वरिष्ठ व्यापारी नेताओं का किया स्वागत समारोह

स्वदेशी जागरण मंच ने ट्रंप का पुतला फूंका, नारेबाजी की

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। स्वदेशी जागरण मंच ने स्वदेशी सुरक्षा एवं स्वावलंबन अभियान के अंतर्गत कमला नगर में डोनाल्ड ट्रंप व विदेशी वस्तुओं का पुतला दहन किया। अमेरिकी उत्पाद कोकाकोला को नाली में बहाया।

जय स्वदेशी - जय जय स्वदेशी के नारे लगाए और पेप्सी कोला, एमेजॉन, फ्लिपकार्ट को विरोध जताया। जयघोष में क्षेत्र के लोग भी शामिल हुए। लोगों ने स्वदेशी जागरण मंच के इस अभियान का समर्थन देने के साथ ही संकल्प लिया कि विदेशी सामान का उपयोग नहीं करेंगे। इस दौरान प्रांत सह समन्वयक उपेंद्र त्रिपाठी, प्रांत सह संयोजक केशव बाजपेई, सिद्धार्थ अग्रवाल, श्याम, शिवम, दीपक, नरेश, अतुल, हरि, अमित आदि मौजूद रहे।

ट्रंप का पुतला फूंकते मंच के कार्यकर्ता। अमृत विचार

सिटी ब्रीफ

इनर व्हील क्लब का स्थापना समारोह

कानपुर। आर्य नगर स्थित गैंजेस क्लब में बुधवार को इनर व्हील क्लब फ्लोरेंस द्वारा स्थापना समारोह का आयोजन किया जाएगा। यह कार्यक्रम सेवा, संगति और समर्पण के एक नए वर्ष की शुरुआत का प्रतीक होगा। इसमें नवनियुक्त पदाधिकारी में अध्यक्ष पंखुड़ी गुप्ता, सचिव आराधना गुप्ता, चार्टर अध्यक्ष साक्षी खन्ना, कोषाध्यक्ष सृष्टि माहेश्वरी, आईएसओ तृप्ति अग्रवाल, संपादक सिद्धि मेहता, सीएलसीसी सोनाक्षी सचदेवा, संयुक्त सचिव आशी गुप्ता, उपाध्यक्ष सुश्री ज्योति गुप्ता और आईपीपी निकिता होंगी।

आज होगी एसपीसीई की बैठक

कानपुर। कलेक्ट्रेट स्थित नवीन सभागार में बुधवार को जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह की अध्यक्षता में दोपहर एक बजे एसपीसीए की बैठक आयोजित की जाएगी। इस संबंध में मुख्य पशु चिकित्साधिकारी व सचिव डॉ.आईडीएन चतुर्वेदी के मुताबिक बैठक में पुलिस आयुक्त, नगर आयुक्त, सीडीओ, जिला वन अधिकारी, केडीए के सचिव, जिला पंचायत के अपर मुख्य अधिकारी समेत आदि अधिकारी रहेंगे।

आज यहां पर नहीं रहेगी बिजली

कानपुर। तिलक नगर, भैरव घाट, रानी का बगीचा व मैग्जीन घाट में बिजली सुबह नौ बजे से शाम को पांच बजे तक नहीं रहेगी। टूटी पुलिया बारासिरोही व आसपास के क्षेत्र, लवकुश नगर, टूटी पुलिया मोहन गेस्ट हाउस, गौतम विहार, न्यू शिवली रोड और आसपास क्षेत्र, दादा नगर औद्योगिक क्षेत्र में बिजली सुबह 10 बजे से शाम को चार बजे तक नहीं रहेगी। पनकी पानी की टंकी, हनुमान मंदिर व आसपास क्षेत्र में बिजली सुबह 10 से दोपहर दो बजे तक और रावतपुर गांव में बिजली सुबह नौ बजे से शाम को चार बजे तक नहीं रहेगी।

सीएचसी के ऑपरेशन थियेटर में लगी आग

कानपुर। कल्याणपुर बारासिरोही सीएचसी के ऑपरेशन थियेटर में मंगलवार रात करीब नौ बजे एसी में तेज धमाका होने के बाद आग लग गई। आग ने पूरे ऑपरेशन थियेटर को अपनी चपेट में ले लिया। सूचना पर फजलगंज से फायर यूनिट की गाड़ी नंबर 7655 मौके पर पहुंची। फायर कर्मियों ने मशक्कत कर आग पर काबू पाया।

अब लोकसभा में गूंजा ईएसआईसी अस्पताल

300 बेड के अस्पताल की इमारत हुई खंडहर, सांसद रमेश अवस्थी ने मूलभूत जरूरतों को समझते हुए उठाया मुद्दा

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

लोकसभा में बोलते सांसद रमेश अवस्थी।

अमृत विचार। पांडु नगर बीमा अस्पताल परिसर में 300 बेड के अस्पताल को सुपर स्पेशियलिटी मॉडल हॉस्पिटल बनाने के लिए केंद्र सरकार ने वर्ष 2017 में पहल की थी। प्रस्ताव मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कार्यालय पहुंचा था, लेकिन जिम्मेदार अधिकारियों ने कोई रुचि नहीं दिखाई थी। वर्षों बाद इस अस्पताल का मुद्दा फिर से लोकसभा में गूंजा। कानपुर नगर सांसद रमेश अवस्थी ने जरूरतों को समझते हुए अस्पताल का निर्माण पूरा कराने की मांग रखी है। इससे श्रमिकों में खुशी और अस्पताल का निर्माण फिर से शुरू होने की उम्मीद एक बार फिर से जगी है।

सांसद रमेश अवस्थी ने मंगलवार को लोकसभा में पांडुनगर स्थित ईएसआईसी अस्पताल के नवीनीकरण एवं विस्तार कार्य में हो रही लापरवाही का मुद्दा उठाया। उन्होंने कार्य में अत्यधिक विलंब पर गंभीर चिंता व्यक्त की। कहा कि कर्मचारी राज्य बीमा निगम, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2009 में इस अस्पताल में एक डेंटल कॉलेज और नवीनीकरण कार्य के लिए 254.80 करोड़ रुपये की धनराशि स्वीकृत की गई थी। 2016 में तत्कालीन मंत्री ने 312 बेड के इस अस्पताल के निर्माण की स्वीकृति भी प्रदान की थी और शिलान्यास भी हुआ था। लेकिन इसके बावजूद मंत्रालय, विभागीय अधिकारियों व निर्माण एजेंसियों के आपसी सामंजस्य के अभाव के कारण आज तक यह अस्पताल अधूरा पड़ा है। सांसद ने श्रम एवं रोजगार मंत्री से इस विषय पर ठोस कार्रवाई की मांग की और कहा कि इस संबंध में एक संयुक्त समिति का गठन कर स्थानीय निरीक्षण कराया जाए और संपूर्ण जांच कराई जाए। ताकि कानपुर व आसपास जिले के श्रमिक वर्ग को शीघ्र ही बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हो सकें। उनको इलाज के लिए अन्य अस्पताल न जाना पड़े। बता दें कि अमृत विचार ने ईएसआईसी अस्पताल के अधूरे निर्माण और यहां पर रखे उपकरण क्षतिग्रस्त होने समेत आदि समस्याओं को प्रमुखता से प्रकाशित किया था, तब यह मुद्दा विधानसभा के अंदर सपा विधायक अमिताभ बाजपेयी ने उठाया था। अब सांसद रमेश अवस्थी ने श्रमिकों के हितों को ध्यान में रखते हुए लोकसभा में मुद्दा उठाया है।

अमृत विचार ने उठाया था मामला।

अस्पताल की अराजकता का मुद्दा उठाया था।

तत्कालीन केंद्रीय श्रम मंत्री दत्तात्रेय ने रखी थी अस्पताल की आधारशिला

- वर्ष 2009 से पांडु नगर स्थित बीमा अस्पताल परिसर में 367 करोड़ से प्रस्तावित 6 मंजिला इमारत का निर्माण कार्य पिछले पांच वर्षों से अटका पड़ा है। तत्कालीन केंद्रीय श्रम मंत्री दत्तात्रेय ने वर्ष 2016 में पांडु नगर बीमा अस्पताल परिसर में सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल की आधारशिला रखी थी। लेकिन कुछ समय बाद निर्माण एजेंसी ने काम बंद कर दिया था। मंत्री ने रिपोर्ट के आधार पर वर्ष 2017 में यहां सुपर स्पेशलिटी मॉडल हॉस्पिटल बनाने के लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री को पत्र लिखा था। यह प्रस्ताव दिया था कि निर्माणाधीन अस्पताल को केंद्र सरकार को सौंप दिया जाए। बदले में राज्य सरकार चाहे तो जाजमऊ बीमा अस्पताल ले सकती है। लेकिन यह मामला आज तक लटका है।

इतने धन की हुई बर्बादी

- 367 करोड़ खर्च पर अस्पताल का निर्माण अधूरा।
- 5.5 करोड़ से विद्युत उपकरण, पैनल व ट्रांसफार्मर खरीदे।
- 18 टन सरिया खुले में पड़ी होने से हुई कमजोर
- 09 बड़े जनरेटर खुले में रखे जाने से जंग खा रहे।
- 4.5 करोड़ रुपये लांड्री सेटअप पर कर दिए खर्च।
- 40 फिट खोदाई कर तैयार किए बेस में भरा रहता पानी।

पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद ने महाराजपुर केंद्र में की विपश्यना साधना

पूर्व राष्ट्रपति का स्वागत किया गया।

कानपुर। महाराजपुर के इयोढ़ीघाट स्थित अंतर्राष्ट्रीय धम्म कल्याण केंद्र में मंगलवार को पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने विपश्यना साधना कर आध्यात्मिक ऊर्जा को आत्मसात किया। उन्होंने यह साधना आचार्य शंखवार के सानिध्य में की। वह केंद्र में लगभग तीन घंटे तक रहे। केंद्र के नए भवन का निरीक्षण किया। कहा कि आध्यात्मिक ऊर्जा के लिए विपश्यना साधना परम आवश्यक है। विपश्यना साधना एक प्राचीन भारतीय ध्यान विधि है, जिसकी पुन: खोज लगभग 2500 वर्ष पूर्व भगवान बुद्ध ने की थी। उद्देश्य मन की शांति, समत्वभाव व बौद्धिक स्पष्टता प्राप्त करना और अशांत मानसिक अवस्था को दूर करना है। इस दौरान केंद्र के ट्रस्टी अशोक कुमार साहू, अनूप कुमार साहू, अवधेश कुमार साहू, विनोद कुमार, सुखदेव शुक्ला आदि रहे।

कार्यालय नगर पंचायत सरीला-हमीरपुर

पत्रांक :- 25 / न0पं0स0 / म्यू0 सू0 / 2025-26 दिनांक :- 28.01.2025

सूचना प्रकाशन

(नगर पालिका अधिनियम 1916 की धारा 147 के अन्तर्गत)

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है निम्नांकित आवेदक/आवेदकों द्वारा इस नगर पंचायत के गृहकर अभिलेखों में नवीन कर निर्धारण/नामान्तरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किये गये है। नाम दाखिल किये जाने वाले व्यक्ति का नाम तथा नाम खारिज किये जाने वाले व्यक्ति का नाम पता सहित नियमानुसार अंकित है। उपरोक्त के सम्बन्ध में जिस किसी व्यक्ति को आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति सूचना प्रकाशन तिथि से 30 दिवस के अन्दर अधोहस्ताक्षरी के कार्यलय में प्रस्तुत कर सकता है। बादम्याद अन्यथा की स्थिति में एक पक्षीय कर निर्धारण/नामान्तरण कार्यवाही कर दी जायेगी जिसका उत्तरदायित्व नगर पंचायत सरीला का नहीं होगा।

क्र. सं.	आवेदक का नाम जो दाखिल होना है	विक्रेता / भवन स्वामी का नाम जो खारिज होना है	मुहल्ला	वार्ड सं0	कर निर्धारण / नामान्तरण का आधार
1	श्रीमती रानी पत्नी श्री जीतेन्द्र कुमार निवासी जरिया हालमुकाम सरीला स्टैण्ड से करियारी रोड तहसील सरीला जिला हमीरपुर	श्री विकास वर्मा पुत्र श्री प्रेमचन्द्र निवासी हटवारा कस्बा सरीला तहसील सरीला जिला हमीरपुर	मुहाल हटवारा	वार्ड नं0 01	पंजीकृत विक्रय पत्र

अधिशासी अधिकारी
नगर पंचायत गोहाण्ड – हमीरपुर

नामीबिया और नाइजीरिया के प्रतिनिधि हुए शामिल

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- **सीएसजेएमयू में ग्लोबल बिजनेस समिट का आयोजन**

अमृत विचार। सीएसजेएमयू में ग्लोबल बिजनेस समिट एवं कल्चरल इमर्शन-2025 का आयोजन हुआ। इस समिट में नामीबिया और नाइजीरिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर शामिल हुए। ओपन फोरम चर्चा में विदेशी प्रतिनिधियों और विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों ने संयुक्त शैक्षणिक कार्यक्रम, छात्र-छात्रा विनिमय और फैकल्टी एक्सचेंज प्रोग्राम्स पर विचार-विमर्श किया।

प्रति-कुलपति प्रो. सुधीर कुमार अवस्थी ने कहा कि कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक के विजन के तहत विश्वविद्यालय परिसर में दो वर्ष पहले आईआरएसी सेल की स्थापना की गई थी। इसके माध्यम से विश्वविद्यालय ने अंतरराष्ट्रीयकरण की दिशा में ठोस कदम बढ़ाते हुए अनेक देशों व संस्थाओं के साथ एमओयू किए हैं। विदेशी छात्रों को आमंत्रित किया और सफलतापूर्वक प्रवेश प्रदान किया। विश्वविद्यालय अब अल्पकालिक अंतरराष्ट्रीय प्रोफेसरों की नियुक्ति, छात्र व फैकल्टी विनिमय, सहयोगी शोध, नवाचार और अन्य वैश्विक गतिविधियों में तेजी से आगे बढ़ रहा है। आईआरएसी सेल के अधिष्ठाता प्रो. सुधांशु पांडिया ने बताया कि अब तक करीब 35 विदेशी छात्रों का प्रवेश विश्वविद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रमों में किया जा चुका है, जबकि स्टडी इन इंडिया पोर्टल के माध्यम से 500 से अधिक आवेदन प्राप्त हुए हैं। सभी आवेदनों की सावधानीपूर्वक स्क्रीनिंग के बाद योग्य छात्रों को प्रवेश दिया जा रहा है। आईआरएसी सेल के एसोसिएट डीन डॉ.राजीव मिश्रा ने प्रेजेंटेशन के माध्यम से विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों, सुविधाओं, अधोसंरचना और शैक्षणिक वातावरण की जानकारी दी। इस दौरान एसोसिएट डीन डॉ.प्रभात द्विवेदी, डॉ. विकास सैनी, कुलसचिव राकेश कुमार, नामीबिया से पैनी लिनस, फिडेल नतानियल मेकोंजो, नाइजीरिया से राबिउ महमूद अब्दुल हामिद, मुरतला कमाल फारूक, यूसुफ नाफिसा उमर, अब्बास कुयां मादारो, भारत के अंगद सिंह, अवरीन सिंह थे।

ट्रांसगंगा सिटी पुल की डीपीआर खरी उतरी

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- **प्राधिकरण ने निर्माण के लिए मांगे 799 करोड़ रुपये**

अमृत विचार। वीआईपी रोड से ट्रांसगंगा सिटी को जोड़ने के लिए प्रस्तावित वाई आकार के पुल के लिए शासन 799 करोड़ रुपये मांगे गए हैं। उप्र राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण ने इस संबंध में औद्योगिक विकास विभाग को प्रस्ताव भेजा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्राथमिकता वाले इस प्रोजेक्ट के लिए अगले हफ्ते शासन से वित्तीय स्वीकृति मिलने की उम्मीद है। इस पुल का निर्माण सेतु निर्माण निगम की लखनऊ इकाई द्वारा किया जाएगा।

उप्र सेतु निर्माण निगम ने उप्र राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण के प्रस्ताव पर फोर लेन पुल की डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार की है। वाई आकार का यह पुल ट्रांसगंगा सिटी की तरफ से चार लेन होगा और गंगा में आने के बाद यह दो हिस्सों में बंट कर वाई आकार का हो जाएगा। इसके बाद यह दो- दो लेन का हो जाएगा और इसकी चौड़ाई साढ़े 12- साढ़े 12 मीटर हो जाएगी। उप्र राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण की तरफ से भेजे गए प्रोजेक्ट का परीक्षण औद्योगिक विकास विभाग के विशेषज्ञों ने कर लिया है। प्रोजेक्ट मानक पर खरा पाया गया है। ऐसे में वित्तीय स्वीकृति में कोई बाधा नहीं आएगी। विभाग की मंजूरी के बाद इसे व्यय एवं वित्त समिति के पास भेजा जाएगा। वहां से हरी झंडी के बाद बजट का आवंटन हो जाएगा।

हलीम इंगलिश स्कूल में बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम पेश किए। अमृत विचार

बच्चों ने फौजी बनकर भरा देशभक्ति का जोश

कानपुर। चमनगंज स्थित हलीम मुस्लिम इंग्लिश स्कूल किड्स जोन में स्वतंत्रता दिवस सप्ताह के अंतर्गत बच्चों ने भगत सिंह, झांसी की रानी, महात्मा गांधी और फौजी बनकर बच्चों में देशभक्ति का जोश भरा। बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। बच्चों ने फौजी ड्रेस में तिरंगे को सलामी पेश की। इस अवसर पर अभिभावकों ने तालियां बजाकर बच्चों का उत्साहवर्धन किया। प्रधानाचार्य सबा खान ने बच्चों को पुरस्कृत किया। प्रधानाचार्य ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस महोत्सौहार है जिसे सभी एक साथ मिलकर मनाते हैं। जेबा इखलाक, अर्शिया, मुस्कान मैविश, शबीना, आफरीन, नबा खान एवं जेबा खान ने मेहमानों का शुक्रिया अदा किया।

शिक्षा सिर्फ पढ़ाई नहीं, ज्ञान-कौशल भी

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

दीक्षारंभ कार्यक्रम में मौजूद छात्राएं और स्टाफ। अमृत विचार

अमृत विचार। सिविल लाइंस स्थित दयानन्द गर्ल्स पीजी कॉलेज में आईक्यूएसी ने दीक्षारम्भ कार्यक्रम का आयोजन किया। नवप्रवेशित छात्राओं का स्वागत वरिष्ठ छात्राओं ने रोली कुमकुम व अक्षत का टीका लगाकर किया। प्राचार्या प्रो. वंदना निगम ने नवप्रवेशित छात्राओं को कॉलेज के इतिहास व उपलब्धियों की जानकारी दी। बताया कि शिक्षा सिर्फ पढ़ना ही नहीं, बल्कि ज्ञान और कौशल का विकास, सामाजिक कौशल और मूल्यों का विकास, व्यक्तित्व विकास व सर्वांगीण विकास है। यही हमारी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। कहा कि शिक्षा सिर्फ अपने भविष्य को ही नहीं बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए भी जिम्मेदार बनाती है। ईमानदारी, अनुशासन और आत्मनिर्भरता से इसे जीवन का हिस्सा बनायें। महाविद्यालय की विभिन्न समितियों के समन्वयकों ने भी महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी दी। इस दौरान स्ववित्तपोषित निदेशक प्रो.अर्चना वर्मा, आईक्यूएसी कोऑर्डिनेटर प्रो.सुगन्धा तिवारी, नैक कोआर्डिनेटर प्रो. अलका श्रीवास्तव, कुलानुशासक प्रो. अर्चना श्रीवास्तव व कार्यालय अधीक्षक कृष्णेंद्र कुमार, डॉ. विद्रुम प्रभा आदि मौजूद रहीं।

खेल जगत

आत्माराम अग्रवाल मेमोरियल इंटर स्कूल क्रिकेट टूर्नामेंट

मेथोडिस्ट और गुरु हरराय एकेडमी ने जीते मैच

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते मुख्य अतिथि डीसीपी क्राइम एसएम कासिम आबिदी। अमृत विचार

अमृत विचार। स्व. आत्माराम अग्रवाल मेमोरियल इंटर स्कूल क्रिकेट टूर्नामेंट की शुरुआत मंगलवार को टीएसएच पालिका ग्राउंड पर हुई। पहले मैच में मेथोडिस्ट हाईस्कूल ने क्राइस्टचर्च कॉलेज को 46 रनों से हराया। दूसरे मैच में गुरु हरराय एकेडमी ने बिलाबांग हाईस्कूल को आठ विकेट से शिकस्त दी। गुरु हरराय के वैदिक दीक्षित व मेथोडिस्ट के वैभव त्रिवेदी मैन आफ द मैच रहे।

टीएसएच पालिका ग्राउंड पर टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते मेथोडिस्ट ने 15 ओवर में सात विकेट पर 147 रन बनाए। टीम के कनिष्क ने 26 गेंदों पर 35 और विराट ने 17 गेंदों पर 25 रनों का योगदान दिया। जवाब में क्राइस्टचर्च की पूरी टीम 13.3 ओवर में 101 रन पर लौट गई। मेथोडिस्ट के वैभव ने 12 रन देकर चार विकेट, जबकि यथार्थ पांडेय व सिद्धांत यादव ने 2-2 विकेट झटके। दूसरे लीग मैच में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी बिलाबांग स्कूल की टीम 14.2 ओवर में 89 रन ही बना सकी। जयान ने 16 गेंदों पर 26 और एमडी ओमर ने 13 गेंदों पर 17 रन बनाए। गुरु हरराय के वैदिक दीक्षित ने 3 ओवर में 9 रन देकर 3 विकेट लिए, जबकि आर्यन पटेल ने 2 विकेट झटके। जवाब में गुरु हरराय एकेडमी ने 11 ओवर में दो विकेट पर लक्ष्य पा लिया। वैदिक दीक्षित ने 31 गेंदों पर 43 रन और कप्तान शिवांश शर्मा ने 30 गेंदों पर 26 रन बनाकर नाबाद रहे। प्रतियोगिता के उद्घाटन पर टीएसएच के निदेशक प्रणीत अग्रवाल, मुख्य अतिथि डीसीपी क्राइम एसएम कासिम आबिदी ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया। ओडी स्टेडिया के प्रबंध निदेशक राजीव गर्ग विशिष्ट अतिथि रहे। टीएसएच के क्रिकेट कोच शशिकांत खांडेकर, डायरेक्टर ऑपरेशंस पीके श्रीवास्तव ने आभार जताया। केसीए से मान्यता प्राप्त इस टूर्नामेंट में शहर के 16 स्कूलों की टीमें प्रतिभाग कर रही हैं। जिन्हें चार पूलों में बांटा गया है। चारों पूलों की शीर्ष टीमें सेमीफाइनल में जगह बनाएंगी।

बाबा का दरबार सजा।

श्री टीले वाले हनुमान जी मंदिर का श्रृंगार

कानपुर। श्री टीले वाले हनुमान जी जाजमऊ में मंगलवार को वार्षिकोत्सव मेला लगा जिसमें श्रृंगार, हवन, कीर्तन एवं विशेष झांकियों के दर्शन करने के लिए भक्तों की भीड़ उमड़ी। इस दौरान श्रद्धालुओं ने हनुमान जी को लड्डुओं का भोग लगाया। हनुमान चालीसा का पाठ किया और सुख समृद्धि की कामना की। सर्वाधिकार पदमपत भगवती प्रसाद डारोलिया ने बताया कि मेले में बड़ी संख्या में भक्तों की भीड़ पहुंची।

अमृत विचार एक सम्पूर्ण अखबार

क्लासीफाइड

विज्ञापन हेतु अमृत विचार कार्यालय में सम्पर्क करें

वर्गीकृत विज्ञापन हेतु अमृत विचार अखबार के कार्यालय में सम्पर्क करें

सूचना

मेरा हाईस्कूल वर्ष 2014 अनुक्रमांक 1741568 व इंटरमीडिएट वर्ष 2017 अनुक्रमांक 1087880 के शैक्षिक प्रमाण पत्र वास्तव में खो गये हैं। **रजनीश कुमार पुत्र राम नरेश निवासी जैतापुर पोस्ट तिर्वा जिला कन्नौज।**

सूचना

मै अजय कुमार यादव पुत्र रामकुमार यादव निवासी – नेवलखेड़ा मज़रा डेहवा पर0 व तह0 मोहनलालगंज जिला, लखनऊ का निवासी हूं, मैं भारतीय सेना में नौकरी करता हूं। मेरी पुत्री के आधार कार्ड में आव्या नाम दर्ज है जो कि सही है लेकिन पुत्री का नाम सरकारी दस्तावेजो मे अर्पिता दर्ज है, जो कि त्रुटिपूर्ण है। मेरी पुत्री का सही नाम आव्या है जो कि सही है। अत: मेरी पुत्री को आव्या नाम से जाना व पहचाना जाये।

सूचना

मैने अपना नाम KM SHALINI VAISH से बदलकर SHALINI VAISH रख लिया अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। D/0-DEEP KUMAR VAISH ADD-948 BALMIKI MOHAL SADAR CATT DIST-LUCKNOW-226002(U.P)

सूचना

मैने अपना नाम KM KALPANA SHUKLA से बदलकर KALPANA SHUKLA रख लिया अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। W/0-BRIJ KISHOR SHUKLA R/0-E-6/104 GOMTINAGAR VISTAR SEC-6 DIST-LUCKNOW-226010(U.P)

सूचना

मेरा हाईस्कूल अनुक्रमांक 1222378878 इंटरमीडिएट अनुक्रमांक 2247090840 अंकपत्र / प्रमाणपत्र कहीं खो गया है। **शारुख खां पुत्र नफीस खा निवासी रानीसीर, महरुमुर्तिहा, जमुनहा जनपद श्रावस्ती**

सूचना

Ex- CHEAA सौरभ श्रीवास्तव सं0 180787 F, द्वारा पुत्र के नाम रुद्राक्ष को रुद्राक्ष श्रीवास्तव व जन्मतिथि 18/12/2010 को 18/12/2011 में संशोधन हेतु अनुरोध एफिडेविट नं.– IN UP84638452489617X) पता–79 धर्मपुर, सहयोग विहार गीता वाटिका, गोरखपुर, 273006 उ0प्र0

सूचना

सूचित किया जाता है कि मैं KRISHAN KUMAR S/O JIRAKHAN PRASAD निवासी 545/क/डी –540 शिवपुरम् पारा रोड पोस्ट राजाजीपुरम लखनऊ का रहने वाला हुँ। अब मै ने अपना नाम बादल कर krishan kumar PATEL रख लिया है अब मुझे भविष्य मे मेरे बदले हुए नाम से जाना व पहचाना जाय।

सूचना

मैने अपना नाम JAVED AHMAD से बदलकर JAVED AKHTAR रख लिया है। भविष्य मे मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। S/o-HABIBULLAH नि0–H.No-549, नगपुर खास, अम्बेडकर नगर –224149 (उ0प्र0)

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरा हाईस्कूल वर्ष 2021 का अंकपत्र सह प्रमाणपत्र अनुक्रमांक 212599045 घर से गोंडा जाते समय रास्ते में गिर गया है। **गुलशन कुमार पुत्र राम पियारे यादव, ग्राम गंडाही पूरे बहोरी अहिरन पुरवा गोंडा।**

सूचना

मैंने अपने छोटे पुत्र मो0 शारिक व उसकी बीबी सदा मुमताज को उनके खराब आचरण के कारण अपनी समस्त चल अचल सम्पाति से बेदखल कर उनसे अपने रिश्ते नाते समाप्त कर लिये है। **जुबेदा पत्नी स्व0 मुशर्रफ अली 364/132 चूड़ी वाली गली सआदतगंज, लखनऊ**

सूचना

मैने अपना नाम MOHAMMAD UVAISH से बदलकर MOHD UVAIS रख लिया अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। S/0-LAL MOHAMMAD ADD-298 KITHOORI SAFDARGANJ KITHOORI DIST-BARABANKI-225412 (U.P)

बेदखली सूचना

मैंने अपनी पुत्री कोमल जिसका चाल चलन ठीक न होने, उसके व्यवहार से संतुष्ट न होकर अपनी कुल चल अचल संपत्ति से बेदखल कर संबंध विच्छेद कर लिए हैं। मेरा व मेरे परिवार के अन्य सदस्यों से उसका कोई सरोकार व वास्ता नहीं होगा। अच्छे बुरे कृत्य की वह स्वयं जिम्मेदार होगी। **राजेंद्र प्रसाद पुत्र स्वर्गीय रामचरन निवासी बादा टोला, गंगारामपुर, मल्लावां हरदोई**

बेदखली सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि शपथी का पुत्र अमरनाथ व पुत्र वधु लालती का चाल चलन ठीक नही हें आए दिन शपथिनी के साथ गाली गलौज मारपीट करता है जिससे शपथिनी अपने पुत्र अमरनाथ तथा पुत्र वधु लालती के गलत कृत्य से आजिज आ चुकी है। आज दिनांक से शपथिनी अपने पुत्र व पुत्र वधु को अपनी सारी चल अचल संपति से बेदखल कर रही हूं आज से शपथिनी व उसकी पुत्र व पुत्र वधु से कोई वास्ता सरोकार नही हैं। **शपथिनी कलावती पत्नी स्व0 प्रेम नारायन ग्राम पोस्ट भखरी तहसील बल्दीराय सुलतानपुर**

PUBLIC NOTICE

I, Sharanya Agarwal, d/o Amit Agarwal, r/o 29, Jopling Road, Bihari Bhawan, Lucknow- 226001, like to inform that my graduation (2021-26) marksheets of 2nd year and 3rd year has been lost, issued by Amity University, Lucknow Campus, Enrollment no.-A3211121227. If anyone finds it, kindly contact mobile no. 8957283233.

बेदखली सूचना

मैं **राकेश कुमार वर्मा पुत्र स्व0 पुत्तूलाल वर्मा आधार कार्ड नं0 873758208791 व श्रीमती राज कुमारी वर्मा पत्नी श्री राकेश कुमार वर्मा आधार कार्ड नं0 532897335988 हम दोनों पति–पत्नी निवासीगण पोस्ट मुंशीगंज, हाउस नं0 75, लाल बिहार, लक्ष्मनपुरी कालोनी, नवाबगंज, कोतवाली – बाराबंकी, जिला – बाराबंकी, 225001, उ0 प्र0** के रहने वाले हैं। हम दोनों पति–पत्नी अपने पूरे होश हवास में रहकर, अपना भला– बुरा समझते हुए अपने सबसे बड़े पुत्र को अपनी समस्त चल अचल सम्पत्ति से बेदखल करते हैं।

न्यूज ब्रीफ

पारिवारिक कलह से ऊबा युवक गंगा में कूदा

शुक्लागंज (उन्नाव) अमृत विचार। गंगाघाट कोतवाली क्षेत्र के प्रेम नगर निवासी मनीष (35) के घर में आए दिन विवाद होता था, जिससे वह मानसिक रूप से परेशान था। मंगलवार शाम करीब चार बजे वह नवीन पुल पर पहुंचा और कुछ देर टहलने के बाद रेलिंग पर चढ़कर गंगा में कूद गया। मौके पर मौजूद लोगों ने तुरंत शोर मचाया, जिस पर नाविकों और गोताखोरों ने मशक्कत कर उसकी जान बचाई। गंगाघाट कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और मनीष को समझा-बुझाकर घर भेज दिया। बताया जाता है कि मनीष कानपुर में होमगार्ड है।

बीमारी से ऊब युवती ने निगला था जहर

उन्नाव अमृत विचार। औरास में हुए सड़क हादसे में मृत रामदेवी के शव की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। सूत्र बताते हैं कि रामदेवी क्षय रोग से पीड़ित थी। इससे वह सेप्टीसीमिया का शिकार थी। इससे ऊबकर उसने जहरीला पदार्थ निगल लिया था। फर्रुखाबाद से परिजन उसे लखनऊ ले जा रहे थे। लेकिन रास्ते में उसकी मौत हो गई। संयोग रहा कि उसी समय सड़क हादसा हो गया। जहरीला पदार्थ निगलने की आशंका में बिसरा सुरक्षित किया गया है।

कार की टक्कर से युवक की मौत

उन्नाव अमृत विचार। बारासगवर थानाक्षेत्र के चिलौली गांव निवासी संजय पासवान (35) पुत्र जगदीश गांव निवासी सुरेंद्र कुमार (25) के साथ बाइक से बारा गांव की साप्ताहिक बाजार गया था। देरशाम लौटते समय सामने से आई तेज रफ्तार कार ने लालकुआं-बक्सर मार्ग पर उसकी बाइक में टक्कर मार दी। उछलकर सिर के बल सड़क पर गिरने से संजय गंभीर घायल हो गया। वहीं पीछे बैठे सुरेंद्र को भी चोटें आ गईं। पुलिस ने उन्हें बीघापुर 100 बेड अस्पताल पहुंचाया। जहां डॉक्टर ने संजय को मृत घोषित कर दिया। संजय इंदौर में प्राइवेट नौकरी करता था। रक्षाबंधन मनाने वह गांव आया था। एसओ धर्मेंद्र नाथ मिश्रा ने बताया कि शव का पोस्टमार्टम कराया गया है।

विवाद के बाद फंदे से लटका अधेड़, हुई मौत

उन्नाव अमृत विचार। सदर कोतवाली अंतर्गत मगरवारा चौकी क्षेत्र के दरबारी खेड़ा गांव निवासी राजबहादुर (50) स्व. ईश्वरदीन ऑटो चलाता था। वह शराब का भी लती था। बेटे रामकिशन ने बताया कि पिता रोज नशे में घर आते थे और बेवजह विवाद करते थे। सोमवार को भी वह नशे में घर लौटे और परिजनों ने विवाद किया। उत्पात मचाते हुए उन्होंने बेटे, बेटी व पत्नी को घर से निकल जाने को कहा। इस पर वे सभी बाहर आ गए। थोड़ी देर बाद अंदर से कोई आहट न मिलने पर बेटा अंदर पहुंचा तो पिता का शव आंगन में फंदे से लटका देख उसकी चीख निकल गई। बेटे की सूचना पर पहुंची पुलिस ने जांच के बाद शव मोर्चरी भेजा और मंगलवार को पोस्टमार्टम कराकर परिजनों के सुपुर्द कर दिया।

करंट की चपेट में आने से ट्रैक्टर चालक की मौत

उन्नाव अमृत विचार। बीघापुर कोतवाली क्षेत्र के ओसियां गांव का राजीव (25) पुत्र बुंदेला रावत गांव के दीपू रावत का ट्रैक्टर का चलाता था। दीपू का ट्रैक्टर हाईवे में सफाई का ठेका लिए एक कंपनी में लगा था। जिसमें रोड साफ करने वाली मशीन बंधी थी। राजीव मंगलवार शाम सदर कोतवाली क्षेत्र के गदनखेड़ा चौराहा के पास सफाई में लगा था, तभी मशीन का ब्रश हाईमास्ट के तार में फंस गया। यह देख राजीव नीचे उतरकर ब्रश छुड़ा रहा था तभी तार कटा होने से वह करंट की चपेट में आकर झुलस गया। उसकी चीख सुन वहां से गुजरे एक चालक ने अपनी जेसीबी से ट्रैक्टर में तेज टक्कर मारी तब वह तार से अलग हुआ। घायल हालात में साथी उसे जिला अस्पताल की इमरजेंसी लाए। जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया।

हाथों में तिरंगा, दिल में देशप्रेम का जज्बा, जुबां पर भारत माता की जय...

तिरंगा महोत्सव में देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति ने दर्शकों का मोहा मन, सदर विधायक-डीएम व सीडीओ ने रैली को दिखाई हरी झंडी

कार्यालय संवाददाता उन्नाव

अमृत विचार। शहर के निराला प्रेक्षाग्रह में तिरंगा महोत्सव आयोजन हुआ। बेसिक व माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं द्वारा देशभक्ति गीत के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम की मनमोहक प्रस्तुतियां दी गईं।

जिलाधिकारी गौरांग राठी, सीडीओ कृति राज व नगर पालिका अध्यक्ष श्वेता मिश्रा ने दीप प्रज्ज्वलित कर व मां सरस्वती की मूर्ति पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। जिलाधिकारी ने कहा कि जिले में हर घर तिरंगा का कार्यक्रम शहर से ग्रामीण क्षेत्र तक तिरंगा रैलियां निकालकर किया जा रहा है। कहा कि बहुत से स्वतंत्रता सेनानी हमारे जिले से भी हुए हैं। इसी बहाने हम उनको याद कर लेते हैं। नगर पालिका अध्यक्ष श्वेता मिश्रा ने कहा कि देश को आजादी दिलाने में अपने प्राणों का बलिदान देने वाले वीरों की शहादत को भुलाया नहीं जा सकता है। हर हिंदुस्तानी के घर में तिरंगा फहराना चाहिए। सीडीओ व अध्यक्ष जिला पंचायत ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देने वाले छात्र छात्राओं को प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया। एडीएम सुशील कुमार गोंड, अमिताभ यादव, परियोजना निदेशक, जिला विकास अधिकारी व जिला विद्यालय निरीक्षक सुनील दत्त भी मौजूद रहे। हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत निराला प्रेक्षाग्रह से सदर विधायक पंकज गुप्ता, जिलाधिकारी गौरांग राठी, सीडीओ कृति राज ने तिरंगा रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली में डॉक्टर जीनाथजी दयाल बालिका इंटर कॉलेज, अटल बिहारी इंटर कॉलेज, श्याम कुमारी सेठ बाल निकुंज नेहरू बालिका इंटर कॉलेज आदि विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने हाथ में तिरंगा लेकर व भारत माता के जयकारों के साथ रैली निकाली।

हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना करते सदर विधायक, डीएम, चेयरमैन व सीडीओ।

नवाबगंज में निकाली गई तिरंगा यात्रा में शामिल लोग। अमृत विचार

आजाद की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते पूर्व जिलाध्यक्ष।

तिरंगा यात्रा की अगुवाई करते विधायक श्रीकांत कटियार।

गाजे बाजे के साथ निकली तिरंगा यात्रा

नवाबगंज उन्नाव अमृत विचार। कस्बे में चेयरमैन दिलीप लश्करी की अगुवाई में भाजपा की तिरंगा यात्रा व सम्मान समारोह हुआ जिसमें प्रदेश मंत्री व जिला प्रभारी अर्चना मिश्रा, जिलाध्यक्ष अनुराग अवस्थी, जिला सहकारी बैंक अध्यक्ष अरुण सिंह, हिन्दू जागरण मंच से विमल द्विवेदी सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं, एनसीसी कैडेट्स व भाजपा कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। यात्रा का शुभारंभ श्याम लाल इंटर कॉलेज के पास से हुआ। गाजे बाजे व आजादी के गीतों के साथ छात्र-छात्राओं ने हाथों में तिरंगा लिये नगर व गलियों में भ्रमण किया। इस दौरान नगरवासियों ने घरों की छतों से पुष्पवर्षा कर यात्रा का स्वागत किया। इस दौरान प्रदेश मंत्री अर्चना मिश्रा ने एनसीसी कैप्टन सन्तोष तिवारी सहित पूर्व सैनिकों शौर्य चक्र प्राप्त आनन्द सिंह, आरके यादव, अशोक त्रिपाठी, धीरज सिंह, वीरेंद्र कुमार, सुनील वर्मा, सन्त कुमार, शैलेश त्रिपाठी को प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया। इस दौरान मनोज पांडेय, धर्मेश प्रताप सिंह, शशिकांत राजपूत, अखिलेश गुप्ता, राजेंद्र द्विवेदी, निर्लेश दीक्षित, सशील श्रीवास्तव, विजय प्रताप सिंह, दीपक लश्करी आदि रहे।

विधायक ने की अपनी छतों पर तिरंगा फहराने की अपील

बांगरमऊ उन्नाव अमृत विचार। भाजपा बांगरमऊ ग्रामीण मंडल प्रथम स्थित ग्राम पंचायत बेहटा मुजावर में हर घर तिरंगा यात्रा निकाली गई। इसमें विधायक श्रीकांत कटियार ने लोगों से 15 अगस्त को राष्ट्रीय ध्वज को अपने-अपने भवनों, प्रतिष्ठानों व कार्यालयों पर फहराने व तिरंगे के साथ अपनी सेल्फी हर घर तिरंगा डाट कॉम पर अपलोड करने का आग्रह किया। उनके विधानसभा सत्र के लिए रवाना होने के बाद उनके बेटे अंशुल ब्लाक बांगरमऊ, गंजमुरादाबाद व इंदिरा गांधी महाविद्यालय में आयोजित तिरंगा यात्रा का नेतृत्व किया। उन्होंने सुल्तानपुर, हयात नगर व राजबहादुर खेड़ा में क्रमशः अमर शहीद कैलाश यादव, अमर शहीद रामसिंह यादव व अमर शहीद राकेश पाल के स्मारकों पर पहुंचकर पुष्पांजलि अर्पित की। इस दौरान मंडल अध्यक्ष संदीप सिंह, सोनू सिंह, जिला उपाध्यक्ष अनिल कुशवाहा, अरुणेन्द्र पटेल व अखिलेश सिंह मौजूद रहे।

वंदे मातरम के जयघोष के साथ निकली तिरंगा यात्रा

औरास उन्नाव अमृत विचार। कस्बा औरास स्थित ब्लाक सभागार में हर घर तिरंगा अभियान के तहत मुख्य अतिथि पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष अवधेश कटियार व ब्लॉक प्रमुख ज्ञानेंद्र सिंह की मौजूदगी व मंडल अध्यक्ष सरोज सिंह की अगुवाई में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भोलानाथ की समाधि स्थल पर पुष्पांजलि अर्पित कर यात्रा निकाली गई। भारत माता की जय, वंदे मातरम के उद्घोष के साथ लोग चंद्रशेखर आजाद चौराहे पहुंचे और वहां स्थित आजाद की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। यात्रा में नवीन शर्मा, मंडल महामंत्री विजय सिंह, श्रीराम मौर्य, मंडल उपाध्यक्ष रामजी गुप्ता, नरेंद्र तिवारी, अमित गोस्वामी, शांति सरोज, नोवेश प्रताप सिंह, मंडल मंत्री नीरज शर्मा, देशराज कश्यप, शक्ति केंद्र संयोजक प्रदीप दीक्षित, देवेश सिंह, विनीत सिंह, विपिन चौरसिया आदि रहे।

तिरंगा यात्रा में शामिल मोहान विधायक व अन्य।

युवाओं ने निकाली तिरंगा यात्रा

हसनगंज अमृत विचार। मोहान विधायक बृजेश रावत की अगुवाई में मंगलवार को कस्बा मोहान के गांधी मिशन इंटर कॉलेज से हर घर तिरंगा अभियान को लेकर तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। इसमें भारत माता की जय के उद्घोष के साथ हजारों युवा हाथों में तिरंगा लेकर शामिल हुए। यात्रा कॉलेज से मोहान तिराहे तक निकली। यात्रा से किसी को समस्या न हो इसके लिए पुलिस फोर्स मुस्तैदी से डटा रहा। इसमें मंडल अध्यक्ष रामनरेश सिंह, अरुण दीक्षित, राजन शर्मा, मिलन पांडेय, राहुल पंडित, लिटिल सिंह भी रहे।

जलभराव से त्रस्त कंचन नगर के लोगों का प्रदर्शन, पालिका पर जताया आक्रोश

संवाददाता शुक्लागंज (उन्नाव)

अमृत विचार। नगर पालिका परिषद क्षेत्र के वार्ड 4 स्थित कंचन नगर मोहल्ले में लंबे समय से नाली चोक होने के कारण जलभराव की समस्या से परेशान लोगों का आक्रोश मंगलवार को सड़कों पर फूट पड़ा। मोहल्ले की महिलाओं ने एक टेंट हाउस वाली गली में बीच सड़क पर तख्त लगाकर पालिका प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए प्रदर्शन किया।

लोगों ने बताया कि नाली जाम होने के कारण गली में गंदा पानी भरा है, जिससे आने-जाने में कठिनाई हो रही है। लोगों का कहना था कि सुबह से शाम तक गंदे पानी में रहने से संक्रामक बीमारियों का खतरा बढ़ गया है, मगर नगर पालिका ने अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया। इस समस्या की शिकायत क्षेत्रीय सभासद रीना यादव से कई बार की गई, लेकिन स्थिति जस की तस रही। वार्ड 12 के सभासद अभिषेक द्विवेदी, जो इसी क्षेत्र में रहते हैं, पहुंचे और ईओ को फोन पर समस्या बताई। सूचना मिलने पर एसवीएम प्रभारी अनूप शुक्ला मौके पर पहुंचे और नाला-नाली की तत्काल सफाई कराई।

एसबीएम प्रभारी को पत्र सौंपते सभासद और प्रदर्शनकारी।

बिजली विभाग लगा रहा टेल लेस यूनिट

शुक्लागंज (उन्नाव) अमृत विचार। गर्मी और बारिश के मौसम में बिजली लाइनों में फॉल्ट की घटनाएं बढ़ने से ट्रांसफार्मरों पर अतिरिक्त लोड पड़ रहा है, जिससे वे बार-बार फुंक रहे हैं। इस समस्या के समाधान के लिए बिजली विभाग ने ट्रांसफार्मरों पर टेल लेस यूनिट लगाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। मंगलवार को सीताराम कॉलोनी, तिकुनिया पार्क के पास लगे 450 केवीए के ट्रांसफार्मर पर टेल लेस यूनिट लगाने के लिए जेई चांद बाबू बिजली कर्मियों के साथ मौके पर पहुंचे और स्थापना कार्य कराया। उन्होंने बताया कि टेल लेस यूनिट फॉल्ट के समय ट्रांसफार्मर पर अचानक लोड आने से रोकता है। इस यूनिट में लगा विशेष फ्यूज सबसे पहले उड़ जाता है।

संकुल के खिलाड़ियों का प्रांतीय कबड्डी-खोखो में उत्कृष्ट प्रदर्शन

संवाददाता शुक्लागंज (उन्नाव)

अमृत विचार। 36वीं प्रांतीय कबड्डी और खो-खो दो दिवसीय प्रतियोगिता में सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, एनटीपीसी ऊर्जा विहार ऊंचाहार में आयोजित हुई। इसमें उन्नाव संकुल के सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, गोपिनाथपुरम के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया।

कबड्डी (अंडर-19 बालक वर्ग) में श्लोक, विराट, आशुतोष आदि ने स्वर्ण पदक जीता। खो-खो में अंडर-17 बालिका वर्ग में तपश्या, प्रगति, मानसी, मिष्टि आदि ने स्वर्ण पदक और अंडर-17 बालक वर्ग में आदित्य कश्यप, आदित्य प्रजापति, आशीष आदि ने रजत पदक प्राप्त किया। खेलकूद प्रमुख रमेश कुमार सिंह के नेतृत्व में मिली इस सफलता पर गोपीनाथपुरम सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य श्रवण कुमार ने खिलाड़ियों को आशीर्वाद देते हुए क्षेत्रीय प्रतियोगिता में भी विजय की शुभकामनाएं दीं। इस मौके पर मनोज कुमार सिंह, शिव सिंह, योगेश, रमेश कुमार सिंह समेत अन्य आचार्य उपस्थित रहे।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों के साथ खड़े प्रधानाचार्य व आचार्य।

हत्या के प्रयास के 4 दोषियों को 3-3 साल की सजा

कार्यालय संवाददाता उन्नाव

अमृत विचार। गैर इरादतन हत्या का प्रयास करने के मामले में अंतिम सुनवाई के बाद कोर्ट ने पिता व दो पुत्रों सहित चार दोषियों को 3-3 साल की सजा सुनाई है। साथ ही कोर्ट ने उन पर 45-45 हजार का जुर्माना भी लगाया है। सफीपुर कोतवाली क्षेत्र के पीखी गांव के मजरा नैनीखेड़ा निवासी माधुरी ने पुलिस को तहरीर देकर बताया था कि दो मई-2016 की सुबह 6 बजे गांव के रामेश्वर पुत्र बिंदा सागर उसके भाई राजेंद्र बेटे गंगा सागर व राम सागर ने उससे बंदूक की नोक पर मारपीट की थी। इसमें वह गंभीर घायल हुई थी। उसे बचाने दौड़ी बेटी पिंकी से भी सभी ने मारपीट की थी। तहरीर के आधार पर 7 जून-2016 को पुलिस ने गैर इरादतन हत्या का प्रयास करने की रिपोर्ट दर्ज की थी। आईओ रामकैलाश शुक्ला ने आरोपियों के साक्ष्य एकत्र कर कोर्ट में चार्जशीट पेश की थी। मंगलवार को मुकदमे की अंतिम सुनवाई अपर जिला जज तृतीय की कोर्ट में पूरी हुई। इस दौरान न्यायाधीश ममता सिंह ने शासकीय अधिवक्ता विनय शंकर दीक्षित आशु की दलील व साक्ष्य के आधार पर चारों को दोषी ठहराते हुए 3-3 साल की सजा सुनाई।

पालिका में सिविल रजिस्ट्रेशन सिस्टम ठप, लोग परेशान

शुक्लागंज (उन्नाव) अमृत विचार। नगर पालिका कार्यालय में जन्म और मृत्यु प्रमाणपत्र जारी करने का काम पिछले तीन दिनों से ठप पड़ा है। सिविल रजिस्ट्रेशन सिस्टम (सीआरएस) फेल होने के कारण आवेदकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। जहां सामान्य दिनों में प्रतिदिन तीन दर्जन से अधिक प्रमाणपत्र बनते थे, वहीं अब सर्वर की समस्या के चलते केवल तीन से चार प्रमाणपत्र ही बन पा रहे हैं। सर्वर ठप होने से प्रमाणपत्र संबंधी सभी कार्य प्रभावित हैं। जिन आवेदकों के दस्तावेजों की जांच पूरी हो चुकी है, वे भी पोर्टल पर अपलोड न होने के कारण प्रमाणपत्र नहीं पा रहे हैं।

रोटरी क्लब का मनाया गया प्रथम स्थापना समारोह

कार्यालय संवाददाता उन्नाव

अमृत विचार। रोटरी क्लब ऑफ़ उन्नाव रॉयल का चार्टर प्रेज़ेंटेशन व प्रथम स्थापना समारोह मंगलवार को शहर के आवास विकास कॉलोनी मोहल्ला स्थित एक होटल में आयोजित हुआ। इसमें चार्टर अध्यक्ष रोटरी आशीष शुक्ला, सेक्रेटरी रोटरी डीडी शुक्ला व उनकी कार्यकारिणी का स्थापना समारोह भी हुआ।

मुख्य अतिथि डिस्ट्रिक्ट गवर्नर रो. राजेन विद्यार्थी, आईपीडीजी रो. नीरव निमेश, सदर विधायक पंकज गुप्ता, गेस्ट ऑफ ऑनर पीडीजी रो. डीसी शुक्ला, डीजीई रो. जसबीर भाटिया, प्रेसियस गेस्ट पीडीजी रो. अरविंद श्रीवास्तव, ऑनरेबल गेस्ट नगर पालिकाध्यक्ष प्रतिनिधि प्रवीण मिश्रा भानु की उपस्थिति में कार्यक्रम की शुरुआत गणेश पूजन, दीप प्रज्वलन, राष्ट्रीय गान व गणेश वंदना से हुई। अथितियों ने कहा कि एक नए क्लब का जन्म रोटरी के सेवा नेटवर्क को और सशक्त बनाता है। इस अवसर पर रोटरी संकल्प पत्रिका का विमोचन अतिथियों ने किया। जिसका संपादन रो. जीएस भदौरिया (क्लब ट्रेनर) ने किया। इसमें रो. भक्ति विजय शुक्ला, गौरव अग्रवाल, अजय महरोत्रा, जफर इक़बाल, ओके श्रीवास्तव, अनीता श्रीवास्तव, अमित पांडे, अवनीश शुक्ला, अशोक चतुर्वेदी, एआर ख़ान, कांतिमोहन गुप्ता, राम तनेजा, विशाल सिंह, फूलचन्द्र जायसवाल, प्रेम सिंह, ओपी तिवारी, प्रभात सिन्हा रहे।

पुलिस कर्मियों को ब्रीफ करते एसपी व एएसपी।

पुलिस कर्मियों को दिया गया साइट्रेन प्रशिक्षण

उन्नाव अमृत विचार। साइबर अपराधियों पर नकेल कसने के लिए एसपी दीपक भूकर व एएसपी उत्तरी अखिलेश सिंह ने पुलिस लाइन में साइबर सेल में तैनात पुलिस कर्मियों को साइट्रेन ट्रेनिंग के संबंध में ब्रीफ किया। इस प्रशिक्षण से पुलिस कर्मियों को साइबर अपराधियों से निपटने में मदद मिलेगी। जिले के सभी थानों में स्थापित साइबर हेल्पडेस्क व सेल में तैनात पुलिस कर्मियों को ब्रीफ करते हुए एसपी ने बताया कि साइबर अपराधों से निपटने के लिए पुलिस कर्मियों का प्रशिक्षित होना जरूरी है। एनसीआरबी द्वारा स्थापित साइट्रेन (साइबर क्राइम ट्रेनिंग सेंटर) के माध्यम से पुलिस कर्मियों को नवीनतम तकनीकों व साइबर अपराधों के तरीकों के बारे में जानकारी दी गई है। ताकि वे साइबर अपराधों से प्रभावी ढंग से निपट सकें। एसपी ने कहा कि इस प्रशिक्षण से उन्नाव पुलिस साइबर अपराधों के विरुद्ध अपनी लड़ाई और मजबूत करेगी और आम जनता को साइबर अपराधों से सुरक्षित रखने में मदद करेगी। कहा कि साइबर अपराधों की रोकथाम और जांच के लिए पुलिस कर्मियों का प्रशिक्षित होना आवश्यक है। इससे हमारे पुलिस कर्मी और अधिक सक्षम बनेंगे।

बढ़ी मुसीबत

खतरे के निशान 113 मीटर से मात्र 53 सेमी नीचे बह रही है गंगा

गंगा खतरे के 13 सेमी और आई पास, बाढ़ का खतरा बढ़ा

संवाददाता शुक्लागंज (उन्नाव)

अमृत विचार। लगातार बारिश व पश्चिमी बांधों से पानी छोड़े जाने से गंगा का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। जलस्तर चेतावनी बिंदु पार कर अब खतरे के निशान की ओर है। केन्द्रीय जल आयोग के अनुसार सोमवार शाम 6 बजे गंगा का जलस्तर 112.340 मीटर था, जो मंगलवार सुबह बढ़कर 112.410 मीटर और शाम 6 बजे 112.470 मीटर हो गया। 24 घंटे में करीब 13 सेमी की वृद्धि हुई। अब यह खतरे के निशान 113 मीटर से मात्र 53 सेमी नीचे है।

जलस्तर बढ़ने से गोताखोर, कर्बला, हुसैन नगर, मोहम्मद नगर, शाही नगर, सैय्यद कंपाउंड, तेजीपुरवा, गगनीखेड़ा, मनसुख खेड़ा, अवस्थी फार्म, श्रीनगर और मालवीय नगर सहित कई मोहल्लों में बाढ़ का पानी घुस गया है। इन क्षेत्रों में लोगों को आने-जाने के लिए सरकारी नाव का सहारा लेना पड़ रहा है। विभाग ने प्रभावित क्षेत्रों की बिजली आपूर्ति बंद कर दी है, जिससे लोगों को अंधेरे में रात गुजारनी पड़ रही है। पानी में जहरीले जीव-जंतुओं के खतरे ने भी स्थानीय निवासियों की परेशानी बढ़ा दी है। केन्द्रीय जल आयोग का अनुमान है कि बारिश और पानी छोड़े जाने का सिलसिला जारी रहने पर गंगा का जलस्तर और बढ़ सकता है, जिससे बाढ़ प्रभावित इलाकों में हालात और गंभीर हो सकते हैं।

चंपापुरवा के निचले इलाके में बाढ़ के पानी से घिरे मकान।

बाढ़ को देखते हुए जिले भर में बनाई गईं 33 चौकियां

उन्नाव। कलक्ट्रेट स्थित पन्नालाल सभागार में जिलाधिकारी गौरांग राठी की अध्यक्षता में गंगा नदी के जलस्तर में हो रही लगातार वृद्धि को देखते हुए तैयारियों के संबंध में बैठक हुई। इसमें गंगा के बढ़ते जलस्तर को देखते हुए जिले की चार तहसीलों सदर, सफीपुर, बीघापुर व बांगरमऊ में बाढ़ की तैयारियों पर चर्चा की गई। बताया गया कि जिले की चार तहसीलों में 33 बाढ़ चौकियां बनाई गई हैं। इसमें सदर में 7, सफीपुर में 10, बीघापुर में 6 व बांगरमऊ में 10 चौकियां बनाई गई हैं। साथ ही सभी तहसीलों में 274 नावों व 274 नाविक भी तैनात किये गए हैं। इसके अलावा स्वास्थ्य, पशु, शिक्षा, सिंचाई, पीडब्ल्यूडी व पूर्ति विभाग आदि विभागों को अपने दायित्वों के प्रति निर्देशित किया गया है। जिलाधिकारी ने कहा कि बाढ प्रभावित परिवारों के लिये आटा, चावल, दाल, नमक आलू, तेल, मसाले, चाय पत्ती, मोमबत्ती आदि की किट तैयार रखें। इन क्षेत्रों में तैनात सभी अधिकारी-कर्मचारी अपने क्षेत्रों में भ्रमणशील रहें। उन्होंने बाढ़ संबंधी कन्ट्रोल रूम नम्बर 0515-2970766 व 2970767 और टोल फ्री नम्बर 1077 को सभी बाढ़ क्षेत्र के गावों व बाढ़ चैकियों पर प्रसारित करने के भी निर्देश दिये। बैठक में एडीएम वित्त एवं राजस्व सुशील कुमार गोंड़, एएसपी प्रेमचन्द्र, एसडीएम सदर क्षितिज द्विवेदी, एक्सईएन पीडब्ल्यूडी हरदयाल अहिरवार व सुबोध कुमार, बीएसए संगीता सिंह, एक्सईएन जल निगम ग्रामीण अजीत कुमार, मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डा. महावीर प्रसाद, उप निदेशक कृषि रवि चन्द्र प्रकाश आदि अधिकारी मौजूद रहे।

बाढ़ पीड़ितों का किया स्वास्थ्य परीक्षण

संवाददाता शुक्लागंज (उन्नाव)

अमृत विचार। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में लोगों के स्वास्थ्य को लेकर राष्ट्रीय सचल इकाई की मेडिकल टीम ने निशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण किया। मुख्य चिकित्सा अधिकारी के निर्देशन पर नेशनल मोबाइल मेडिकल के नोडल अधिकारी राहुल मिश्रा के निर्देशानुसार जिला पर्यवेक्षक शिवनायक सिंह टीम के साथ गोताखोर पहुंचे और वहां रह रहे बाढ़ पीड़ितों की स्वास्थ्य जांच कर आवश्यक परामर्श दिया।

इस दौरान मेडिकल टीम में डॉक्टर शुभम सिंह चौहान, फार्मासिस्ट मोहम्मद अनस, लैब टेक्नीशियन मोहम्मद अयूब अली, स्टाफ नर्स नेहा पाल और पायलट महेंद्र कुमार मौजूद रहे। टीम ने प्रभावित क्षेत्र में पहुंचकर कुल 65 मरीजों की जांच की, जिनमें बुखार, त्वचा रोग, दस्त, खांसी-जुकाम और सामान्य कमजोरी के मरीज शामिल थे। जरूरतमंदों को दवाएं भी निःशुल्क वितरित की गईं। जिला पर्यवेक्षक ने बताया कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने के लिए मोबाइल मेडिकल टीम लगातार सक्रिय रहेगी, ताकि कोई भी जरूरतमंद चिकित्सा सुविधा से वंचित न रहे।

बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में एंटी लार्वा का छिड़काव करते पालिका कर्मी।

बाढ़ क्षेत्र में एंटी लार्वा छिड़काव

शुक्लागंज (उन्नाव)अमृत विचार। गंगा नदी के जलस्तर में वृद्धि से नगर के कई मोहल्लों में बाढ़ का पानी भर गया है। पानी भरे होने से संक्रामक बीमारियों के फैलने का खतरा बढ़ गया है। इसे रोकने के लिए मंगलवार को नगर पालिका ने स्वच्छता अभियान चलाया। ईओ मुकेश मिश्रा के निर्देश पर एसबीएम प्रभारी के नेतृत्व में पश्चिमी क्षेत्र के गोताखोर, कर्बला, सैय्यद कंपाउंड, मोहम्मद नगर, शाही नगर, हुसैन नगर, प्रेमनगर, इंदिरा नगर आदि मोहल्लों में पालिका कर्मियों ने बाढ़ के पानी में चूना व एंटी लार्वा दवा का छिड़काव किया।

धमकी का जवाब

पाकिस्तान के फील्ड मार्शल आसिम मुनीर के बयानों का भारतीय विदेश मंत्रालय ने जिस दृढ़ता और कूटनीतिक कुशलता से खंडन कर सटीक उत्तर दिया, वह विश्व कूटनीतिक बिरादरी के लिए एक उत्कृष्ट उदाहरण है। मुनीर की भाषा किसी धमकी देने वाले निम्न स्तरीय बाहुबली जैसी थी- न तो उसमें राजनीतिज्ञों जैसा वाक्-कौशल था, न ही सेना के अति उच्च पदस्थ अधिकारियों जैसी धार। पाकिस्तान के हुक्मरान हों या सैन्य अधिकारी- भारत की निंदा, उसे नीचा दिखाने वाले बड़बोले बयान उनकी राजनीति और करियर चलाने के लिए अनिवार्य तत्व हैं। मुनीर अमेरिका के पाकिस्तानी समुदाय से मुखातिब थे, तो भारत-विरोध में कुछ अतिरेक स्वाभाविक है, लेकिन उन्होंने जोश में होश खोते हुए कहा कि एक परमाणु राष्ट्र के तौर पर अगर हम तबाह हो रहे होंगे, तो हम अपने साथ आधी दुनिया को भी तबाही में ढकेल देंगे। शोचनीय है कि मुनीर यह बात अपने देश में नहीं, बल्कि किसी दूसरे देश अमेरिका की जमीन से कह रहे थे। विदेश जाकर वहां से किसी भी देश को सार्वजनिक रूप से युद्ध की धमकी देना कूटनीतिक शिष्टाचार का लापरवाही भरा उल्लंघन है, पर वे इससे आगे बढ़कर, किसी एक देश भारत को ही नहीं, बल्कि आधी दुनिया को तबाह करने की बात कर रहे थे। असल में, मेहमान के ऐसे व्यवहार से मेजबान देश की गरिमा गिरती है। उस देश की वैधानिकता एवं जिम्मेदारी पर सवाल उठते हैं और दूसरों का भरोसा उस पर से उठता है। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय स्वयं आसानी से समझ सकता है कि ऐसे बयान कितने ग़ैर-ज़िम्मेदाराना हैं। अब अमेरिका इस पर क्या कहेगा और क्या करेगा, यह तो ट्रंप जानें!

मुनीर द्वारा राष्ट्रपति ट्रंप की बात को तस्दीक करते हुए यह कहना कि उन्हें भारत-पाक सीज़फायर के लिए आभार और कई देशों के बीच जंग रुकवाने के लिए शांति का नोबेल मिलना चाहिए- यह ठकुरसुहाती उन्हें या अमेरिका को वैश्विक आलोचनाओं से बचा नहीं सकती। विदेश मंत्रालय ने तीसरे, दोस्ताना देश की जमीन से दिए गए बयानों पर अफसोस जताते हुए कहा कि भारत परमाणु धमकी के आगे नहीं झुकेगा। मुनीर का बयान इस शक को और बढ़ाता है कि पाकिस्तानी सेना और आतंकवादियों के गठजोड़ के चलते वहां परमाणु हथियारों की सुरक्षा और नियंत्रण संदिग्ध है। ऐसा कहकर विदेश मंत्रालय ने मुनीर के इस बयान के बाद पाकिस्तान की नाभिकीय ताकत के इस्तेमाल को लेकर दुनिया भर में संदेह पैदा कर दिया। मुनीर ने कश्मीर को एक अधूरा अंतरराष्ट्रीय एजेंडा बताते हुए कहा कि यह हमारी 'गले की नस' है। इस पर विदेश मंत्रालय का संक्षिप्त और सटीक उत्तर सर्वथा उचित था कि कोई विदेशी या बाहरी चीज़ किसी के गले में कैसे अटक सकती है? असल में मुनीर भारतीय मीडिया में वायुसेना और सेना प्रमुख के उन बयानों को पढ़कर तिलमिलाए हुए हैं, जिसमें महज 82 घंटे में पाकिस्तान की हालत पतली होने की पोल खुली थी और इसी के बाद उन्हें फील्ड मार्शल बनाया गया था।

प्रसंगवश

खेतों में फिर से दिखेंगे राज्य पक्षी सारस

आज के विकसित और आधुनिक युग में हमें स्वीकार करना चाहिए कि इस धरती पर सिर्फ हमारा ही अधिकार नहीं है। अपितु इसके विभिन्न भागों में विद्यमान करोड़ों प्रजातियों का भी इस पर उतना ही अधिकार है, जितना हमारा। धरती पर हमारे अस्तित्व को बचाए रखने में समस्त प्रकार की जैवविविधिता को बनाए रखना जरूरी है। उत्तर प्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड की पहल पर देश का सबसे बड़े जनसंख्या घनत्व वाले उत्तर प्रदेश में 11,45,178 हेक्टेयर क्षेत्र आर्द्र भूमि (वेटलैंड)

सुरेंद्र अग्निहोत्री
वरिष्ठ पत्रकार

में रहने वाले जीवों और उनकी विविधता के संरक्षण के लिए जैव विविधता अधिनियम 2002 के अंतर्गत बोर्ड गठन करके सरकार द्वारा संरक्षण का कार्य शुरू किया गया है। प्रदेश के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग राज्य पक्षी सारस को संरक्षण दे रहा है। सरकारी प्रयासों के परिणाम सार्थक हो रहे हैं। सारस (सारस क्रेन) ग्रुइडी कुल का सदस्य है। पूरे विश्व में इसकी कुल आठ जातियां पाई जाती हैं। इनमें से चार भारत में पाई जाती हैं। विशेषतः गंगीय प्रदेशों के मैदानी भाग इनके प्रिय आवासीय क्षेत्र हैं। भारत में इस कुल के चार अन्य सदस्य भी पाए जाते हैं। यह हैं साइबेरियन क्रेन, कॉमन क्रेन, डेमॉयसेल क्रेन, ब्लैक नेक्ड क्रेन। यह सभी शीत कालीन प्रवासी हैं। हमारे देश के अपेक्षाकृत गर्म भागों की झीलों और तालाबों के पास यह हर साल आते हैं।

सारस उत्तर प्रदेश के समस्त मैदानी क्षेत्रों में देखा जाता है, किंतु इटावा, मैनपुरी, औरैया, एटा, अलीगढ़, शाहजहांपुर आदि जिलों में बड़े-बड़े जलीय एवं दलदली क्षेत्र (वेटलैंड) होने के कारण वहां इसके अपेक्षाकृत बड़े झुंड दिखाई पड़ते हैं। सारस स्लेटी रंग का क्रौंच है, जिसके पैर और चोंच लाल होते हैं। गर्दन और सिर सुर्ख लाल और टोपी सिलेटी-हरी होती है। इसके बच्चे भूरे रंग के होते हैं, परंतु बड़े होने पर स्लेटी हो जाते हैं। देश के पूर्वात्तर क्षेत्र में पाई जाने वाली सारस की दूसरी उप प्रजाति, अधिक गहरे सलेटी रंग की होती है। प्रायः जोड़ में या परिवार में देखे जाते हैं। कभी-कभी बड़े समूहों में भी दिखाई देते हैं। गांवों में खेतों के समीप निर्भय होकर विचरण करते हैं। अधिक समीप जाने पर उड़ जाते हैं। शाम को विश्राम स्थलों पर जमा होते हैं। खुला कृषि क्षेत्र, दलदली भूमि, झील, तालाब, नहर और नदी का किनारा आदि मुख्य प्राकृतिक आवास हैं। जलीय पौधों की जड़ और स्कन्ध, मुख्य फसलों के दाने, मेढक, मछली, छिपकली, सांप और कीड़े-मकोड़े इनके आहार हैं। जुलाई से दिसंबर के मध्य ही प्रजनन करता है। इनका प्रणय नृत्य आकर्षक होता है। ये प्रणय निवेदन विभिन्न तरह से पंखों को फड़फड़ाकर, अपने स्थान पर कूद कर, थोड़ी दूरी तक गोलाई में दौड़ कर और छोटे घास एवं लकड़ियों को उछाल कर करते हैं। इनका घोंसला पानी भरे धान के खेत, झील और तालाब के मध्य घास-फूस के ढेर पर बना होता है। मादा सारस एक बार में हल्के गुलाबी या सफेद रंग के दो अंडे देती है। नर और मादा सारस घोंसले की रक्षा करते हैं। जन्म के बाद इनके बच्चे लगभग एक वर्ष तक साथ रहते हैं।

प्रदेश में 2021 में 17329 सारस पाए गए थे। 2022 में यह संख्या बढ़कर 19188 हो गई थी। 2023 में यह संख्या बढ़कर 19522 हो गई थी। संरक्षण के 2010 के आंकड़े से देखें तो 2023 में यह सख्या 7,617 हुई है। सारस (Stork Bird) वाइल्ड लाइफ प्रोटेक्शन एक्ट के तहत सरंक्षित पक्षी है। सारस पक्षी का विशिष्ट सांस्कृतिक महत्व भी है। रामायण की प्रथम कविता का श्रेय सारस पक्षी को जाता है। रामायण का आरंभ एक प्रणयरत सारस युगल के वर्णन से होता है। प्रातः काल की बेला में महर्षि वाल्मीकि इसके द्रष्टा हैं। तभी एक आखेटक द्वारा इस जोड़े में से एक की हत्या कर दी जाती है। जोड़ का दूसरा पक्षी इसके वियोग में प्राण दे देता है। ऋषि उस आखेटक को श्राप देते हैं। सारस उत्तर प्रदेश का राज्य पक्षी है। यह विश्व के उड़ने वाले पक्षियों में सबसे ऊंचा पक्षी है। वयस्क नर की ऊंचाई लगभग 156-180 सेमी तक होती है। नर एवं मादा देखने में एक समान होते हैं। यह अकेला क्रेन है, जो हिमालय के दक्षिणी भाग में प्रजनन करता है। इनके प्राकृतिक आवास में लगातार कमी के साथ-साथ इनके घोसलों से अंडे चोरी होना या कुत्ते, कौओं द्वारा नष्ट होने से नये सारसों का जन्म न होना सबसे चिंता का सबब है।

जो व्यक्ति इस बात से डरता है कि उसे कष्ट होगा, वह अपने भय के कारण पहले ही कष्ट झेल चुका है।
–**माइकल डी मोंटेन**, फ्रांसीसी लेखक

नीति नहीं, नीयत के कारण बदहाल है शिक्षा व्यवस्था

अरविंद रावल
लेखक

केंद्र या राज्य सरकार की तमाम योजनाओं का मकसद देश और राज्य के लोगों के विकास से जुड़ा होता है, फिर जमीनी धरातल पर सरकार की योजनाओं की सफलता या असफलता का सारा दारोमदार भी योजनाओं से जुड़े संबंधित विभाग के अधिकारीयों और कर्मचारियों की नीयत के ऊपर निर्भर करता है! यदि ऊपर से नीयत साफ है तो क्या मजाल नीचे जमीनी धरातल पर योजनाएं साकार रूप न ले सकें। देश में कई शासकीय योजनाएं ऐसी हैं, जो तंत्र के लोगों की साफ नीयत की वजह से आज भी देश के विकास में मील का पत्थर साबित हो रही हैं। आज देश हर क्षेत्र में प्रगति भी कर रहा है, लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में जितनी प्रगति होनी चाहिए थी, वह नहीं हो सकी है। समझा जा सकता है कि नीति तो ठीक है, लेकिन योजना को लागू करने की नीयत दुरुस्त नहीं है! देश में एक मानसिकता आम हो गई है कि जब भी कोई सरकारी योजना से अपेक्षित परिणाम नहीं आते हैं, तो हम सरकार की योजना और उसकी नीति को कोसते हैं। समझना होगा कि योजनाओं से आशातीत लाभ उदासीनता और लापरवाही की वजह से नहीं मिल पाता है। शिक्षा ही नहीं सरकार की जन हितैषी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ जनता को उतना नहीं मिल पाता, जितने का कि सरकार ने उन्हें हकदार बनाया है। देश की सरकारी शिक्षा व्यवस्था की बदहाली की भी यही वजह है, लेकिन इसके लिए शिक्षक को ही दोषी ठहराना न्याय संगत नहीं होगा।

इसे देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि हमारी सरकारी शिक्षा व्यवस्था भी तंत्र में ऊंचे ओहदे पर बैठे कुछ भ्रष्ट नीयत के लोगों का शिकार होकर रह गई है। शिक्षा के क्षेत्र में केंद्र और राज्य सरकारें करोड़ों रुपये हर साल खर्च करती है। इसके बाद भी यदि उल्लेखनीय परिणाम या सुधार दिखाई नहीं देता है तो सवाल उठना तय है। शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 को लागू करने की आवश्यकता भी इसलिए हुई कि देश में जिन दादा, नाना या माता-पिता की पूरी एक पीढ़ी ने कभी स्कूल नहीं देखा, आगे की नस्ल शिक्षित हो। केंद्र सरकार के शिक्षा के अधिकार अधिनियम में देश के छह से 14 वर्ष तक की उम्र के सभी बच्चों के लिए कक्षा 8वीं तक शिक्षा अनिवार्य की गई है। अधिनियम के तहत कक्षा एक से आठ तक में किसी भी बच्चे को फेल नहीं करने का निर्णय लिया गया है, ताकि शिक्षा से वंचित परिवार का बच्चा आठ वर्ष तक बिना फेल के भय से पाठशाला से जुड़कर नैतिकता, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, नियमितता, देशभक्ति, समर्पण, मानवीयता, परोपकार आदि के भाव शिक्षकों के माध्यम से सीखकर शिक्षा के प्रति रुचि लेने लगे। शिक्षा के अधिकार अधिनियम की तहत केंद्र और राज्य सरकार निःशुल्क शिक्षा की तहत कक्षा एक से आठ तक के सभी बच्चों को निःशुल्क पाठ्य पुस्तक, साल के दो जोड़ी ड्रेस, मध्यान्ह भोजन, छात्रवृत्ति आदि कई प्रकार की सुविधाएं निःशुल्क प्रदान करती हैं, ताकि कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे।

> शिक्षा और उसके स्तर को बेहतर करने के लिए तमाम योजनाओं पर हर साल करोड़ों रुपये खर्च किए जाते हैं। इसके बावजूद शिक्षा का स्तर गिर रहा है, तो नीयत पर सवाल उठना लाजमी है।

कुछ लोग सरकारी शिक्षा की बदहाली के लिए कक्षा एक से आठ तक फेल नहीं करने के नियम को मानते हों, लेकिन सिर्फ पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर बच्चो को फेल करना एक तरह का अत्याचार है। इससे बच्चे का सर्वांगीण विकास कुंठित होकर अवरुद्ध हो जाता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश बच्चे का सर्वांगीण विकास करना है, तो पुस्तकीय ज्ञान के अलावा अन्य पहलुओं के आधार पर भी उसे कक्षोन्नत किया जाना चाहिए। यदि बच्चा कक्षा एक से आठ तक सतत आठ वर्ष तक स्कूल आता है, तो निश्चित ही उसे पढ़ना और लिखना दोनों ही आना चाहिए। यदि नियमित आठ वर्ष स्कूल आने के बाद भी कक्षा आठ में बच्चे को लिखना-पढ़ना नहीं आता है तो इसके लिए निःसंदेह शिक्षक और हमारा शिक्षा तंत्र दोनों ही जिम्मेदार हैं। यह सरकार के शिक्षा के विकास के दावों पर प्रश्न चिन्ह भी लगाती है?

शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 में बने कानून के तहत ही राष्ट्रीय कार्यक्रम जनगणना और निर्वाचन को छोड़ शिक्षक को गैर शैक्षणिक कार्यों से मुक्ति प्रदान पाने का हक भी प्राप्त हुआ है। वर्तमान में इस सच्चाई को भी स्वीकारने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि कुछ शिक्षक पाठशाला में बच्चों के अध्यापन कार्य से ज्यादा रुचि अन्य गैर शैक्षणिक कार्य करने में रखते हैं, जिसके चलते स्थानीय प्रशासन कर्मचारियों की कमी का हवाला देकर शिक्षक को स्कूल से इतर अन्य गैर शैक्षणिक कार्यों में सलग्न कर देते हैं।

शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 के कानून के तहत सरकारी स्कूलों में 30 या 35 बच्चों पर एक शिक्षक का प्रावधान किया गया है, लेकिन क्या शिक्षा तंत्र में बैठे जिम्मेदार लोगों ने छात्र अनुपात में शिक्षकों की व्यवस्था की है? यदि नहीं तो फिर कैसे शिक्षा में गुणवत्ता आएगी? शिक्षा में गुणवत्ता बड़े-बड़े भवन बनाने या बड़े नाम रख देने से या शिक्षा को हाईटेक बना देने से नहीं आएगी, शिक्षा में गुणवत्ता तो स्कूल में शिक्षक के होने पर ही आएगी। यदि पर्याप्त शिक्षकों के बाद भी शिक्षा में गुणवत्ता नहीं दिखाई देती है, तो यह एक बहुत गंभीर प्रश्न है, जिस पर सरकार समाज और शिक्षक तीनों को ही मंथन करना आवश्यक होगा।

वर्तमान परिदृश्य में यदि देश की सरकारी शिक्षा को बदहाली से मुक्ति दिलाना है, तो केंद्र सरकार को एक कानून लाकर देश भर के समस्त सरकारी अधिकारी -कर्मचारियों के बच्चों के साथ-साथ पंच से राष्ट्रपति के पद तक जितने भी संवैधानिक पदों पर आसीन जनप्रतिनिधि हैं, उन सभी के बच्चों को सरकारी स्कूलों में कम से कम तीन वर्ष तक अध्ययन करने की अनिवार्यता को लागू किया जाए। इससे सरकारी शिक्षा के क्षेत्र में छाई उदासीनता के बादल स्वतः हटने लग जाएंगे। दूसरे, यदि वास्तव में सरकारी शिक्षा को बदहाली से मुक्ति दिलाना है, तो समूचे तंत्र की सोच को बदलना होगा। सभी को अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का ईमानदारी से पालन करना होगा, अन्यथा नीतियां कितनी भी अच्छी हों यदि उनका क्रियान्वयन का तरीका गलत है तो स्थिति जस की तस ही बनी रहेगी।

आमने सामने

जल-जीवन मिशन के गांव में आधे काम हुए हैं। गांवों में पानी नहीं आ रहा। पानी की टंकियां गिर रही हैं। जल शक्ति मंत्री ने जो जवाब दिए वो झूठे थे।
– मो. फहीम इरफान
विधायक
समाजवादी पार्टी

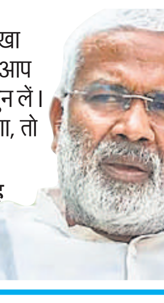

विधायक अपनी बीवी की कसम खा लें कि गांव में पानी नहीं आ रहा। आप पश्चिम यूपी का कोई भी जिला चुन लें। वहां गांव में पानी नहीं आ रहा होगा, तो मैं इस्तीफा दे दूंगा।
– स्वतंत्र देव सिंह
जल शक्ति मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

जय श्रीराम से जय सियाराम की ओर बढ़ें

अमित त्यागी
स्तंभकार एवं राष्ट्रवादी विचारक

शब्दों के मायने होते हैं। आस्थाओं के प्रतीकात्मक स्वरूप होते हैं। वैश्विक अशांति के मध्य भारत मानसिक शांति और आध्यत्मिक उन्नति का प्रेरणा स्रोत बनकर उभरा है। भारत की आध्यात्मिक चेतना का केंद्र प्रभु श्रीराम और श्रीकृष्ण हैं। प्रभु श्रीराम की अवधी में रामचरित मानस सहित कई भाषाओं में कथाएं हैं। तुलसीदास ने अवधी, वाल्मीकी और कालीदास ने संस्कृत में राम का चरित्र चित्रण किया तो कन्नड में ऋषि कंबन द्वारा रचित 'कंब रामायण' में राम के चरित्र का विवरण मिलता है। भारत के बाहर चीन के 'लियो ताउत्स चिंग' का कथानक वाल्मीकि रामायण से संबंधित है। चीन के उपन्यासकार उचेंग की कथा 'द मंकी हसी ऊंचि' राम भक्त हनुमान की चीनी कथा है। इसके साथ-साथ थाईलैंड में 'रामकियेन', इंडोनेशिया में 'ककविन रामायण', लाओस में 'फालाम' एवं 'पोमचाक' है तो तमिल में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की 'तिरुमगन रामायण'। इतना ही नहीं दक्षिण एशिया के देशों मलेशिया, कंबोडिया, श्रीलंका एवं फिलीपींस तक राम के चरित्र की व्यापकता फैली हुई है। सिर्फ विदेशों में ही नहीं, बल्कि भारत के अंदर भी कई मुस्लिम लेखकों और विचारकों ने प्रभु राम के चरित्र पर उल्लेखनीय काम किया है। अल्लामा इकबाल राम के लिए कहते हैं, 'है राम के वजूद पर हिंदोस्तां को नाज, अहले नज़र समझते हैं उनको इमामे हिंद'। सागर निजामी कहते हैं, 'साहिल ए सरयू यहां गंगा यहां जमुना यहां, कृष्ण और राधा यहां, राम यहां सीता यहां।

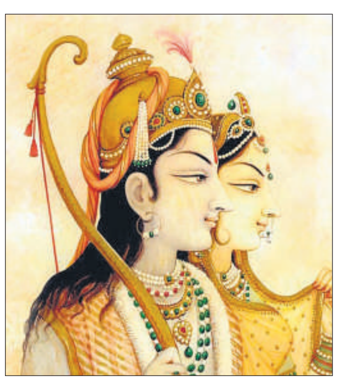

हिंदीओं के दिल में बाकी है मुहब्बत राम की, मिट नहीं सकती क़यामत तक, हुकूमत राम की'।

> प्रभु श्रीराम की कथा दुनिया भर में प्रचलित है। दक्षिण एशिया के देशों मलेशिया, कंबोडिया, श्रीलंका और फिलीपींस तक राम के चरित्र की व्यापकता फैली हुई है।

राम की हुकूमत सदियों तक इसलिए बाकी है, क्योंकि राम ने अपने स्वार्थ के लिए विजय प्राप्त नहीं की। बालि और रावण का वध किया तो सुग्रीव और विभीषण को वहां का राजा बनाया। लक्ष्मण से संवाद में राम कहते हैं, 'अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मणः रोचते। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'।। इसका अर्थ है, 'हे लक्ष्मण, सोने की लंका भी मुझे अच्छी नहीं लगती है। माता और मातृभूमि मुझे स्वर्ग से भी बढ़कर है।' इसी तरह कबीर भी परमार्थ को जीवन का दर्शन बताते हैं। राम का जीवन भी परमार्थ का जीवन ही रहा। रामराज में अपने लिए नहीं, दूसरे के लिए जीवन जीने का वास्तविक चिंतन है। कबीर कहते हैं, 'मरूं पर मांगू नहीं, अपने तन के काज। परमारथ के कारने, मोहिं न आवै लाज'। इसका अर्थ है कि मैं मर जाऊंगा किन्तु अपने शरीर के स्वार्थ के लिए नहीं मांगूंगा, परन्तु परमार्थ के लिए मांगने में मुझे लज्जा नहीं लगती।

जब वैश्विक स्तर पर विचारधाराओं का टकराव देखा जा रहा है तब संपूर्ण विश्व वैश्विक शांति और स्थायित्व की राह देख रहा है। विभिन्न संस्कृतियों की विचारधारा वाले देश आज परस्पर वर्चस्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। इन विचारधाराओं के कुछ समर्थक अपने देश में भी अस्थिरता फैला रहे हैं, उनसे सतर्क रहने की आवश्यकता है। भारतीय ज्ञान परंपरा विदेशियों को वैश्विक अस्थिरता के मध्य एक मार्ग प्रदान कर रही है। भारत वैश्विक स्तर पर एक बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभर रहा है। यह एक अच्छा संकेत है। इन सबके मध्य हमें कुछ सतर्क रहने की भी आवश्यकता है। जिस तरह धार्मिक स्थानों को पर्यटन के रूप में तैयार किया जा रहा है, उससे राजस्व की प्राप्ति तो हो रही है, किंतु धार्मिक आस्था के केंद्र खिलवाड़ का माध्यम बन रहे हैं।

धार्मिक स्थल यदि आस्था के साथ पर्यटन से जुड़े रहेंगे तो शुभ संकेत हैं। मौज-मस्ती के लिए होने वाला धार्मिक पर्यटन सांस्कृतिक जड़ों को कमजोर कर देता है। श्रीराम मंदिर निर्माण को लगभग देढ़ वर्ष पूर्ण हो गया है। अब भारतीय नागरिकों को भी अपने उत्तरदायित्वों की गंभीरता को समझना होगा। सिर्फ हिंदुत्व का नहीं बल्कि हिंदुनेस का आचरण करना होगा। युद्ध उद्घोष जय श्रीराम के स्थान पर जय सियाराम का अभिवादन लोगों को परस्पर जोड़ने का काम करता है।

सामयिकी

जलवायु परिवर्तनः संकट की तरफ बढ़ती दुनिया

हाल ही में एक बार फिर दुनिया भर में आई भूस्खलन और बाढ़ की लगातार घटनाओं ने जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। असल में अब जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक संकट बन गया है, जिसके प्रभाव हर देश में अलग-अलग रूप में सामने आते हैं। अगर भारत और अमेरिका जैसी शक्तियों की बात की जाए, तो दोनों ही देश जलवायु परिवर्तन से प्रभावित हो रहें हैं, लेकिन इनके भौगोलिक, पर्यावरणीय और विकासात्मक अंतर के कारण इन प्रभावों की प्रकृति भिन्न है। भारत में मानसूनी जलवायु के कारण वर्षा एक सीमित अवधि में अधिक मात्रा में होती है, जिससे पहाड़ी क्षेत्रों में भूस्खलन की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं। हिमालय घाटी, उत्तराखंड, हिमाचल और पूर्वोत्तर राज्यों में अत्यधिक वर्षा, हिमनदों के पिघलने और वनों की कटाई जैसे कारण भूस्खलन के पीछे प्रमुख हैं। दूसरी ओर, अमेरिका में विशेष रूप से कैलिफोर्निया और वाशिंगटन जैसे राज्यों में जंगलों की आग, अचानक भारी वर्षा और पर्वतीय ढलानों पर बसे क्षेत्रों में मानवीय गतिविधियां भूस्खलन को जन्म देती है। भारत में भूस्खलन

डॉ. नीलू तिवारी
लेखिका

के खतरे को भांपने और चेतावनी देने की प्रणाली सीमित है, जबकि अमेरिका में अत्याधुनिक सेटेलाइट और मौसम पूर्वानुमान प्रणाली के माध्यम से अधिक प्रभावशाली पूर्व चेतावनी दी जाती है। भूस्खलन के कारण न केवल सड़कों, पुलों और भवनों को क्षति पहुंच रही है, बल्कि पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का जीवन भी असुरक्षित हो गया है। 2023 में हिमाचल और उत्तराखंड जैसे राज्यों में लैंडस्लाइड और बाढ़ के चलते हजारों लोगों को विस्थापित होना पड़ा। स्कूल और अस्पताल क्षतिग्रस्त हुए और पर्यटकों की आवाजाही ठप पड़ी, जिससे इन राज्यों की अर्थव्यवस्था पर भी गहरा असर पड़ा।

हमें इस तथ्य की ओर देखना होगा कि यदि हमने जलवायु परिवर्तन को गंभीरता से नहीं लिया तो भारत में प्राकृतिक आपदाओं की संख्या और तीव्रता आने वाले वर्षों में और बढ़ेगी। नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं, पर्यावरणविदों और आम नागरिकों को मिलकर इस दिशा में सतर्कता और जागरुकता से काम करने की आवश्यकता है। समय की यह जरूरत न केवल शिक्षा और मीडिया के लिए उपयोगी है, बल्कि आपदा प्रबंधन, पर्यावरण नीति निर्माण और सतत विकास से जुड़े क्षेत्रों में कार्य कर रहे सभी लोगों के लिए मार्गदर्शन का कार्य करता है। जलवायु परिवर्तन जैसे सामयिक मुद्दे की प्रासंगिकता इसलिए और भी बढ़ जाती है, क्योंकि यह केवल समस्या को नहीं दर्शाता बल्कि समाधान की दिशा में सोचने के लिए भी प्रेरित करता है। पहले जहां भूस्खलन केवल भारी वर्षा या भूकंप के बाद होता था, अब यह बिना किसी पूर्व सूचना के भी घटित हो सकता है। इसका मुख्य कारण है जलवायु में आए तेज बदलाव जैसे कि असामान्य और अत्यधिक वर्षा, बर्फबारी का असंतुलन और वनों की अंधाधुंध कटाई। जलवायु परिवर्तन ने न केवल वर्षा के स्वरूप को बदल दिया है, बल्कि यह भी देखा गया है कि अब वर्षा कम समय में अधिक मात्रा में होती है, जिससे मिट्टी की पकड़ कमजोर हो जाती है और ढलानों से मलबा फिसलने लगता है। हिमालयी राज्यों जैसे उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम और जम्मू-कश्मीर में भूस्खलन की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। साल 2023 में हिमाचल प्रदेश में रिकॉर्ड तोड़ बारिश ने कई स्थानों पर बड़े भूस्खलनों को जन्म दिया, जिससे सैकड़ों घर और सड़कें बर्बाद हो गईं। केरल और नॉर्थ-ईस्ट राज्यों में भी भारी वर्षा के बाद भूस्खलन आम हो गया है। जलवायु वैज्ञानिकों का कहना है कि पहाड़ी इलाकों में सतही तापमान में वृद्धि से बर्फ तेजी से पिघल रही है और उसकी वजह से नीचे की चट्टानों की स्थिरता प्रभावित हो रही है। इसके साथ-साथ मानवीय गतिविधियां जैसे अवैज्ञानिक निर्माण, पेड़ों की कटाई और अवैध खनन भी इस संकट को और बढ़ा रहे हैं। आंकड़ों के अनुसार, भारत में हर साल औसतन 300 से अधिक भूस्खलन दर्ज किए जाते हैं। इनमें से कई जानलेवा साबित होते हैं और आर्थिक दृष्टि से भी नुकसान पहुंचाते हैं। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक संकट बन चुका है, जो मानव जीवन, जैव विविधता और आर्थिक संरचनाओं को गहराई से प्रभावित कर रहा है। इस चुनौती से निपटने के लिए वैश्विक सहयोग की आवश्यकता है।

सोशल फोरम

मुहब्बत की दुकान

फोटो में दिख रही यह बंद दुकान दीनानाथ जी की है, जो इंडिया-पाकिस्तान बटवारे के वक्त बहुत अफसोस के साथ इस दुकान को पाकिस्तान छोड़कर इंडिया चले आए। आते वक्त बहुत रोए ओर पूरे गांव को भी रुलाया। फिर गांव के लोगों को यह दिलासा दिलाया कि मैं वापस आप लोगों के पास लौट कर आऊंगा। पाकिस्तान के बलोचिस्तान प्रोविंस के जिला लोरा लाई में मौजूद इस दुकान पर

अजित सिंह
ब्लॉगर

अभी तक वही ताला लगा है, जो दुकानदार दीनानाथ जी आते वक्त लगाकर चाबी अपने साथ ले आए थे। 73 साल से यह दुकान बंद पड़ी है। पाकिस्तानी मकान मालिक, जो अब इस दुनिया में नहीं रहे, उन्होंने एक कदम आगे बढ़ाते हुए वसीयत कर दी कि इस दुकान का ताला कभी तोड़ना नहीं, जब तक दुकानदार वापिस नहीं आता। इस दुकान के मालिक के मरने के बावजूद उनके बच्चों ने भी इस दुकान का ताला नहीं तोड़ा।

वसीयत में लिखा कि मैंने उस दुकानदार को जुबान दी है कि यह दुकान तुम्हारे आने तक बंद रहेगी। मकान मालिक की औलादों ने आज तक उस ताले को हाथ तक नहीं लगाया, हालांकि उन्हें मालूम है कि दुकानदार यानी दीनानाथ जी इस दुनिया में नही रहे, लेकिन वफा की यादगार के तौर पर अब तक यह दुकान दो इंसानों के बीच यादगार की मिसाल बन गई है। कमाल के बंदे थे दोनों- मकान मालिक और दुकानदार। इंसानों के बीच इतना प्यार! फिर नफरतें कहां से आ गईं? कौन ले आया?

–फेसबुक वाल से

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक त्रिनाथ शुक्ला द्वारा प्लाट नं.-42, निकट बद्री नगर, इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज, लखनऊ-226008 (उ.प्र.) से मुद्रित एवं 117/एल/320-ए, नवीन नगर काकादेव, कानपुर नगर 208001 (उ.प्र.) से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक- दिग्विजय सिंह***
0512-2548300 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2022/85730 *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी।(नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र कानपुर होगा)।

कपड़े पर करिश्मा बुनने की कारीगरी है यहां की जरी जरदोजी

अब बरेली का सुई-धागा गिरा परदेसी बाजार में

जरी जरदोजी पारंपरिक भारतीय कढ़ाई की शैली है। इसमें विशेष प्रकार की सुई और धागे का इस्तेमाल किया जाता है। सोने और चांदी के धागों का उपयोग करके कपड़ों पर आकर्षक फूल, पत्तियां, या जटिल ज्यामितीय डिजाइन बनाई जाती हैं, जो परिधान को चमकदार और शानदार लुक देती हैं।

जरी जरदोजी में कीमती पत्थरों और मोतियों का भी उपयोग किया जाता है। इस कढ़ाई से तैयार परिधानों का प्रयोग अमीर वर्ग द्वारा अधिक किया जाता है। शादियों और फैशन शो में काफी मांग रहती है। वास्तव में जरदोजी फारसी शब्द है। जो 'जरी' और 'दोजी' से मिलकर बना है। 'जरी' का मतलब सोना और 'दोजी'का आशय कढ़ाई से है। इस तरह यह शब्द 'सोने की कढ़ाई'के लिए है। शायद इसीलिए जरी का काम पहले सोने-चांदी के तारों, छोटे मोती, नगीनों व रत्नों से ही होता था। राजा-महाराजाओं के कपड़े जरदोजी के होते थे। अब सिल्क, शाटन, वेलवेट पर मेटल की एंब्रॉइडरी होती है। साड़ी, लहंगे, दुपट्टे, सूट, बैग पर सुनहरे धागे, सलमा, सितारे, मोती, कटदाना, दबका का प्रयोग होने से उनकी रंगत बदल जाती है।

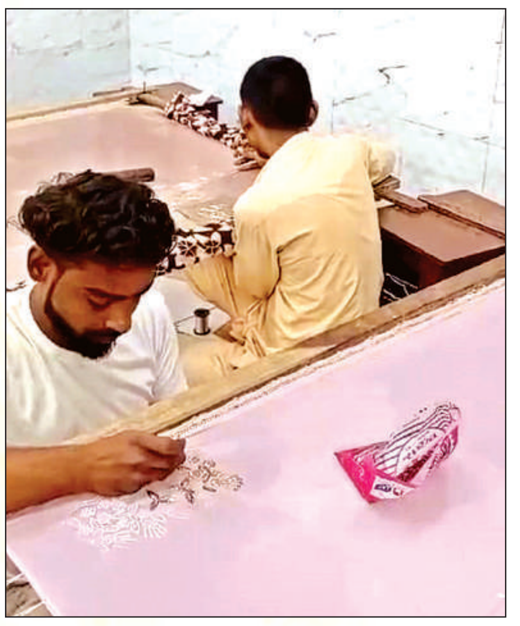

मुगल काल से मौजूद कला देश-दुनिया में लोग दीवाने

- बरेली में जरी कारोबार मुगल काल से हो रहा है। देश-विदेश में यहां की कारीगरी के लोग दीवाने हैं। शहर के जगतपुर मोहल्ले की गली में एक टिन शेड के नीचे चारपाई नुमा चौखटे पर पांच-छह लोग पूरी तल्लीनता से एक साड़ी पर कुछ गोदते दिखते हैं, पूछने पर बताया कि जरी जरदोजी के कारीगर हैं। यह लोग साड़ी पर जरी की कढ़ाई कर रहे थे। कुछ पूछने से पहले बुजुर्ग कारीगर बोल उठते हैं, मियां...अब इस कारोबार के हालात कुछ सुधरे हैं, वर्ना 15 साल पहले तमाम साथी पलायन कर गए। ट्रांसपोर्ट की व्यवस्था सुधरने से काम बढ़ा है।
- बरेली के जरी परिधानों की धूम दिल्ली, जयपुर, हैदराबाद और पंजाब में ज्यादा है। जिले के फहगंज पश्चिमी, नवाबगंज समेत शहर के एजाज नगर गौटिया, सक्लैन नगर, हजियापुर, घेर जाफर खां और सैलानी में बड़ी संख्या में जरी के कारखाने हैं। इनमें पुरुष-महिला कारीगर काम करते हैं।

इस तरह किया जाता कपड़े पर जरी का काम

- जिस कपड़े पर जरदोजी होनी है, उसे कढ़ाई के लिए लकड़ी के एक फ्रेम में फिट करते हैं। इसे अड्डा कहा जाता है। कढ़ाई हुक जैसी नोक वाले सुई या अरी से होती है। हर दाना, मोती, कटदाना, सलमा, सितारा, बड़ी महीन कारीगरी से लगाए जाते हैं।

साड़ी में चार चांद लगा देती कढ़ाई

- सामान्य साड़ी पर जारी जरदोजी से चार चांद लग जाते हैं। सूट पर भी कढ़ाई का काम महिलाओं को लुभाता है। बरेली के बुने सूट दुबई, लंदन, ऑस्ट्रेलिया तक निर्यात होते हैं।

700 करोड़ से ज्यादा का सालना कारोबार

- कारोबारियों के अनुसार कारीगरों के पलायन के दौरान सालान कारोबार घटकर 100 करोड़ तक आ गया था लेकिन बीते पांच साल से वृद्धि हुई है। अब अन्य राज्यों से माल का आर्डर मिलने से बरेली में 700 करोड़ रुपये से ज्यादा के कारोबार का टर्नओवर है।

" जरी जरदोजी के लिए बरेली प्रसिद्ध हैं, कुछ साल पहले वित्तीय कारणों से बड़ी संख्या में कारीगर पलायन कर गए थे, लेकिन अब सुधार होने पर कारोबार के दिन बहुरने लगे हैं।

- सैय्यद मोहसीन आलम जरी कारोबारी

" आर्डर लेकर कच्चे माल पर जरी जरदोजी की जाती है। साड़ी और सूट के साथ अब पशमीना पर भी जरी की कढ़ाई हो रही है। जिसकी मांग युवा वर्ग में काफी अधिक है।

- हैदर अली, जरी कारोबारी

" कभी बरेली को जरी नगरी कहा जाता था, शहर से लेकर देहात तक बड़ी संख्या में कारीगर फैले हैं। उनकी मेहनत को विदेशों में पहचान मिल रही है। अरब में बरेली की जरी जरदोजी से तैयार कपड़ों की मांग है।

- हाजी महबूब अली जरी कारोबारी

लेखक
अंकित चौहान
बरेली

आल्हा-ऊदल की वीर गाथा, भाई-बहन के प्रेम का उत्सव

आल्हा-ऊदल की वीरता का प्रतीक बीते 843 वर्षों से रक्षाबंधन के अगले दिन से महोबा में लगने वाला कजली मेला भव्य शोभायात्रा के साथ शुरू हो गया। कीरत सागर के पास दो किलोमीटर के दायरे में आयोजित होने वाले इस मेले में बुंदेली लोक विधाओं से जुड़े सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। इसे उत्तर भारत का सबसे प्राचीन मेला माना जाता है। इस बार हवेली दरवाजे से निकली शोभायात्रा में हाथी पर सवार आल्हा, घोड़े पर बैठे ऊदल और वीर गाथाओं से सजी झांकियां शामिल रहीं। शोभा यात्रा में एक सौ घोड़े नृत्य करते हुए चल रहे थे। यह मेला सांप्रदायिक सौहार्द का प्रतीक है, जहां हर धर्म और समुदाय के लोग कजलियों को सम्मानपूर्वक विसर्जित करते हैं। 15 दिन तक चलने वाले इस मेले में उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश के अलावा अन्य राज्यों से भी लोग शामिल होते हैं। कीरत सागर तट पर बनाए गए आल्हा मंच पर बुंदेली कलाकारों ने नृत्य के साथ बुंदेली गीत-संगीत की धूम मचाई, तो आल्हा गायन ने महफिल में जोश भर दिया। मेले में आज भी सैकड़ों साल पुराने आल्हा गायन और आल्हा सुनने की परम्परा कायम है।

दो दिन में बिक गए 10 हजार लाठी-डंडे

मेले में शुरू के दो दिनों में ही 10 हजार से अधिक लाठी-डंडों की बिक्री हो चुकी है। लाठी खरीदने के लिए ग्रामीण साल भर कजली मेले का इंतजार करते हैं। कजली मेले में इस बार आए नई तरह की रेलगाड़ी और डांसिंग झूले का बच्चे आनंद ले रहे हैं।

844 साल पुराने महोबा के कजली मेला में बुंदेली संस्कृति की धूम

पिया मेहंदी लिया दे...

सांस्कृतिक मंच पर संगीता तिवारी ने जहां पारंपरिक लोकगीतों की मधुर प्रस्तुति दी, वहीं उमाशंकर सेन और बृजेंद्र कुमार के आल्हा गायन ने वीरता की झलक दिखाई। संगीताचार्य अबोध सोनी और उनकी टीम ने स्वागत गीत से महफिल में चार चांद लगाए। मुख्य आकर्षण लखनऊ की टीम ज्ञानेश्वर ज्ञानी द्वारा प्रस्तुत नाट्य कृति 'मन मन में राम' रही।

लेखक: *नईमुर्रहमान, महोबा*

देश भर में कला-संस्कृति के उत्सव पर कृष्ण भक्ति का रंग

भगवान श्रीकृष्ण की कथा से कला के विभिन्न आयाम जुड़े हैं। ऐसे में जन्माष्टमी से पहले देश भर में कला-संस्कृति के उत्सव पर कृष्ण भक्ति का रंग चढ़ चुका है। श्रीराम भारतीय कला केंद्र द्वारा नई दिल्ली के मंडी हाऊस स्थित कमानी सभागार में महाविष्णु के पूर्णावतार की गाथा को नृत्य नाटिका के तौर पर प्रस्तुत किया जा रहा है। केंद्र की यह प्रस्तुति प्रदर्शन से ज्यादा विरासत बन चुकी है। भगवान कृष्ण के जीवन पर आधारित 'कृष्ण' नृत्य नाटिका की इस वर्ष 49वीं प्रस्तुति दी जा रही है। इसमें शास्त्रीय और लोक नृत्य शैलियों का सुंदर संगम नजर आता है। पारंपरिक परिधान, आभूषण, संगीत और प्रतीकात्मक दृश्य इसे एक संपूर्ण सांस्कृतिक और धार्मिक अनुभव बना देते हैं। नृत्य नाटिका 'कृष्ण' में श्रीकृष्ण के जन्म से लेकर अलौकिक प्रस्थान तक की जीवन यात्रा को पौराणिक कथा, संगीत और नृत्य के माध्यम से आध्यात्मिक एवं कलात्मक शैली में प्रस्तुत किया जाता है। शास्त्रीय और लोकनृत्य शैलियों जैसे मयूरभंज छऊ और कलारीपायट्टु के संगम से बनी इस नृत्य नाटिका में पारंपरिक वेशभूषा, आभूषण, प्रतीकात्मक एनीमेशन और शास्त्रीय संगीत एवं क्षेत्रीय रचनाओं से सजे संगीत ने ऐसा समृद्ध बनाया है कि दर्शक मंत्रमुग्ध होकर आनंद उठा रहे हैं।

नक्कारखाने की तूती न बन जाए साज और आवाज की गजब शान

नगाड़ा और नक्कारा दोनों ही पारंपरिक भारतीय ढोल वाद्य यंत्र हैं, लेकिन इनके इस्तेमाल, आकार और उत्पत्ति में थोड़ा अंतर है। नगाड़ा काफी कुछ ढोल जैसा होता है। इसे 'दुन्दुभि' भी कहा जाता है। नगाड़ा सामान्यतया जोड़े में लकड़ी की छड़ियों से बजाया जाता है। इसे नौबत (नौ पारंपरिक वाद्य यंत्रों का समूह) का हिस्सा माना जाता है। नगाड़ा आमतौर पर कांसे या मिट्टी से बना और चमड़े से मढ़ा होता है। इसे पहले शाही दरबार और युद्धों में बजाया जाता था। अब धार्मिक जुलूसों तथा अनुष्ठानों में बजाया जाता है। इसकी आवाज भारी होती है, और दूर तक जाती है। नगाड़ा का उपयोग शहनाई और अन्य वाद्य यंत्रों के साथ संगत में लय प्रदान करने के लिए भी किया जाता है। के मुकाबले नक्कारा एक छोटा ढोल है। यह तांबे या पीतल से बना तथा चमड़े से मढ़ा होता है। इसका उपयोग मुख्य रूप से लोक नृत्य और कलाओं के अतिरिक्त त्योहारों व धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता है। इसकी ध्वनि नगाड़े से थोड़ी हल्की होती है। नौटंकी कला में नक्कारा वाद्य यंत्र का नृत्य के साथ जमकर प्रयोग किया जाता है।

शास्त्रीय और सुगम संगीत के साथ लोक गायकी व नृत्य कला में किया जाता नगाड़ा का इस्तेमाल

शहनाई व सुरनाई के साथ संगीत को लय देता नगाड़ा

- पारंपरिक भारतीय ताल वाद्य नगाड़ा को नक्कारा या नगारा भी कहा जाता है। इसे आमतौर पर शहनाई, सुरनाई, या नफीरी जैसे वाद्य यंत्रों के साथ खूब बजाया जाता है। विशेष रूप से शहनाई के साथ शादियों और समारोहों का यह लंबे समय तक अभिन्न अंग रहा है। लेकिन नगाड़ा का ज्यादा उपयोग धार्मिक जुलूसों, युद्ध के मैदानों में और यहां तक कि ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण घोषणाओं के लिए भी किया जाता रहा है। नगाड़ा को डंडों से बजाया जाता है। इसका उपयोग न केवल संगीत में लय प्रदान करने के लिए किया जाता है, बल्कि संदेश फैलाने और गर्व की भावना जगाने के लिए भी किया जाता था।

बाजार	सेंसेक्स ↓	निफ्टी ↓
बंद हुआ	80,235.59	24,487.40
गिरावट	368.49	97.65
प्रतिशत में	0.46	0.40

सोना 1,01,520 प्रति 10 ग्राम

चांदी 1,12,000 प्रति किलो

अमृत विचार
कानपुर, बुधवार, 13 अगस्त 2025
www.amritvichar.com

बिजनेस ब्रीफ

एमआरएफ का मुनाफा 12 % घटकर 500 करोड़

नई दिल्ली। टायर बनाने वाली कंपनी एमआरएफ लिमिटेड ने मंगलवार को कहा कि चालू वित्त वर्ष की जून तिमाही में उसका एकीकृत शुद्ध लाभ सालाना आधार पर 12 प्रतिशत घटकर 500 करोड़ रुपये रहा। कंपनी ने वित्त वर्ष 2024-25 की अप्रैल-जून तिमाही में 571 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ दर्ज किया था। एमआरएफ लिमिटेड ने शेयर बाजार को बताया कि 30 जून, 2025 को समाप्त पहली तिमाही में परिचालन राजस्व 7,676 करोड़ रुपये रहा, जबकि एक साल पहले यह 7,196 करोड़ रुपये था।

ऑस्ट्रेलिया के केंद्रीय बैंक ने ब्याज दर घटाया

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया के केंद्रीय बैंक ने मंगलवार को अपनी प्रधान ब्याज दर को चौथाई फीसदी घटाकर 3.6 प्रतिशत कर दिया। यह इस साल तीसरी कटौती है। मुद्रास्फीति कम होने और आर्थिक वृद्धि में रुकावट के बीच यह कदम उठाया गया। ऑस्ट्रेलियाई रिजर्व बैंक ने अपनी नकद दर को 3.85 से घटाकर 3.6 प्रतिशत किया है।

ल्यूपिन ने सैंडोज के साथ किया समझौता

नई दिल्ली। दवा कंपनी ल्यूपिन ने मंगलवार को कहा कि उसने कई क्षेत्रों में अपने बायोसिमिलर उत्पाद रैनिबिजुमाब के व्यावसायीकरण के लिए स्विट्जरलैंड स्थित सैंडोज ग्रुप एजी के साथ साझेदारी की है। मुंबई स्थित दवा निर्माता कंपनी ने कहा कि समझौते की शर्तों के तहत सैंडोज यूरोपीय संघ (जर्मनी को छोड़कर), स्विट्जरलैंड, नॉर्वे, ऑस्ट्रेलिया, हांगकांग, वियतनाम और मलेशिया में उत्पाद का व्यावसायीकरण करेगी। ल्यूपिन ने कहा कि उत्पाद के निर्माण और नियामक प्रस्तुतियां देने की जिम्मेदारी उसकी होगी।

बर्जर का 20 हजार करोड़ के कारोबार का लक्ष्य

कोलकाता। पेंट बनाने वाली देश की दूसरी सबसे बड़ी कंपनी बर्जर पेंट्स इंडिया लिमिटेड ने 2030 तक 20,000 करोड़ के कारोबार का लक्ष्य रखा है। कंपनी की 101वीं वार्षिक आम बैठक में शेयरधारकों से प्रबंध निदेशक एवं सीईओ अभिजीत रॉय ने पिछले वर्ष आर्थिक नरमी और बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धा के बावजूद बर्जर की दृढ़ता का उल्लेख किया, जिससे कंपनी ने 7% से अधिक की वृद्धि एवं परिचालन में सुधार किया।

बैंक शेयरों में बिकवाली से गिरा बाजार

निवेशकों के सतर्क रुख से सेंसेक्स 368 अंक फिसला, निफ्टी भी नुकसान में

मुंबई, एजेंसी

मुद्रास्फीति का आंकड़ा आने से पहले निवेशकों के सतर्क रुख अपनाने और बैंकों के शेयरों में बिकवाली होने से मंगलवार को स्थानीय शेयर बाजारों में गिरावट रही। सेंसेक्स 368 अंक टूटा जबकि निफ्टी को 98 अंकों का नुकसान हुआ।

बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स बेहद उतार-चढ़ाव भरे कारोबार में 368.49 अंक गिरकर 80,235.59 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान सेंसेक्स में 833.31 अंकों का उतार-चढ़ाव देखा गया और यह 80,997.67 के ऊपरी एवं 80,164.36 के निचले स्तर तक गया। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का मानक सूचकांक निफ्टी भी 97.65 अंक यानी 0.40 प्रतिशत गिरकर 24,487.40 अंक पर बंद हुआ।

विश्लेषकों ने कहा कि सतर्क निवेशक 15 अगस्त को होने वाली अमेरिका-रूस वार्ता से भी आने वाले संकेतों का इंतजार कर रहे हैं। सेंसेक्स में शामिल कंपनियों में से बजाज फाइनेंस, ट्रेंट, हिंदुस्तान यूनिलीवर, एचडीएफसी बैंक, इटर्नल, बजाज फिनसर्व, आईसीआईसीआई बैंक और भारत इलेक्ट्रॉनिक्स के शेयर गिरकर बंद हुए। हालांकि, मारुति, टेक महिंद्रा, महिंद्रा एंड महिंद्रा और एनटीपीसी में तेजी का रुख देखने को मिला।

जियोजीत इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा कि वैश्विक व्यापार से जुड़े घटनाक्रम और आने वाले मुद्रास्फीति आंकड़ों को देखते हुए घरेलू बाजार में उतार-चढ़ाव के साथ कारोबार हुआ। अगर अमेरिकी मुद्रास्फीति पर शुल्क वृद्धि का कोई संकेत दिखता है तो फेडरल रिजर्व के नीतिगत रुख पर उसका असर देखने को मिल सकता है।

● 15 अगस्त को होने वाली अमेरिका और रूस की वार्ता के परिणामों का निवेशक कर रहे हैं इंतजार

मिड और स्मॉल कैप में मामूली बढ़त

मझोली कंपनियों का बीएसई मिडकैप सूचकांक 0.25 प्रतिशत गिर गया जबकि छोटी कंपनियों के स्मालकैप सूचकांक में 0.04 प्रतिशत की मामूली बढ़त रही। क्षेत्रवार सूचकांकों में से बैंकिंग खंड में 0.83 प्रतिशत, पूंजीगत उत्पाद खंड में 0.76 प्रतिशत और रियल्टी खंड में 0.75 प्रतिशत की गिरावट रही। हालांकि तेल एवं गैस, स्वास्थ्य देखभाल, धातु एवं उपयोगिता खंड में तेजी रही।

एशिया के अन्य बाजारों में दक्षिण कोरिया का कॉस्पी गिरावट के साथ बंद हुआ जबकि जापान का निक्की सूचकांक, चीन का शंघाई कंपोजिट और हांगकांग का हैंग सेंग सकारात्मक दायरे में बंद हुए। यूरोपीय बाजारों में कारोबार का मिला-जुला रुख देखा गया। अमेरिकी बाजार सोमवार को गिरावट के साथ बंद हुए थे। वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड 0.18 प्रतिशत बढ़कर 66.75 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया।

एफआईआई ने 1,202.65 करोड़ के शेयरों बेचे

शेयर बाजार के आंकड़ों के मुताबिक, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने सोमवार को 1,202.65 करोड़ रुपये मूल्य के शेयरों की शुद्ध रूप से बिकवाली की थी। सेंसेक्स सोमवार को 746.29 अंक बढ़कर 80,604.08 अंक और निफ्टी 221.75 अंक चढ़कर 24,585.05 अंक पर बंद हुआ था।

नए आयकर विधेयक में अग्रिम कर पर ब्याज प्रावधान के लिए सुधार अधिसूचना जारी

तय तिथि तक अग्रिम कर की कम अदायगी पर 3% ब्याज की वसूली

● आयकर विधेयक- 2025 छह दशक पुराने अधिनियम-1961 की लेगा जगह

नई दिल्ली, एजेंसी

वित्त मंत्रालय ने नए आयकर विधेयक में अग्रिम कर की कम अदायगी पर ब्याज वसूली संबंधी प्रावधान को लेकर मंगलवार को एक सुधार अधिसूचना जारी की। इस अधिसूचना में निर्धारित तारीख तक अग्रिम कर की कम अदायगी करने पर तीन प्रतिशत ब्याज की वसूली का प्रावधान किया गया है।

साथ ही इस प्रावधान को आयकर अधिनियम, 1961 के मौजूदा प्रावधानों के अनुरूप बनाया गया है। मौजूदा नियमों के तहत जिन करदाताओं पर 10,000 रुपये या उससे अधिक का कर देय होता है, उन्हें अग्रिम कर चार किस्तों में चुकाना होता है। इन किस्तों के लिए 15 जून, 15 सितंबर, 15 दिसंबर और 15 मार्च की तारीखें नियत होती हैं। सोमवार को लोकसभा में पारित आयकर (संख्या-2) विधेयक, 2025 में प्रावधान था कि अगर तिमाही की नियत तिथि के अगले दिन ही अग्रिम कर राशि में कमी पूरी कर दी जाए तो एक माह का एक प्रतिशत ब्याज ही लगेगा।

सलाहकार कंपनी नांगिया एंडरसन एलएलपी में साझेदार संदीप झुनझुनवाला ने कहा कि यह प्रावधान मौजूदा कर कानून के अनुरूप नहीं था और अब सुधार अधिसूचना से स्पष्टता लाकर मौजूदा प्रावधान के अनुरूप संशोधित किया गया है। यदि अग्रिम कर की राशि में कमी नियत तिथि से एक दिन भी आगे पूरी की जाती है तो कम से कम तीन महीने का ब्याज देना होगा। आयकर (संख्या-2) विधेयक, 2025 कानून की शक्ल लेने पर छह दशक पुराने आयकर अधिनियम, 1961 की जगह लेगा। इसमें अध्यायों एवं शब्दों की संख्या को घटाकर कर कानून को सरल बनाया जाएगा।

एफडीआई सीमा 100% करने से बढ़ेगा रोजगार

नई दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को राज्यसभा को बताया कि भारतीय बीमा कंपनियों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) की सीमा 74 से बढ़ाकर 100 प्रतिशत करने से बाजार में अधिक कंपनियां आएंगी और रोजगार के अवसर पैदा होंगे। बेहतर तकनीकों और स्वचालन से दावों के निपटान की प्रक्रिया तेज होगी, जिससे समय की बचत, लागत में कमी और क्षेत्र की समग्र दक्षता में सुधार होगा। भारतीय बीमा कंपनियों में एफडीआई सीमा बढ़ाने की घोषणा एक फरवरी 2025 को पेश आम बजट में की गई थी। निवेश से जुड़े प्रावधान बीमा अधिनियम, 1938 के तहत आते हैं, जिसमें निवेश की सुरक्षा, तरलता और नीति धारकों के हितों के अनुरूप नियामकीय निगरानी पर जोर दिया गया है।

प्रत्यक्ष कर संग्रह 3.95 प्रतिशत घटकर 6.64 लाख करोड़ रुपये पर पहुंचा

नई दिल्ली, एजेंसी

शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह चालू वित्त वर्ष में अबतक 3.95 प्रतिशत घटकर 6.64 लाख करोड़ रहा। कर संग्रह में कमी का कारण रिफंड का अधिक होना है। मंगलवार को जारी सरकारी आंकड़ों से यह जानकारी मिली।

प्रत्यक्ष कर में कंपनियों, व्यक्तियों, पेशेवरों और अन्य संस्थाओं की आय पर कर शामिल हैं। शुद्ध कंपनी कर संग्रह 2.29 लाख करोड़ रुपये रहा, जबकि गैर-कंपनी कर (जिसमें व्यक्ति, हिंदू अविभाजित परिवार और कंपनी शामिल हैं) संग्रह 4.12 लाख करोड़ रुपये रहा। आंकड़ों के अनुसार, 1 अप्रैल से 11 अगस्त के बीच प्रतिभूति लेनदेन कर (एसटीटी) संग्रह 22,362 करोड़ रुपये रहा। शुद्ध रूप से संग्रह 3.95 प्रतिशत घटकर 6.64 लाख करोड़ रुपये रहा। यह पिछले वित्त वर्ष (2024-25) की इसी अवधि में 6.91 लाख करोड़ रुपये था। चालू वित्त वर्ष में अब तक जारी किया गया रिफंड 10 प्रतिशत बढ़कर 1.35 लाख करोड़ रुपये रहा। 1 अप्रैल से 11 अगस्त के बीच सकल संग्रह (रिफंड से पहले) 1.87 प्रतिशत घटकर 7.99 लाख करोड़ रुपये रहा, जो एक साल पहले इसी अवधि में 8.14 लाख करोड़ रुपये था। सरकार ने चालू वित्त वर्ष (2025-26) में प्रत्यक्ष कर संग्रह 25.20 लाख करोड़ रुपये रहने का अनुमान लगाया है, जो सालाना आधार पर 12.7 प्रतिशत अधिक है।

● रिफंड के अधिक होने से आई कर संग्रह में गिरावट

ब्रिटेन समझौता भारतीय निर्यातकों के लिए बड़ा अवसर

नई दिल्ली, एजेंसी

वाणिज्य मंत्रालय ने मंगलवार को कहा कि ब्रिटेन के साथ भारत के मुक्त व्यापार समझौते से परिधान, घरेलू वस्त्र, कालीन तथा हस्तशिल्प के निर्यात को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही 2030 तक कपड़ा निर्यात में 30-45% की वृद्धि का अनुमान है।

विशेषज्ञों के अनुसार, घरेलू निर्यातकों को इस समझौते का फायदा उठाना चाहिए जो सालाना 27 अरब डॉलर मूल्य का कपड़ा आयात करता है। खासकर ऐसी स्थिति में जब इस क्षेत्र पर अमेरिकी शुल्क अधिक हैं। भारत-ब्रिटेन व्यापक आर्थिक एवं व्यापार समझौते (सीईटीए) पर 24 जुलाई को लंदन में हस्ताक्षर हुए थे। ब्रिटेन, भारत का तीसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य है। 2024 में वस्त्र निर्यात में इसकी 5.80% हिस्सेदारी थी। भारत का विश्व को कुल निर्यात 37 अरब डॉलर है। भारत 6.6% बाजार हिस्सेदारी (1.79 अरब डॉलर) के साथ यह ब्रिटेन का चौथा सबसे बड़ा कपड़ा आपूर्तिकर्ता है। यह चीन (25.4%), बांग्लादेश (19.9%) व तुर्किये (7.9%) से कम है। सीईटीए से भारत का कपड़ा निर्यात ब्रिटेन में शुल्क-मुक्त होगा। इससे सिले-सिलाए व घरेलू वस्त्र, कालीन और हस्तशिल्प जैसे क्षेत्रों को लाभ होगा जिससे निर्यात को बढ़ावा देने के प्रबल अवसर उत्पन्न होंगे।

निर्यातकों को होगा प्रतिस्पर्धी लाभ

वाणिज्य मंत्रालय के अनुसार, इस कदम से शुल्क से जुड़ी पिछली असुविधाएं दूर होंगी और भारतीय निर्यातकों को प्रतिस्पर्धी लाभ मिलेगा। ब्रिटेन के आयात में भारत की हिस्सेदारी को 6 से बढ़ाकर 12% (1.1-1.2 अरब डॉलर अतिरिक्त वार्षिक) करने की क्षमता है। यह समझौता 2030 तक ब्रिटेन को वस्त्र निर्यात को 30-45 प्रतिशत तक बढ़ा सकता है जिससे निर्यात मूल्य में 50-80 करोड़ अमेरिकी डॉलर की अतिरिक्त वृद्धि होगी।

विपक्ष के हंगामे के बीच लोस में दो विधेयक पारित

सदन की कार्यवाही तीन बार के स्थगन के बाद सोमवार तक के लिए हुई स्थगित

● भारतीय पत्तन, खान और खनिज संशोधन विधेयक-2025 संक्षिप्त चर्चा के बाद हुए पारित

नई दिल्ली, एजेंसी

लोकसभा में मंगलवार को मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) मुद्दे पर विपक्षी दलों के हंगामे के बीच दो विधेयक पारित किये गए व सदन की कार्यवाही तीन बार के स्थगन के बाद सोमवार सुबह 11 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। कार्यवाही सुबह 11 बजे शुरू होते ही लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने प्रश्नकाल शुरू कराया, वहीं विपक्षी सदस्य अपने स्थानों पर खड़े होकर एसआईआर पर नारेबाजी करने लगे।

शोर-शराबे के बीच ही अध्यक्ष ने प्रश्नकाल चलाने का प्रयास किया, लेकिन विपक्षी सदस्यों की नारेबाजी जारी रहने पर उन्होंने कुछ ही मिनट बाद कार्यवाही दोपहर 12 बजे तक के लिए स्थगित कर दी।

दोपहर 12 बजे सदन की कार्यवाही पुनः शुरू होने पर आवश्यक दस्तावेज सदन के पटल पर रखवाए गए। विपक्ष के सदस्यों ने एसआईआर मुद्दे पर हंगामा शुरू कर दिया। पीठासीन सभापति संध्या राय ने शून्यकाल शुरू कराने का प्रयास किया, लेकिन हंगामा नहीं थमने पर उन्होंने कार्यवाही दोपहर 12 बजकर 20 मिनट पर अपराह्न तीन बजे तक स्थगित कर दी। अपराह्न तीन बजे सदन की कार्यवाही फिर शुरू होने पर विपक्ष के हंगामे के बीच भारतीय पत्तन विधेयक, 2025 को संक्षिप्त चर्चा के बाद ध्वनिमत से पारित कर दिया गया। सरकार ने गत 28 मार्च को यह विधेयक सदन में पेश किया था। ये 1908 के अधिनियम की जगह लेगा व इसके तहत समुद्री राज्य विकास परिषद (एमएसडीसी) की स्थापना होगी। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने इस विधेयक को फरवरी में मंजूरी दी थी। सदन में हंगामा नहीं थमने पर पीठासीन सभापति जगदंबिका पाल ने अपराह्न तीन बजकर 25 मिनट पर कार्यवाही शाम साढ़े चार बजे तक के लिए स्थगित कर दी। सदन की कार्यवाही शाम साढ़े चार बजे फिर शुरू होने के बाद, एसआईआर के मुद्दे पर विपक्ष के हंगामे के बीच खान और खनिज (विकास और विनियमन) संशोधन विधेयक, 2025 को पारित कर दिया गया।

नई दिल्ली में संसद के मानसून सत्र के दौरान मंगलवार को लोकसभा में केंद्रीय मंत्री किरेन रीजीजू और अन्य सदस्य। एजेंसी

रीजीजू ने हंगामे पर की विपक्ष की आलोचना

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने दिवाला एवं शोधन अक्षमता संहिता में संशोधन के लिए विधेयक पेश किया और पीठासीन सभापति से आग्रह किया कि इसे सदन की प्रवर समिति को भेजा जाए, जिसे सदन ने स्वीकार कर लिया। विपक्ष के हंगामे पर संसदीय कार्य मंत्री किरेन रीजीजू ने विपक्षी दलों के सदस्यों की आलोचना करते हुए कहा कि उन्होंने आसन की ओर कागज के टुकड़े फेंक कर सदन की गरिमा को गिराया है। रीजीजू ने कहा, हम लोगों ने जिंदगी भर विपक्ष में बैठकर काम किया है। ऐसा व्यवहार हमने कभी नहीं देखा है। हम लोग भी संघर्ष करते थे, प्रोटेस्ट (विरोध-प्रदर्शन) करते थे, लेकिन हम लोग तरीके से करते थे। आप ने सदन की गरिमा को गिराया है। मैं इसका खंडन करता हूं। पीठासीन सभापति जगदंबिका पाल ने कांग्रेस के उपनेता गौरव गोगोई पर आसन पर कागज के टुकड़े फेंकने को उकसाने का आरोप लगाया।

संसद में रहेगा पांच दिन का अवकाश

नई दिल्ली। संसद के दोनों सदनों में कल 13 से 17 अगस्त तक पांच दिन का अवकाश रहेगा। लोकसभा व राज्यसभा की बैठकों को सोमवार 18 अगस्त पूर्वाह्न 11 बजे तक के लिए स्थगित कर दिया गया। मानसून सत्र के घोषित कार्यक्रम के अनुसार, 15 अगस्त को स्वाधीनता दिवस का अवकाश है। संसद सदस्य अपने निर्वाचन क्षेत्रों/राज्यों में स्वाधीनता दिवस संबंधी कार्यक्रमों में भाग ले सकें, इसे ध्यान में रखते हुए 13 एवं 14 अगस्त को भी अवकाश पहले ही घोषित कर दिया गया था। शनिवार एवं रविवार को दोनों सदनों की बैठकें नहीं होती।

ईसी ने मुख्य सचिव से दागियों को न हटाने पर मांगा स्पष्टीकरण

कोलकाता। निर्वाचन आयोग ने बंगाल के मुख्य सचिव मनोज पंत को मंगलवार को समन जारी किया और कहा कि वह 'दागी' अधिकारियों को न हटाने पर दिल्ली आकर स्पष्टीकरण दें। यह घटनाक्रम तब हुआ जब पश्चिम बंगाल सरकार ने एक दिन पहले आयोग को पत्र लिखकर कहा कि मतदाता सूची पुनरीक्षण में कथित अनियमितताओं को लेकर अभी अपने अधिकारियों को निलंबित करने का उसका कोई इरादा नहीं है।

राज्य के शीर्ष नौकरशाह को बुधवार शाम पांच बजे तक निर्वाचन सदन में व्यक्तिगत रूप से पेश होने का निर्देश दिया गया। चुनाव निकाय का निर्देश ऐसे समय आया जब पंत ने सोमवार को उसे पत्र भेजकर कहा था कि निर्वाचन आयोग द्वारा चिह्नित अधिकारियों को निलंबित करना व उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करना कठोर होगा तथा बंगाल के अधिकारी समुदाय पर इसका निराशाजनक प्रभाव पड़ेगा।

अनुसंधान में अरबों डॉलर निवेश कर रहा भारत: मोदी

मुंबई, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को कहा कि भारत अनुसंधान में अरबों डॉलर का निवेश कर रहा है। मुंबई में खगोल विज्ञान और खगोल भौतिकी पर 18वें अंतर्राष्ट्रीय ओलंपियाड को वीडियो कॉन्फ्रेंस से संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि भारत में परंपरा और नवाचार का मेल है। भारत के पास दुनिया की सबसे ऊंची खगोलीय वेधशालाओं में से एक लद्दाख में है। तारों पर अध्ययन करने को यह वेधशाला समुद्र तल से 4,500 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है।

मोदी ने कहा, भारत अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की शक्ति में विश्वास करता है। विज्ञान के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों पर कहा, हम चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास सफलतापूर्वक उतरने वाले पहले देश थे। भारत वैज्ञानिक जिज्ञासा को पोषित करने और युवाओं को सशक्त बनाने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। अटल टिंकरिंग लैब्स में एक करोड़ से अधिक छात्र व्यावहारिक प्रयोगों के माध्यम से एसटीईएम (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) अवधारणाओं को समझ रहे हैं।

● खगोल विज्ञान और खगोल भौतिकी पर 18वें अंतर्राष्ट्रीय ओलंपियाड को किया संबोधित

शुभांशु की सराहना की

मोदी ने अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला की सराहना की, जो अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के 18 दिवसीय सफल मिशन से लौटे हैं। मोदी ने कहा, शुभांशु ने ऐतिहासिक मिशन पूरा किया। यह सभी के लिए गर्व का क्षण था और आप जैसे युवा खोजकर्ताओं के लिए प्रेरणा है।

'वोट चोरी' के आरोपों पर राहुल ने कहा- अभी पिक्चर बाकी है

नई दिल्ली, एजेंसी

● बोले- चुनाव आयोग जानता है और हम भी जानते हैं, पहले सबूत नहीं था, लेकिन अब है

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मंगलवार को निर्वाचन आयोग पर 'एक व्यक्ति, एक वोट' के सिद्धांत को लागू करने का कर्तव्य नहीं निभाने का आरोप लगाया और मतदाता सूची में अनियमितताओं के दावों का हवाला देते हुए कहा, अभी पिक्चर बाकी है।

राहुल गांधी ने कहा कि उनकी पार्टी संविधान की रक्षा कर रही है और ऐसा करती रहेगी। लोकसभा में विपक्ष के नेता ने संसद भवन परिसर में कहा, यह सिर्फ एक सीट की बात नहीं है जहां 'वोट चोरी' हो रही है, बल्कि कई सीटों की बात है। यह राष्ट्रीय स्तर पर और व्यवस्थित तरीके से किया जा रहा है। चुनाव आयोग जानता है और हम भी जानते हैं। पहले सबूत नहीं था, लेकिन अब है। हम संविधान की रक्षा कर रहे हैं। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने कहा कि ऐसे कई मामले हैं जिनमें पते और रिश्तेदारों आदि के नाम फर्जी हैं।

इससे पहले, 'इंडिया' गठबंधन के सांसदों ने संसद परिसर में बिहार में निर्वाचन आयोग की मतदाता सूची पुनरीक्षण प्रक्रिया के खिलाफ प्रदर्शन किया। सांसदों ने सफेद टी-शर्ट पहन रखी थी, जिस पर 124 वर्षीय मतदाता का नाम लिखा था जो मतदाता सूची में दर्ज पायी गयी है।

हम देश के सभी नागरिकों के संरक्षक : न्यायालय

नई दिल्ली, एजेंसी

उच्चतम न्यायालय ने मंगलवार को खुद को देश के सभी नागरिकों का 'संरक्षक' बताया और मामलों में मुवक्किलों का प्रतिनिधित्व करते समय जांच एजेंसियों द्वारा वकीलों को तलब किए जाने के संबंध में स्वतः संज्ञान मामले में अपना फैसला सुरक्षित रख लिया।

प्रधान न्यायाधीश बीआर गवई, न्यायमूर्ति के. विनोद चंद्रन और न्यायमूर्ति एनवी अंजारिया की पीठ ने सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता की याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा, हम देश के सभी नागरिकों के संरक्षक हैं। पीठ ने मामले में अपना आदेश सुरक्षित रख लिया। किसी वकील के किसी अपराध में शामिल होने के मुद्दे पर पीठ ने कहा कि उसने पहले ही स्पष्ट कर दिया है कि साक्ष्यों से छेड़छाड़ या उन्हें गढ़ने के संबंध में सलाह देने की उनकी सामान्य कार्यप्रणाली से कोई भी विचलन उनकी प्रतिरक्षा को समाप्त कर देगा। मेहता ने कहा कि जांच एजेंसियों को कभी भी किसी वकील को पेशेवर राय देने के मुद्दे पर नहीं बुलाना चाहिए। मामले में पैरवी कर रहे वरिष्ठ अधिवक्ता सिद्धार्थ लूथरा ने कहा कि मुद्दा न्याय तक पहुंच का है। हाल ही में एक वकील के खिलाफ इस आधार पर प्राथमिकी दर्ज हुई कि उनके मुवक्किल ने कहा था कि उसने उन्हें नोटरीकृत हलफनामा देने के लिए अधिकृत नहीं किया था। सुनवाई के दौरान पीठ ने कहा कि वह वकीलों के दो वर्ग नहीं बना सकती। मेहता ने उच्चतम न्यायालय से आग्रह किया कि वह सभी के लिए कानून बनाए, लेकिन देश के परिदृश्य को भी ध्यान में रखे। पीठ ने आदेश सुरक्षित रख लिया।

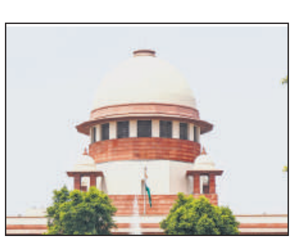

● जांच एजेंसियों के वकीलों को तलब किए जाने के संबंध में स्वत: संज्ञान मामले में सुरक्षित रखा फैसला

सजा पूरी कर चुके कैदियों को करें रिहा

उच्चतम न्यायालय ने सजा पूरी करने के बाद भी जेल में बंद कैदियों की स्थिति पर मंगलवार को चिंता व्यक्त करते हुए सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निर्देश दिया कि अगर कोई दोषी किसी अन्य मामले में वांछित नहीं है तो उसे तुरंत रिहा किया जाए। न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना और केवी विश्वनाथन की पीठ ने 2002 के नीतीश कटारा हत्याकांड में सुखदेव यादव उर्फ पहलवान की रिहाई का आदेश देते हुए यह निर्देश दिया। पीठ ने कहा कि यादव ने इस साल मार्च में बिना किसी छूट के 20 साल की सजा पूरी कर ली है। इस आदेश की प्रति रजिस्ट्री द्वारा सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के गृह सचिवों को भेजी जाए ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या कोई आरोपी या दोषी सजा की अवधि से अधिक समय तक जेल में है।

भारत विश्व का कल्याण चाहने वाला देश: भागवत

सीकर, एजेंसी

आरएसएस के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि भारत हमेशा से ही विश्व का कल्याण चाहने वाला देश है और यहां के वेदों में सभी शास्त्र निहित हैं। भागवत ने मंगलवार को राजस्थान के सीकर जिले में स्थित श्री जानकीनाथ बड़ा मंदिर, रैवासा धाम में ब्रह्मलीन स्वामी राघवाचार्य वेदांती महाराज की प्रथम पुण्यतिथि पर श्री सियपिय मिलन समारोह को संबोधित किया।

उन्होंने स्वामी राघवाचार्य की तीन फुट ऊंची संगमरमर की प्रतिमा का अनावरण और नव-निर्मित गुरुकुल भवन का लोकार्पण भी किया। उन्होंने कहा कि इतिहास ने भी जब आंखें नहीं खोली थीं, तब से विश्व को सत्य, धर्म और आध्यात्म का मार्ग दिखाने तथा मानवता के कल्याण का कार्य भारत और हिंदू समाज कर रहा है। भारत के स्वतंत्र होने के बाद लोगों ने भविष्यवाणी की थी कि यहां प्रजातंत्र चल नहीं सकता, लेकिन प्रजातंत्र चला और जब संकट आया तो लोगों ने उसका प्रतिकार करके प्रजातंत्र को कायम रखा है।

वर्ल्ड ब्रीफ

श्रीलंका ने दी सबरीमला तीर्थयात्रा को मान्यता

कोलंबो। श्रीलंका के मंत्रिमंडल ने भारत के केरल राज्य में स्थित सबरीमला अयप्पा स्वामी मंदिर की अपने नागरिकों द्वारा की जाने वाली वार्षिक तीर्थयात्रा को मान्यता देने का फैसला किया है। मंत्रिमंडल की एक विज्ञप्ति के मुताबिक यह निर्णय सोमवार को हुई मंत्रिमंडल की बैठक में लिया गया। इसमें कहा गया कि हर साल 15,000 से अधिक श्रीलंकाई नागरिक सबरीमला की यात्रा करते हैं, इस तीर्थयात्रा को सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त माना जाएगा। विज्ञप्ति के मुताबिक, लंबे समय से श्रीलंकाई श्रद्धालु हर साल एक नवंबर से 31 जनवरी तक भारत के केरल स्थित प्रसिद्ध सबरीमला अयप्पा कोविल (मंदिर) में पूजा करते आ रहे हैं।

पूर्व राष्ट्रपति की पत्नी की गिरफ्तारी का आदेश

सियोल। दक्षिण कोरिया की एक अदालत ने रिश्वतखोरी, स्टॉक में हेरफेर और एक उम्मीदवार के चयन में दखलंदाजी सहित विभिन्न संदिग्ध अपराधों के आरोपों के बीच मंगलवार को जेल में बंद पूर्व राष्ट्रपति यून सूक येओल की पत्नी को गिरफ्तार करने का आदेश दिया। जांचकर्ताओं ने बताया कि सियोल सेंट्रल डिस्ट्रिक्ट कोर्ट ने मंगलवार देर शाम किम कियोन ही का गिरफ्तारी वारंट जारी किया। सियोल की नई लिबरल पार्टी की सरकार द्वारा किम के खिलाफ शुरू कराई गई यह जांच तीन विशेष अभियोजक जांचों में से एक है। कंजरवेटिव पार्टी के नेता यून को अप्रैल में पद से हटा दिया गया था।

मुंबई: इंडिगो शुरू करेगी दो अंतर्राष्ट्रीय उड़ानें

नई दिल्ली। देश की सबसे बड़ी विमान सेवा कंपनी इंडिगो ने सितंबर में मध्य एशियाई देशों के लिए मुंबई से दो नयी उड़ानें शुरू करने की घोषणा की है। एयरलाइंस ने बताया कि वह 01 सितंबर से उज्बेकिस्तान की राजधानी ताशकंद और 02 सितंबर से कजाकिस्तान के अल्माटी के लिए मुंबई से सीधी उड़ानें शुरू करेगी। दोनों उड़ानें सप्ताह में चार दिन होंगी। उड़ान संख्या 6ई 1821 मुंबई से सुबह 9 .55 बजे ताशकंद के लिए रवाना होगी। यह सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शनिवार को उपलब्ध होगी।

बारामूला : खाई में गिरने से जवान की मौत

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले में नियंत्रण रेखा के पास एक गहरी खाई में फिसलकर एक जवान शहीद हो गया। अधिकारियों ने बताया कि ये घटना कल उरी सेक्टर के बिजहामा इलाके में हुई जब तेलंगाना निवासी 30 वर्षीय सिपाही बनोथ अनिल कुमार नियंत्रण रेखा के पास गश्त के दौरान गलती से एक खाई में फिसल गए। श्रीनगर स्थित सेना की चिनार कोर ने कहा कि उन्हें बारामूला जिले में नियंत्रण रेखा पर ऑपरेशनल ड्यूटी निभाते हुए बहादुर सिपाही बनोथ अनिल कुमार के अनमोल जीवन की हानि पर गहरा दुख है।

ग्रोक और एक्स की अनदेखी पर मस्क ने दी एप्पल को केस करने की धमकी

न्यूयॉर्क, एजेंसी

- प्रतिस्पर्धा कानून का उल्लंघन करने का आरोप लगाया

अरबपति कारोबारी एलन मस्क ने कहा कि वह 'ऐप स्टोर' में एक्स और ग्रोक को शीर्ष अनुशंसित ऐप में शामिल नहीं करने के लिए एप्पल पर मुकदमा करने की योजना बना रहे हैं।

मस्क स्पेसएक्स, टेस्ला तथा एक्स के मालिक हैं। ग्रोक उनका कृत्रिम बुद्धिमत्ता चैटबॉट है। इसका स्वामित्व मस्क के कृत्रिम बुद्धिमत्ता स्टार्टअप एक्सएआई के पास है। मस्क ने सोमवार देर रात एक्स पर पोस्ट किया, एप्पल ऐप स्टोर, आप एक्स या ग्रोक को अपने जरूरी खंड में डालने से इनकार क्यों करते हैं, जबकि एक्स दुनिया का शीर्ष समाचार ऐप है और ग्रोक सभी ऐप्स में पांचवें स्थान पर है। क्या आप राजनीति कर रहे हैं, क्या बात है। जिज्ञासु लोग जानना चाहते हैं।

मस्क ने आगे कहा कि एप्पल इस तरह से व्यवहार कर रही है कि ओपनएआई के अलावा किसी भी एआई कंपनी के लिए ऐप स्टोर में नंबर एक पर पहुंचना असंभव है, जो एक स्पष्ट रूप से प्रतिस्पर्धा कानून का उल्लंघन है। एक्सएआई तत्काल कानूनी कार्रवाई करेगी। उन्होंने इस बारे में आगे कोई विवरण नहीं दिया।

... ताकि दुनिया में फिर न हो हिरोशिमा-नागासाकी जैसी तबाही

परमाणु संधि के बंधन

भारत के साथ तनाव के बीच पाकिस्तान की ओर से एक बार फिर परमाणु हमले की धमकी आई है। विशेष यह है कि इस बार यह धमकी पाकिस्तान के सेना प्रमुख ने दी है, जो संकेत है कि लोकतंत्र का मुखौटा लगाए पड़ोसी देश के राजनीतिक नेतृत्व पर सेना किस कदर हावी है। इसे आंतरिक राजनीति का भी हिस्सा माना जा सकता है, क्योंकि पाकिस्तान में लगातार सैन्य तख्तापलट की आशंकाएं जताई जा रही हैं। हालांकि फिर भी इस धमकी ने यह चिंता पैदा की है कि पाकिस्तान का सैन्य नेतृत्व परमाणु हथियारों को कैसे राजनीतिक या सैन्य दबाव के साधन के रूप में देखता है। हालांकि दुनिया ने हिरोशिमा और नागासाकी में परमाणु विध्वंस से सबक लेकर कई पाबंदियां लागू की हैं।

परमाणु संधि और समझौते

- परमाणु संधि पर 191 देशों के हस्ताक्षर हैं। भारत, पाकिस्तान, इजराइल हस्ताक्षर न करने वाले देश हैं। उत्तर कोरिया संधि से बाहर निकल चुका है।
- इसमें नए देशों के परमाणु हथियार न बनाने, नए देशों को परमाणु हथियार न देने और सिर्फ शांतिपूर्ण परमाणु तकनीक साझा करने के नियम हैं।
- भारत और पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय 1999 का लाहौर समझौता और 1988 का परमाणु प्रतिष्ठानों की सूची का आदान-प्रदान समझौता है।

किस पर कितने परमाणु हथियार

वर्ष 2025 में अनुमानित तौर पर रूस के पास सर्वाधिक 5,580, अमेरिका के पास 5,044, चीन के पास 500, फ्रांस के पास 290, ब्रिटेन के पास 225, पाकिस्तान के पास 170–180, भारत के पास 165, इजराइल के पास 90 और उत्तर कोरिया के पास 50 से 60 परमाणु हथियार हैं।

पाकिस्तान की धमकी पर आशंकाएं

- डोनाल्ड ट्रंप समेत कई वैश्विक नेताओं ने भारत-पाकिस्तान संघर्ष को दुनिया के सबसे खतरनाक फ्लैशपॉइंट्स में से एक बताया है।
- कारण यह है कि दोनों देश परमाणु संपन्न हैं और कश्मीर सीमा पर दोनों देशों के बीच बार-बार या लगातार झड़पें होती रहती हैं।

पाकिस्तान की नीति- फर्स्ट यूज

- वर्ष 2025 के अनुमान के अनुसार पाकिस्तान के पास लगभग 170 से 180 परमाणु वारहेड हैं।
- इन्हें दागने के लिए बैलिस्टिक मिसाइल शाहीन, गौरी, अब्दाली, और क्रूज मिसाइल बाबर और राद हैं।
- पाकिस्तान के पास मौजूद फाइटर प्लेन एफ- 16 और जेएफ- 17 परमाणु हथियार ले जाने में सक्षम हैं
- पाकिस्तानी नीति फर्स्ट यूज की है, यानी पारंपरिक युद्ध में हारने पर वह परमाणु हथियार चला सकता है।
- पाकिस्तान की फर्स्ट यूज की रणनीति है और भारत की नो फर्स्ट यूज की। इसके बाद भी तनाव बढ़ने पर टकराव का खतरा रहता है।

ये की जा सकती है कार्रवाई

- भारत की ओर से पाकिस्तान की धमकी के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में मामला उठा सकता है।
- इंटरनेशनल एटॉमिक एनर्जी एजेंसी और यूनाइटेड नेशंस जनरल असेंबली में मुद्दा रखा जा सकता है।
- जी- 7, जी- 20 और ओआईसी में पाकिस्तान को अलग-थलग करने की कोशिश हो सकती है।
- परमाणु क्षमताओं पर रोक तभी लग सकती है जब अमेरिका, चीन, रूस जैसी बड़ी शक्तियां सहमत हों।

अमेरिका-चीन ने आयात शुल्क पर लगी रोक को 90 दिन के लिए बढ़ाया

व्हाइट हाउस और चीनी वाणिज्य मंत्रालय ने की संयुक्त घोषणा, टकराव टला

वाशिंगटन, एजेंसी

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोमवार को चीन के साथ व्यापार समझौते को 90 दिनों के लिए और बढ़ा दिया, जिससे दुनिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच एक बार फिर से होने वाला खतरनाक टकराव टल गया है।

व्हाइट हाउस और चीनी वाणिज्य मंत्रालय की ओर से जारी संयुक्त बयान के अनुसार दोनों पक्षों ने 12 अगस्त से शुरू होकर 90 दिनों की अतिरिक्त अवधि के लिए आयात शुल्क दर के 24 प्रतिशत अंक निलंबित करने पर सहमति व्यक्त की है, जबकि उन वस्तुओं पर शेष 10 प्रतिशत की यथामूल्य दर को बरकरार रखा जाएगा। बयान में कहा गया है कि चीनी पक्ष अमेरिका के विरुद्ध गैर-टैरिफ प्रतिवादों को निलंबित या रद्द करने के लिए आवश्यक कदम उठाना जारी रखेगा।

ट्रंप ने अपने 'ट्रुथ सोशल' मंच पर पोस्ट किया कि उन्होंने विस्तार के लिए कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किए हैं और समझौते की अन्य सभी बातें जस की तस रहेंगी। चीन के साथ व्यापारिक समझौते की 90 दिन की पिछली समय सीमा मंगलवार रात 12 बजकर एक मिनट पर खत्म होने वाली थी। अगर ऐसा होता, तो अमेरिका चीन से होने वाले आयात पर पहले से जारी 30 प्रतिशत के उच्च करों को और बढ़ा सकता था और चीन अमेरिकी निर्यात पर जवाबी शुल्क बढ़ाकर इसका जवाब दे सकता था।

समझौते की अवधि बढ़ाने से दोनों देशों को अपने मतभेदों को सुलझाने का समय मिल गया है, जिससे संभवतः इस साल के अंत में ट्रंप और चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग के बीच शिखर सम्मेलन का रास्ता साफ हो गया है। वहीं, चीन के साथ व्यापार करने वाली अमेरिकी कंपनियों ने भी इसका स्वागत किया है। 'यूएस-चाइना बिजनेस काउंसिल' के अध्यक्ष सीन स्टीन ने कहा कि दोनों सरकारों को व्यापार समझौते पर बातचीत के लिए और समय मिलना काफी अहम है। उन्होंने कहा कि अमेरिकी कारोबारियों को उम्मीद है कि इससे चीन में उनकी बाजार पहुंच में सुधार होगा।

पेंटागन के पूर्व अधिकारी ने ट्रंप को बड़बोला बताया

वाशिंगटन। अमेरिकी रक्षा मंत्रालय पेंटागन के एक पूर्व अधिकारी ने भारत पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगाने और ट्रंप के उस हालिया बयान की आलोचना की है जिसमें उन्होंने कहा था कि भारत पर टैरिफ लगाने से रूस की अर्थव्यवस्था को तगड़ा झटका लगा है। पेंटागन के पूर्व अधिकारी ने ट्रंप के इस कदम की निंदा करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने देश के अधिकारों के लिए खड़े होने के लिए इतिहास में दर्ज होंगे और अमेरिका यह सीखेगा कि वह भारत का कोई नुकसान नहीं कर सकता। ट्रंप ने अपनी पारस्परिक आयात शुल्क नीतियों की सफलता का बखान करते हुए कहा था कि रूसी तेल खरीद को लेकर भारत पर लगाये गए भारी प्रतिबंधों ने रूस को बड़ा झटका दिया है। कई देशों पर अमेरिकी आयात शुल्क लगाने से उत्पन्न वैश्विक दबाव से रूस की अर्थव्यवस्था पर भारी असर पड़ा है जिनमें से कई देश रूसी ऊर्जा और हथियारों के शीर्ष खरीदार हैं।

ईयू नेताओं की यूरोप के सुरक्षा हितों की रक्षा की अपील

ब्रसेल्स। यूरोपीय संघ (ईयू) के नेताओं ने मंगलवार को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से अपील की कि वह इस सप्ताह अपने रूसी समकक्ष व्लादिमीर पुतिन के साथ यूक्रेन में युद्ध को लेकर होने वाली अहम बैठक में उनके सुरक्षा हितों की रक्षा करें। यूरोपीय देश इस शुक्रवार होने वाली बैठक में अपनी भूमिका सुनिश्चित करना चाहते हैं, लेकिन उन्हें इस बैठक से बाहर रखा गया है। अभी यह भी स्पष्ट नहीं है कि यूक्रेन इसमें शामिल होगा या नहीं। ट्रंप ने कहा है कि वह देखना चाहते हैं कि पुतिन युद्ध खत्म करने को लेकर गंभीर हैं या नहीं। यह युद्ध अब चौथे वर्ष में प्रवेश कर चुका है। हालांकि, ट्रंप ने यह कहकर यूरोप में अमेरिकी सहयोगियों को निराश किया है, कि यूक्रेन को रूस के कब्जे वाले कुछ क्षेत्रों को छोड़ना होगा।

तिरंगा यात्रा

स्वतंत्रता दिवस नजदीक आने के साथ देश भर में देशभक्ति को प्रदर्शन करने वाले कार्यक्रम होने लगे हैं। राजस्थान के बीकानेर में बीएसफ के जवानों ने मंगलवार को तिरंगा यात्रा निकाली और फिर नारेबाजी करते हुए तिरंगे लहराए। एजेंसी

बब्बर खालसा इंटरनेशनल के आतंकी नेटवर्क का भंडाफोड़, पांच गिरफ्तार

चंडीगढ़, एजेंसी

- स्वतंत्रता दिवस पर हमले करने की दी गई थी जिम्मेदारी

पंजाब पुलिस ने मंगलवार को दावा किया कि उसने पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई समर्थित बब्बर खालसा इंटरनेशनल के आतंकी नेटवर्क का पर्दाफाश करते हुए राजस्थान से पांच लोगों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों में से एक को जब बरामदगी के लिए ले जाया जा रहा था तभी उसकी पुलिस से मुठभेड़ हो गई जिसमें वह पुलिस की जवाबी कार्रवाई में घायल हो गया। पुलिस महानिदेशक गौरव यादव ने कहा कि बीकेआई के इस आंतकी मॉड्यूल ने शहीद भगत सिंह (एसबीएस) नगर में एक शराब की दुकान पर हमले की साजिश रची थी और इन्हें स्वतंत्रता दिवस के दिन ऐसे ही हमलों का काम भी दिया गया था।

पुलिस ने उनके पास से एक हथगोला और एक .30 बोर की पिस्तौल, दो कारतूस और .30 बोर के दो खाली खोखे बरामद किए। यादव ने 'एक्स' पर पोस्ट कर कहा, पाकिस्तान के आईएसआई समर्थित आतंकी नेटवर्क के खिलाफ बड़ी कामयाबी में जालंधर की 'काउंटर इंटेलिजेंस' ने एसबीएस नगर पुलिस के साथ मिलकर बीकेआई के आतंकी नेटवर्क का पर्दाफाश किया। यह आतंकी नेटवर्क पाकिस्तान स्थित बीकेआई के हरविंदर रिंदा के इशारे पर विदेशी आकाओं मनु अगवान, गोपी नवाशहरिया और जीशान अख्तर द्वारा संचालित किया जा रहा था। उन्होंने कहा, राजस्थान के टोंक और जयपुर जिलों से पांच गुर्गों को गिरफ्तार किया गया और उनकी भविष्य के हमलों की साजिश को नाकाम कर दिया। डीजीपी के अनुसार, आरोपियों को विदेश स्थित जीशान अख्तर और बब्बर खालसा इंटरनेशनल के सरगना मनु अगवान से सीधे निर्देश मिल रहे थे।

दलाई लामा से मिलने पर चेक राष्ट्रपति के साथ चीन के सभी संबंध निलंबित

बीजिंग, एजेंसी

- राजनयिक विरोध भी दर्ज कराया, कहा- ये राजनीतिक प्रतिबद्धताओं का उल्लंघन

चीन ने मंगलवार को कहा कि उसने तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा से हाल में मुलाकात के कारण वह चेक गणराज्य के राष्ट्रपति पेत्र पावेल के साथ सभी प्रकार के संबंध समाप्त करने का निर्णय लिया है।

चीन के विदेश मंत्रालय ने यह भी कहा कि पावेल और दलाई लामा की मुलाकात को लेकर बीजिंग ने चेक गणराज्य के समक्ष राजनयिक विरोध दर्ज कराया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने पावेल की मुलाकात पर कहा, चीन के बार-बार विरोध और कड़े ऐतराज़ की अवहेलना करते हुए चेक राष्ट्रपति पेत्र पावेल भारत गए और दलाई लामा से मुलाकात की। प्रवक्ता ने मंत्रालय की आधिकारिक वेबसाइट पर कहा, यह चेक सरकार द्वारा चीन सरकार के साथ की गई राजनीतिक प्रतिबद्धताओं का गंभीर उल्लंघन है और चीन की संप्रभुता तथा क्षेत्रीय अखंडता को नुकसान पहुंचाता है।

प्रवक्ता ने कहा, चीन इस पर कड़ी निंदा करता है और इस संबंध में चेक पक्ष के समक्ष कड़ा विरोध दर्ज कराया है। पावेल की इस उकसावे भरी कार्रवाई की गंभीरता को देखते हुए चीन ने उनके साथ सभी संबंध समाप्त करने का निर्णय लिया है।

बिलावल की घुड़की: युद्ध के लिए मजबूर किया तो पीछे नहीं हटेंगे

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पूर्व विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो-जरदारी ने कहा है कि सिंधु जल संधि को स्थगित करने का भारत का फैसला सिंधु घाटी सभ्यता और संस्कृति पर हमला है।

बिलावल ने सोमवार को सिंधी संत शाह अब्दुल लतीफ भिटाई की दरगाह पर तीन-दिवसीय वार्षिक उत्सव के समापन समारोह में यह भी कहा कि पाकिस्तान हमेशा शांति की वकालत करता है, लेकिन अगर भारत उसे युद्ध के लिए मजबूर करता है, तो देश पीछे नहीं हटेगा। उन्होंने कहा, अगर युद्ध हुआ तो शाह अब्दुल लतीफ भिटाई की धरती से हम मोदी सरकार को संदेश देंगे कि हम पीछे नहीं हटेंगे, हम झुकेंगे नहीं और अगर आपने सिंधु नदी पर हमला करने की हिम्मत की तो पाकिस्तान के हर प्रांत के लोग आपका मुकाबला करने के लिए तैयार रहेंगे।

जम्मू-कश्मीर: सेना का सिरदर्द बने बेडरूम जिहादी

श्रीनगर, एजेंसी

- घर बैठे सोशल मीडिया पर अफवाहें फैलाकर भड़का रहे हैं युवाओं को

जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा एजेंसियां 'बेडरूम जिहादियों' के रूप में एक नए और प्रच्छन्न खतरे से जूझ रही हैं। ये वे लोग हैं जो अपने घरों की सुरक्षित चारदीवारी में रहकर सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर गलत सूचना फैलाते हैं और सांप्रदायिक तनाव भड़काते हैं।

अधिकारियों ने कहा कि इस प्रकार का शत्रु पारंपरिक सशस्त्र आतंकवादियों से बहुत अलग है और क्षेत्र को अस्थिर करने के लिए सीमा पार से जारी पेचीदा प्रयासों के केंद्र में है। इस संबंध में एक गहन जांच में विभिन्न सोशल मीडिया हैंडल के एक नेटवर्क का पता चला है, जिसके बारे में माना जाता है कि यह पाकिस्तान में आतंकवादी समूहों और उनके समर्थकों द्वारा नियंत्रित है, जो स्थानीय डिजिटल क्षेत्र में सक्रिय रूप से घुसपैठ कर रहे हैं तथा कश्मीर घाटी में सांप्रदायिक तनाव और अशांति पैदा करने के उद्देश्य से भड़काऊ सामग्री एवं दुष्प्रचार का प्रसार कर रहे हैं।

एक अधिकारी ने कहा, वर्षों तक सशस्त्र आतंकवादियों से लड़ने के बाद सुरक्षा एजेंसियां इन छिपे दुश्मन का सामना कर रही हैं, ये नए युग के जिहादी कंप्यूटर और स्मार्टफोन का उपयोग करके कहीं से भी युद्ध छेड़ते हैं, अफवाहें फैलाते हैं और युवाओं को प्रभावित करते हैं। यह प्रवृत्ति 2017 में उभरी थी, लेकिन 2019 में जम्मू-कश्मीर का विशेष दर्जा समाप्त किए जाने के बाद इंटरनेट पर प्रतिबंध लगाने से समाप्त हो गई।

पाकिस्तान से तार जुड़े होने के मिले हैं सबूत

अधिकारियों ने बताया कि पिछले वर्ष विधानसभा चुनाव के सफलतापूर्वक संपन्न होने के बाद बेडरूम जिहादी फिर से सामने आए हैं, जिनका उद्देश्य संभवतः निर्वाचित सरकार को अस्थिर करना और अशांति की भावना पैदा करना है। सुरक्षा एजेंसियों ने सीमा पार से सक्रिय आतंकवादी समूहों और उनके समर्थकों द्वारा सांप्रदायिक संघर्ष भड़काने और क्षेत्र को अस्थिर करने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग किए जाने के एक सोचे-समझे प्रयास का खुलासा किया है। कई हफ्तों से जारी इस जांच में हजारों सोशल मीडिया पोस्ट, टिप्पणियों और संदेशों की जांच की गई। इसके विश्लेषण से उनके पाकिस्तान में बैठे आकाओं से सीधे संबंध के ठोस सबूत मिले।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 13 अगस्त, बुधवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास-भाद्रपद, पक्ष-कृष्ण पक्ष, चतुर्थी 06 .35 तक तत्पश्चात पंचमी।

आज का पंचांग

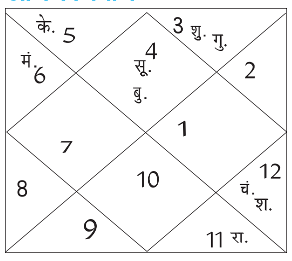

दिशाशूल- उत्तर, **ऋतु**- वर्षा।
चन्द्रबल-वृषभ, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, मीन।

ताराबल-अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती। नक्षत्र-उत्तर भाद्रपद 10 .32 तत्पश्चात रेवती।

मेष - आज कारोबार में काम का दबाव बढ़ सकता है। घर में धन को लेकर झगड़ा हो सकता है। अपने प्रयासों को किसी से व्यक्त न करें। अनावश्यक बातों को लेकर क्रोध न करें। कुछ समय आत्ममूल्यांकन के लिए अवश्य निकालें।

वृष - आज नजदीकी रिश्तेदारों के साथ संबंध मधुर रहेंगे। कारोबारी लोगों को बिजनेस टूर पर जाना पड़ सकता है। आपकी सलाह से लोग प्रभावित रहेंगे। पुरानी किसी योजना के माध्यम से आपको आर्थिक लाभ हो सकता है। विवादास्पद मामलों में छुटकारा मिलेगा।

मिथुन - आज कार्यक्षेत्र की बाधाएं दूर हो सकती हैं। रुके कार्यों को निपटाने के लिए काफी अच्छा समय है। अपनी उपलब्धियों से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक मुद्दे पर लाभ-हानि देखने से बचें। परिजनों की आवश्यकताओं का खास ध्यान रखें।

कर्क - आज परिवार में धार्मिक आयोजन हो सकता है। दूसरों की आर्थिक मदद करने से बचें। मन पसंद भोजन का आनंद उठायेंगे। लंबी दूरी की यात्रा हो सकती है। कुछ लोग आपके प्रति ईर्ष्या की भावना रख सकते हैं। घुटनों और कूल्हों में परेशानी हो सकती है।

सिंह - आज कार्यक्षेत्र में सहयोगियों से नुकसान उठाना पड़ सकता है। राजनीति से जुड़े लोगों को अपने व्यवहार में परिवर्तन लाना पड़ेगा। जीवनसाथी की इच्छाओं और भावनाओं का ध्यान रखें। स्वास्थ्य को लेकर लापरवाही न करें। महिलाएं घर के कार्यों में व्यस्त रहेंगी।

कन्या - आज उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाना चाह रहे हैं तो उसके लिए परिस्थितियां अनुकूल हो सकती हैं। आपके विचारों में रचनात्मकता रहेगी। साझेदारी वाले व्यापार में आपको धन लाभ हो सकता है। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें।

तुला - आज रिश्तेदारों के साथ संबंध अच्छे रखने की आवश्यकता है। कारोबार की गति थोड़ी धीमी रहेगी। लेकिन आज फिर भी आपको सार्थक लाभ हो जायेगा। साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें। करियर में बदलाव को लेकर गम्भीर हो सकते हैं।

वृश्चिक - आज परिवार में सुख-शांति रहेगी। अनावश्यक कार्यों में आप धन बर्बाद कर सकते हैं। काम के तनाव को अपने ऊपर हावी न होने दें। अपने निर्णयों को दूसरों के ऊपर न थोपें। संतान अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करेंगे। त्वचा में खुजली जैसी समस्या हो सकती है।

धनु - आज अपनी कार्यप्रणाली में सुधार कर सकते हैं। पर्यटन से जुड़े व्यवसायियों को लाभ मिलेगा। जीवनसाथी से सलाह लेकर कार्य प्रारम्भ करना विशेष रूप से लाभकारी रहेगा। बुजुर्गों से आज आपको काफी कुछ सीखने को मिलेगा।

मकर - आज नौकरी में आपका प्रदर्शन काफी अच्छा रहेगा। अति आत्मविश्वास के कारण आपको व्यवसाय में हानि उठानी पड़ सकती है। अपनी गलतियों से सीखने की आदत विकसित करें। प्रेमीजन के प्रति मन में विश्वास कम हो सकता है।

कुंभ - आज घर में शुभ कार्य हो सकते हैं। उधार दिया हुआ धन वापस मिल सकता है। लम्बित कानूनी मामले आपके पक्ष में हल हो सकते हैं। आपके पास समय की काफी उपलब्धता रहेगी। किसी पर अंधविश्वास न करें। सहकर्मी आपका मजाक उड़ा सकते हैं।

मीन - आज कार्यक्षेत्र में आपका दबदबा मजबूत होगा। आप कुछ नया और रचनात्मक करने की योजना बनायेंगे। जीवनसाथी प्रत्येक मुद्दे पर आपको समर्थन देगा। किसी बड़े प्रभावी व्यक्ति से आपके संबंध मधुर हो सकते हैं। राजनीतिक मुद्दों में आप रुचि लेंगे।

सुडोकू -68

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

		9	3	2				7
				9			4	
	8		5			9		
7		5			9	1		
								5
		2	7			4		9
		7		5	6		9	
5	6			7				
				4	8	7		

सुडोकू - 67 का हल

3	4	6	2	8	9	5	1	7
5	2	7	1	3	6	8	4	9
9	8	1	4	5	7	3	6	2
7	9	8	3	2	1	4	5	6
6	5	2	7	4	8	9	3	1
4	1	3	6	9	5	7	2	8
1	3	4	9	7	2	6	8	5
2	7	5	8	6	4	1	9	3
8	6	9	5	1	3	2	7	4

> सुब्रतो कप में श्रीलंका और नेपाल की अंतर्राष्ट्रीय टीमें भाग लेंगी, जो टूर्नामेंट की वैश्विक पहुंच और बढ़ते कद के बारे में बहुत कुछ कहता है। टूर्नामेंट के दौरान जर्मनी में प्रशिक्षण के लिए सात खिलाड़ियों का चयन किया जाएगा।
> -एयर मार्शल एस शिवकुमार

स्टेडियम

अमृत विचार

www.amritvichar.com

कानपुर नगर, बुधवार, 13 अगस्त 2025

हाईलाइट

नई दिल्ली में सुब्रतो कप फुटबॉल टूर्नामेंट के 64वें संस्करण के लिए आयोजित एक प्रेस वार्ता के दौरान फुटबॉलर दलिमा छिब्बर (मध्य)।

सुब्रतो कप फुटबॉल टूर्नामेंट 19 से

नई दिल्ली : चार अंतर्राष्ट्रीय टीम सहित कुल 106 टीम 19 अगस्त से यहां शुरू हो रहे 64वें सुब्रतो कप फुटबॉल टूर्नामेंट में तीन आयु वर्ग में खिताब के लिए चुनौती पेश करेंगी। इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट का आयेजन जूनियर लड़कों (अंडर-17), जूनियर लड़कियों (अंडर-17) और सब जूनियर (अंडर-15) वर्ग में किया जाएगा। वायु सेना खेल नियंत्रण बोर्ड के तत्वावधान में सुब्रतो मुखर्जी स्पोर्ट्स एजुकेशन सोसइटी द्वारा आयोजित इस टूर्नामेंट का आयोजन दिल्ली-एनसीआर और बेंगलुरु के विभिन्न स्थलों पर 25 सितंबर तक किया जाएगा। एयर मार्शल एस शिवकुमार ने संवाददाताओं से कहा इसमें श्रीलंका और नेपाल की अंतर्राष्ट्रीय टीम भाग लेंगी जो टूर्नामेंट की वैश्विक पहुंच और बढ़ते कद के बारे में बहुत कुछ कहता है। भारतीय महिला फुटबॉलर दालिमा छिब्बर इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं।

सितंबर तक अध्यक्ष बने रहेंगे बिन्नी

बेंगलुरु : पूर्व भारतीय ऑलराउंडर रोजर बिन्नी पिछले महीने 70 बरस के हो गए लेकिन मंगलवार को संसद में राष्ट्रीय खेल विधेयक के पारित होने के बाद 1983 विश्व कप में भारत की खिताबी जीत में अहम भूमिका निभाने वाला यह दिग्गज कम से कम सितंबर में भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) की वार्षिक आम बैठक (एजीएम) तक बीसीसीआई अध्यक्ष के रूप में काम करता रहेगा। अगर बीसीसीआई की राज्य इकाइयों के सदस्य सहमत होते हैं तो बिन्नी 75 वर्ष की आयु तक पद पर बने रह सकते हैं जो अब राष्ट्रीय खेल महासंघों के पदाधिकारियों के लिए कट ऑफ आयु है।

राष्ट्रमंडल खेलों की दावेदारी को मिलेगी मंजूरी

नई दिल्ली : भारत की 2030 राष्ट्रमंडल खेलों के लिए बोली को बुधवार को भारतीय ओलंपिक संघ की विशेष आम बैठक (एसजीएम) के दौरान औपचारिक मंजूरी मिल जाएगी क्योंकि देश इस बहु-खेल आयोजन की मेजबानी का मजबूत दावेदार बनकर उभरा है। आईओए मुख्यालय में एसजीएम का मुख्य एजेंडा 'भारत में 2030 राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी के लिए राष्ट्रमंडल खेल को बोली प्रस्तुत करने की मंजूरी और इससे संबंधित अन्य कार्य' है।

शिवम सेमीफाइनल में, कोठारी हारे

चेंगदू (चीन) : भारत के शीर्ष हेबॉल खिलाड़ी शिवम अरोड़ा ने मंगलवार को यहां विश्व खेलों के सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया है। 'हेबॉल' स्नूकर और पूल दोनों का मिश्रण है। यह अनोखा क्यू खेल 'वर्ल्ड पूल-बिलियर्ड एसोसिएशन (डब्ल्यूपीए)' के नियमों का पालन करता है। विश्व रैंकिंग में पांचवें स्थान पर काबिज अरोड़ा ने रोमांचक मैच में हांगकांग चीन के यिप किन लिंग को 5-4 से हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई। अंतिम चार में उनके सामने झांग ताइयी की चुनौती होगी। पुरुषों के स्नूकर के क्वार्टर फाइनल में राष्ट्रीय चैंपियन सौरव कोठारी को हार का सामना करना पड़ा। चीन के जियाओ गुओडोंग ने कोठारी को 2-0 (67-2, 87 (69) -1) से हराया।

बेंगलुरु पर मेजबानी गंवाने का खतरा

बेंगलुरु : एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में होने वाले आईसीसी महिला एकदिवसीय विश्व कप मैचों का भविष्य अनिश्चित हो गया है क्योंकि मेजबान कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ (केएससीए) 10 अगस्त तक पुलिस की मंजूरी नहीं ले सका है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने केएससीए को पिछले शनिवार तक आवश्यक मंजूरी प्राप्त करने के लिए सूचित किया था लेकिन स्थानीय पुलिस अधिकारियों के अनुसार मंगलवार तक यह प्रक्रिया पूरी नहीं हुई है।

बर्मिंघम में लगाया दोहरा शतक हमेशा याद रहेगा : गिल

- आईसीसी ने शुभमन को चुना महीने का सर्वश्रेष्ठ पुरुष खिलाड़ी

दुबई, एजेंसी

इंग्लैंड के खिलाफ हाल ही में समाप्त हुई पांच टेस्ट मैचों की श्रृंखला में 754 रन बनाने वाले भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने मंगलवार को आईसीसी का महीने (जुलाई 2025) का सर्वश्रेष्ठ पुरुष खिलाड़ी चुने जाने के बाद कहा कि एजबेस्टन में टीम की जीत में योगदान देने वाला उनका दोहरा शतक उन्हें हमेशा याद रहेगा। गिल ने इस दौरे पर युवा खिलाड़ियों से सजी भारतीय टीम को कप्तान और बल्लेबाज के तौर पर काफी प्रेरित किया।

उन्होंने पांच मैचों की इस श्रृंखला में चार शतक लगाए जिससे विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे दिग्गजों की गैरमौजूदगी में भी भारतीय टीम इंग्लैंड के खिलाफ श्रृंखला को 2-2 से बराबर करने में सफल रही। गिल ने इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स और दक्षिण अफ्रीका के हरफनमौला वियन मुल्डर को पछाड़कर यह पुरस्कार जीता। गिल ने उम्मीद जताई कि वह आने वाले सत्र में भी अपनी इस लय को जारी रखेंगे। गिल ने आईसीसी से जारी विज्ञप्ति में कहा जुलाई महीने का आईसीसी प्लेयर ऑफ द मंथ चुने जाने पर बहुत अच्छा लग रहा है। इस बार इसका महत्त्व और भी ज्यादा है, क्योंकि यह कप्तान के रूप में मेरी पहली टेस्ट श्रृंखला में मेरे प्रदर्शन के लिए मिला है। बर्मिंघम में लगाया गया दोहरा शतक ऐसी उपलब्धि है जिसे मैं हमेशा संजोकर रखूंगा और यह इंग्लैंड के मेरे दौरे के खास पलों में से एक होगा। इस 25 साल के खिलाड़ी ने कहा इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज मेरे लिए कप्तान के तौर पर सीखने का अनुभव रही और दोनों टीमों की तरफ से कुछ बेहतरीन प्रदर्शन देखने को मिले।

मुझे यकीन है कि दोनों टीमों के खिलाड़ी लंबे समय तक याद रखेंगे। उन्होंने आने वाली सीरीज में इस लय को जारी रखने की उम्मीद जताते हुए कहा मैं इस पुरस्कार के लिए मुझे चुनने के लिए जूरी और इस रोमांचक श्रृंखला के दौरान मेरे साथ रहे मेरे साथियों को धन्यवाद देना चाहता हूं। मैं अपनी फॉर्म जारी रखने और देश के लिए और अधिक सम्मान हासिल करने की उम्मीद करता हूं। गिल आईसीसी के महीने के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार चार बार जीतने वाले पहले पुरुष खिलाड़ी बन गए हैं। उन्होंने इंग्लैंड दौरे पर जुलाई में खेले गए तीन टेस्ट मैचों में 94.50 की औसत से 567 रन (कुल 754 रन में से) बनाए थे। वह इससे पहले जानवरी 2023, सितंबर 2023 और फरवरी 2025 में इस खिताब को अपने नाम कर चुके है। शुभमनने इस दौरान बर्मिंघम में खेले गए दूसरे टेस्ट मैच में कुल 430 रन (पहली पारी में 269 और दूसरी पारी में 161 रन बनाए। यह ग्राहम गूच (456 रन) के बाद एक टेस्ट सीरीज में किसी बल्लेबाज के द्वारा बनाया गया दूसरा सबसे बड़ा स्कोर है।

महिला वर्ग में सोफिया ने बाजी मारी

- महिला वर्ग में इंग्लैंड की सोफिया डंकले को जुलाई महीने की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया। डंकले ने इस सम्मान के लिए अपनी टीम की साथी सोफी एक्लेस्टोन और आयरलैंड की कप्तान गैबी लुईस को पीछे छोड़ा। उन्होंने इस दौरान वनडे और टी20 दोनों में शानदार प्रदर्शन किया। भारत के खिलाफ घरेलू मैदान पर दोनों प्रारूप के सात मैच खेले, जिसमें तीन वनडे और चार टी20 में कुल 270 रन बनाए। डंकले टी20 श्रृंखला में इंग्लैंड की तरफ से सबसे ज्यादा रन बनाने वाली खिलाड़ी थीं और साउथम्पटन में पहले वनडे में 92 गेंदों में शानदार 83 रन बनाए थे।

दीप्ति टी20 अंतर्राष्ट्रीय रैंकिंग में दूसरे स्थान पर

दुबई : भारत की दीप्ति शर्मा आईसीसी महिला टी20 की नवीनतम रैंकिंग में गेदबाजों की सूची में दूसरे स्थान पर पहुंच गईं है। वहीं सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना बल्लेबाजों के बीच शीर्ष से दूसरे स्थान पर खिसक गईं।

दीप्ति पाकिस्तान की सादिया इकबाल के साथ 732 रेटिंग अंक के साथ संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर है। सादिया रैंकिंग में पहले स्थान से दूसरे स्थान पर खिसक गई जबकि ऑस्ट्रेलिया की एनाबेल सदरलैंड चार रेटिंग अंकों की बढ़त के साथ पहली बार शीर्ष रैंकिंग की टी20 अंतर्राष्ट्रीय गेंदबाज बनने में सफल रही। सादिया ने आयरलैंड के खिलाफ श्रृंखला में सिर्फ तीन विकेट लेने के बाद रेटिंग अंक गवां दिए। पाकिस्तान महिला टीम इस श्रृंखला को 1-2 से हार गई थी।

सैमसन अगर पहले विकेटकीपर तो फिर दूसरा कौन - जितेश, जुरेल या राहुल?

एशिया कप के लिए भारतीय टीम का जल्द होगा एलान, संजू का चयन माना जा रहा तय

नई दिल्ली, एजेंसी

एशिया कप 2025 में अब ज्यादा दिन नहीं बचे हैं और इसके लिए भारतीय टीम का ऐलान भी जल्द ही होने वाला है। एशिया कप का यह संस्करण टी20 फॉर्मेट में होने जा रहा है क्योंकि अगले साल टी20 विश्व कप भी प्रस्तावित है।

ऐसे में कई तरह के सवाल सभी के जेहन में चल रहे हैं कि भारतीय दल में कौन-कौन होगा? सलामी बल्लेबाज कौन होंगे, तेज गेंदबाज़ों में किसको-किसको जगह मिलेगी, स्पिनर्स कौन-कौन रहने वाले हैं, ऑलराउंडर्स कौन होंगे और विकेटकीपर कितने रहेंगे और कौन कौन? लिहाजा इसी कड़ी में आज हम विकेटकीपर की बात करने जा रहे हैं, और जानने की कोशिश करते हैं कि मौजूदा फॉर्म, टीम संयोजन और आंकड़ों के हिसाब से किसका खेलना तय है तो किसे मिल सकता है वापसी का मौका। संजू सैमसन (करीब-करीब तय) इस फेहरिस्त में पहला नाम आता है संजू सैमसन का, जिनका यूएई जाना करीब-करीब तय माना जा रहा है।

सैमसन पिछले कुछ दिनों से मौजूदा विश्व चैंपियन भारतीय टी20 टीम के प्रमुख सदस्य हैं। सैमसन ने वैसे तो भारत के लिए 42 टी20 मैचों में 25.32 की औसत और 152.32 के स्ट्राइक रेट से 861 रन बनाए हैं जिसमें तीन शतक भी शामिल हैं। सैमसन ने भारत के लिए अपना पहला टी20 एक दशक पहले यानी 2015 में ही खेल लिया था, लेकिन उनकी अनिरंतरता उनका स्थान पक्का नहीं कर पा रही थी। हालांकि अब ऐसा नहीं है पिछली 10 टी20 पारियों में उनका प्रदर्शन अद्भुत रहा है, सैमसन ने इस दौरान 42 की औसत और 188.05 के बेमिसाल स्ट्राइक रेट से 378 रन बनाए हैं। यानी उनके टी20 के करीब 43 फ़ीसदी रन पिछली 10 पारियों में ही आए हैं और टी20 के सभी शतक भी इसी दौरान आए हैं। सैमसन के इन तीन शतकों में दो दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ उन्हीं के घर में आए थे जबकि एक बांग्लादेश के खिलाफ हैदराबाद में आया था। सैमसन के लिए आईपीएल 2025 मिला जुला रहा था, चोट से परेशान सैमसन ने इस सीजन राजस्थान रॉयल्स (आरआर) के लिए नौ ही मुकाबले खेले थे जिसमें एक अर्धशतक के साथ उन्होंने 285 रन बनाए थे। सैमसन टी20में न सिर्फ एक विकेटकीपर हैं बल्कि सलामी बल्लेबाज की भूमिका बेहतरीन अंदाज में अदा करते हैं, लिहाजा उनका एशिया कप में जाना लगभग तय ही है। अब सवाल यह है कि सैमसन अगर एशिया कप के लिए विकेटकीपर की पहली पसंद हैं तो उनके बैकअप के तौर पर दूसरा विकेटकीपर कौन होगा? वैसे तो अगर ऋषभ पंत चोटिल न हुए होते तो भारतीय दल का हिस्सा बिल्कुल हो सकते थे, तब शायद हम यह बात कर रहे होते कि विकेट कीपर की पहली पसंद पंत होंगे या सैमसन। ऋषभ पंत अब वह चोट की वजह से उपलब्ध नहीं है।

संजू सैमसन।

बैकअप विकेटकीपर के सवाल का जवाब हो सकता है बेहद मजेदार

- बैकअप विकेटकीपर के सवाल का जवाब बेहद मजेदार हो सकता है क्योंकि विकल्प काफी हैं और सभी एक से बढ़कर एक। जिसमें पहला नाम आता है **जितेश शर्मा** का, वह विकेटकीपर जिन्हें भारत का भावी बेस्ट फिनिशर विकेटकीपर माना जाने लगा था। जितेश ने आईपीएल में कुछ बेहतरीन पारियां खेली थीं जिसका इनाम उन्हें टीम इंडिया की जर्सी के तौर पर मिला था। जितेश ने भारत के लिए नौ टी20 खेले और इनमें रन सिर्फ 100 बनाए लेकिन उनकी भूमिका अलग थी और नीचे आकर तेज तर्रार पारी खेलने की ज़िम्मेदारी थी। जितेश ने 147 .05 के स्ट्राइक रेट से वह भूमिका निभाई भी लेकिन शायद 14 .28 की औसत की वजह से वह चयनकर्ताओं को आगे आकर्षित नहीं कर पाए। जितेश ने भारत के लिए आखिरी टी20 अफगानिस्तान के खिलाफ जनवरी, 2024 में खेला था। लेकिन आईपीएल 2025 में उन्होंने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) को चैंपियन बनाने में अहम योगदान दिया था।
- **ध्रुव जुरेल** हालांकि जुरेल ने भारत के लिए चार टी20 खेले हैं लेकिन इनमें प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा है, आख़िरी बार वह इंग्लैंड के खिलाफ इसी साल की शुरुआत में खेलते हुए नजर आए थे। लेकिन अगर आईपीएल 2025 की बात करें तो वहां उनका प्रदर्शन प्रभावित करने वाला जरूर रहा था, उन्होंनेआरआर के लिए 14 मैचों 37 की औसत और 156 .33 के स्ट्राइक रेट से 333 रन बनाए थे जिसमें दो अर्धशतक भी शामिल थे।
- **ईशान किशन,** एक और विकेटकीपर जिसने बहुत ही कम समय में भारतीय टीम में करीब-करीब अपना स्थान पक्का कर लिया था। लेकिन अचानक ही खराब फ़ॉर्म और टीम संयोजन में फिट न बैठने की वजह से वह भारतीय सेटअप से ही बाहर हो गए। बाएं हाथ के इस आक्रामक बल्लेबाज की खासियत है पावरप्ले का लाजवाब इस्तेमाल करना, सैमसन की ही तरह किशन को भी सलामी बल्लेबाजी बेहद रास आती है। और इसी कारण 32 टी20I खेलने के बावजूद वह कभी भी टीम के नियमित सदस्य नहीं हो पाए। किशन ने भारत के लिए 32 मैचों में 25 .67 की औसत और 124 .37 के स्ट्राइक रेट से 796 रन बनाए हैं जिसमें छह अर्धशतक भी शामिल है।
- **केएल राहुल** की, जिन्होंने हाल ही में इंग्लैंड दौरे पर बतौर सलामी बल्लेबाज दो शतक के साथ 532 रन बनाए थे। सफेद गेंद की बात करें तो राहुल वनडे में भी टीम इंडिया के अभिन्न अंग हैं और बतौर विकेटकीपर वह मध्यक्रम में खेलते हैं। भारत के लिए राहुल ने वैसे तो 72 टी20 खेले हैं जिसमें दो शतक और 22 अर्धशतक के साथ 2265 रन हैं। हालांकि बतौर विकेटकीपर राहुल टी20 में सिर्फ आठ मैच ही खेल पाए हैं, इस दौरान उन्होंने 43 .57 की औसत और 139 .26 के स्ट्राइक रेट से 305 रन बनाए हैं जिसमें तीन अर्धशतक भी है। राहुल के ऊपर भी इस फॉर्मेट में उनके स्ट्राइक रेट को लेकर आवाज उठती रही है, हालांकि आईपीएल 2025 में उन्होंने इस बात का जवाब अपने बल्ले से दिया था। राहुल की सबसे बड़ी खासियत है टीम के हिसाब से खुद को ढाल लेना, लिहाजा एशिया कप में वह सैमसन का बैकअप बन सकते हैं तो सलामी बल्लेबाजी भी कर सकते हैं। साथ ही साथ टीम मैनेजमेंट चाहे तो राहुल का इस्तेमाल वनडे की ही तरह टी20 में भी मध्यक्रम में करा सकती है।

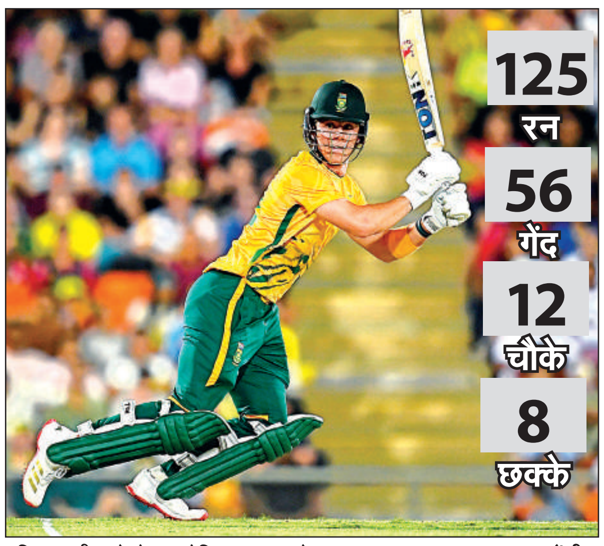

दक्षिण अफ्रीका के डेवाल्ड ब्रेविस शाट लगाते हुए। एजेंसी

ब्रेविस के धमाकेदार शतक से दक्षिण अफ्रीका जीता

- 56 गेंदों पर नाबाद 125 रनों की पारी खेल ऑस्ट्रेलिया से सीरीज 1-1 से बराबर की

डार्विन (ऑस्ट्रेलिया), एजेंसी

डेवाल्ड ब्रेविस के रिकॉर्ड टी20 शतक की मदद से दक्षिण अफ्रीका ने दूसरे टी20 अंतर्राष्ट्रीय में मंगलवार को 53 रन से जीत हासिल कर ऑस्ट्रेलिया के नौ मैचों के विजय अभियान पर रोक लगाते हुए तीन मैचों की सीरीज को 1-1 से बराबर कर लिया।

बाईस साल के ब्रेविस ने 56 गेंदों पर आठ छक्कों और 12 चौकों की मदद से नाबाद 125 रन की पारी खेली और फाफ डुप्लेसी के इस प्रारूप में 119 रनों के दक्षिण अफ्रीका के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया। डुप्लेसी ने 2015 में वेस्टइंडीज के खिलाफ दक्षिण अफ्रीका के लिए इस प्रारूप का सबसे बड़ा स्कोर बनाया था। ब्रेविस ने मैदान के चारों ओर बड़े शॉट की झड़ी लगा दी जिससे दक्षिण अफ्रीका ने पहले बल्लेबाजी का न्योता मिलने पर सात विकेट पर 218 रन बनाये। ऑस्ट्रेलिया की टीम टिम डेविड की 24 गेंद में 54 रन की आक्रामक पारी के बावजूद 17.4 ओवर में 165 रन पर आउट हो गयी। सीरीज के शुरुआती मैच में चार विकेट लेने वाले क्वेन मफाका ने एक बार प्रभावित करते हुए कैमरून ग्रीन (नौ), ग्लेन मैक्सवेल (16) और मिशेल ओवेन (आठ) जैसे खतरनाक बल्लेबाजों के विकेट चटकाये। दक्षिण अफ्रीका ने सातवें ओवर में 57 रन पर तीन विकेट गंवा दिये थे। इसमें मैक्सवेल ने कप्तान एडेन मारक्रम (18) और लुआन-ड्रे प्रीटोरियस (14) को पवेलियन की राह दिखाई।

ब्रेविस ने इसके बाद ट्रिस्टन स्टब्स के साथ चौथे विकेट के लिए 126 रन की ताबड़तोड़ साझेदारी के साथ मैच पर टीम का दबदबा कायम कर दिया। उन्हें 25 गेंद में अर्धशतक पूरा करने के बाद जीवनदान मिला जब मैक्सवेल की गेंद पर स्थानापन्न क्षेत्ररक्षक मैथ्यू कुहनेमान ने उनका कैच टपका दिया।

ब्रेविस ने इसके बाद बेहद आक्रामक तेवर दिखाते हुए मैक्सवेल, एडम जंपा, और जोश हेजलवुड की बखिया उधेड़ते हुए महज 16 गेंद के अंदर अगले 50 रन जोड़कर 41 गेंद में अपना शतक पूरा किया।

रोनाल्डो ने पार्टनर जॉर्जिना से सगाई की

वाशिंगटन, एजेंसी

स्टार फुटबॉलर क्रिस्टियानो रोनाल्डो और लंबे समय से उनकी पार्टनर रही जॉर्जिना रोड्रिग्स ने सगाई कर ली है। जॉर्जिना 31 साल की हैं। उन्होंने सोमवार को इंस्टाग्राम पर अपनी उंगली में एक बड़ी अंगूठी दिखाते हुए एक तस्वीर के साथ इस खुशखबरी की घोषणा की। जॉर्जिना ने तस्वीर के साथ स्पेनिश में कैप्शन में लिखा हां हमने सगाई कर ली है। यह मेरी जिंदगी का सबसे खूबसूरत पल है। जॉर्जिना और 40 वर्षीय रोनाल्डो की दो बेटियां हैं। उन्होंने रोनाल्डो के अन्य तीन बच्चों की परवरिश में भी मदद की है। जॉर्जिना ने 2022 में जुड़वां बच्चों को जन्म दिया था लेकिन उनमें से एक लड़के की मौत हो गई थी। रोनाल्डो की जॉर्जिना से 2016 में मुलाकात हुई थी जब वह मैड्रिड के एक स्टोर में काम करती थीं। रियाल मैड्रिड और मैनचेस्टर यूनाइटेड पूर्व स्टार रोनाल्डो अब सऊदी अरब में अल-नासर के लिए खेलते हैं।

रोहित शर्मा ने शुरू किया अभ्यास

मुंबई : भारतीय वनडे टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने मंगलवार को मुंबई के एक उपनगरीय सुविधा केंद्र में पूर्व राष्ट्रीय सहायक कोच अभिषेक नायर के साथ अभ्यास शुरू किया। इंग्लैंड में कम अनुभव वाली टेस्ट टीम की सफलता के बाद 50 ओवर के प्रारूप में भी युवाओं को तरजीह देने के मांग के बीच रोहित ने लगभग दो महीने के ब्रेक के बाद वापसी की।

रोहित ने इंग्लैंड के टेस्ट दौरे से पहले संन्यास की घोषणा कर दी थी और वह आईपीएल के बाद दो महीने के लिए खेल से दूर रहे। वह अब केवल एक प्रारूप के खिलाड़ी हैं। वह इंग्लैंड में परिवार के साथ छुट्टी पर थे और पिछले सप्ताह वापस आए। रोहित ने अपने करीबी दोस्त नायर के साथ जिम से एक इंस्टाग्राम स्टोरी पोस्ट की। नायर ने दिनेश कार्तिक, केएल राहुल, रिंकू सिंह और युवा बल्लेबाज अंगकृष रघुवंशी जैसे खिलाड़ियों के साथ भी काम किया है।

प्रशंसा | राष्ट्रीय खेल महासंघों की अध्यक्ष पीटी उषा ने कहा- यही समय की मांग है

सही दिशा में उठाया गया कदम है विधेयक

नई दिल्ली, एजेंसी

राष्ट्रीय खेल प्रशासन विधेयक का कानून बनने का मार्ग प्रशस्त होने पर देश के राष्ट्रीय खेल महासंघों (एनएफएस) और भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) की अध्यक्ष पीटी उषा ने मंगलवार को इस ऐतिहासिक नीति का स्वागत किया और इसे सही दिशा में उठाया गया एक कदम बताया क्योंकि भारत 2036 ओलंपिक की मेजबानी की दावेदारी की तैयारी कर रहा है।

लोकसभा और राज्यसभा दोनों सदनों से पारित होने के बाद यह विधेयक कानून बनने वाला है। इसका मकसद भारत के खेल प्रशासन में सुधार और मानकीकरण करना है, जिससे राष्ट्रीय खेल महासंघों (एनएसएफ) और भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) में सुशासन के लिए एक स्पष्ट ढांचा तैयार होगा। इस तरह भारत खेल प्रशासन को सुचारू करने के लिए औपचारिक कानून रखने वाले अमेरिका, ब्रिटेन, चीन और जापान जैसे देशों में शामिल हो जाएगा।

एनएफएस की अध्यक्ष पीटी उषा।

अखिल भारतीय टेनिस संघ (एआईटीए) के अंतरिम सचिव सुंदर अय्यर ने पीटीआई को बताया यह निश्चित रूप से अच्छा है क्योंकि इससे चीजें काफी स्पष्ट हो जाएंगी। सभी को नियमों और विनियमों के एक ही खाके का पालन करना होगा। इससे पहले अलग-अलग खेल संघों के लिए अलग-अलग नियम होते थे। अय्यर ने हालांकि कहा कि कार्यकारी समिति में सीटों को सीमित करना एक आदर्श स्थिति नहीं है। उन्होंने कहा भारत एक बड़ा देश है, इसलिए कार्यकारी समिति को 15 सदस्यों तक सीमित रखना मुश्किल होगा। इसमें से चार से पांच सदस्य असाधारण योग्यता वाले खिलाड़ियों और एथलीट आयोग के सदस्यों के पास चली जाएगी, इसलिए व्यावहारिक रूप से 36 राज्यों में से आप कार्यकारी समिति में केवल 10-11 सदस्य ही रख सकते हैं। यह बहुत मुश्किल है। इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए था, संख्या अधिक होनी चाहिए थी।

भारतीय ओलंपिक संघ की अध्यक्ष और राज्य सभा की मनोनित सदस्य पीटी उषा ने भी इस विधेयक का समर्थन करते हुए कहा कि कहा कि इससे दशकों से चला आ रहा ठहराव दूर होगा।

महत्वपूर्ण सुधार होंगे : मांडविया

- नई दिल्ली : खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने मंगलवार को कहा कि संसद के दोनों सदनों में राष्ट्रीय खेल प्रशासन विधेयक के पारित होने से भारत के खेल परिदृश्य में बदलाव आएगा और निर्णय प्रक्रिया खिलाड़ी केंद्रित होगी। लोकसभा से मंजूरी मिलने के एक दिन बाद राज्यसभा में विधेयक पारित होने के बाद पत्रकारों से बात करते हुए मांडविया ने कहा कि सरकार अब अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारत के प्रदर्शन में उल्लेखनीय सुधार सुनिश्चित करने के लिए पदक रणनीति बनाने पर ध्यान केंद्रित करेगी। मांडविया ने कहा इस सुधार से देश का खेल क्षेत्र बदलेगा। दुनिया के 20 देशों के पास खेल कानून हैं और भारत अब उनके बराबर होगा।